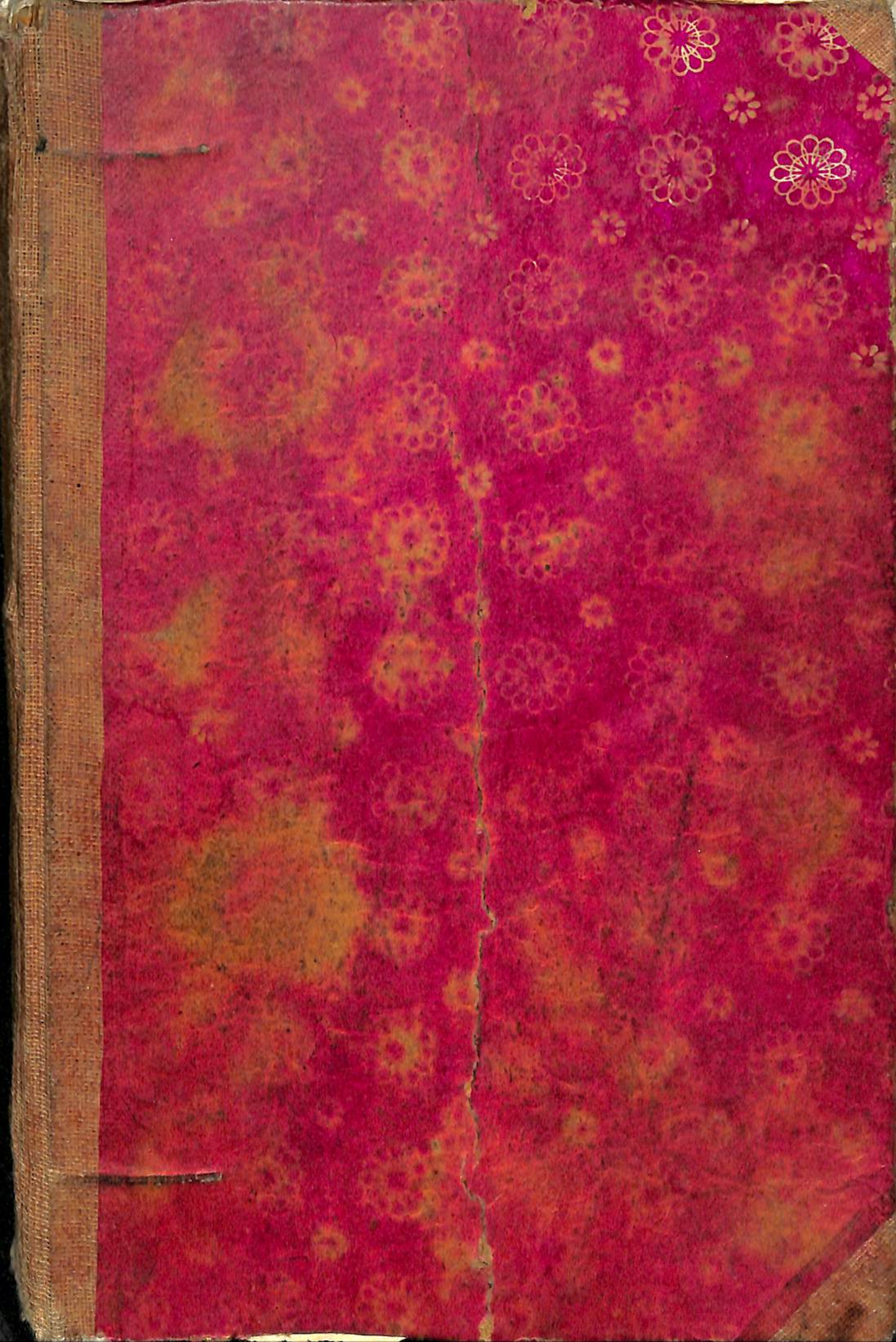




सा इतना सा ख्वाब है

है लेकिन देना नहीं चाहते। मेरी इस आदत से लोग चिढ़े हुए हैं और यही वजह है कि वे मेरे बारे में अनाप-शनाप बकते रहते हैं। फिर आम लड़कियों की तरह मैं यहां नेम-फेम और वेल्थ के लिए नहीं आई हूं। पैसों की कमी मेरे पास आरम्भ से ही नहीं रही। दरअसल अभिनय मेरा शौक है। यह सृजनात्मक रूप से खुद को पेश करने का माध्यम है। इस काम से मुझे संतुष्टि मिलती है इसीलिए मैं इस क्षेत्र से जुड़ी हूं।

इतना-सा ख्वाब है" का विमोचन

दि ट्रेन, जवानी-दिवानी, बसेरा, जवानी, कसमें वादे, पुकार, ये वादा रहा, अपने-अपने, इत्यादि आदि फिल्मों का निर्माण करने वाले रमेश बहल के इंतकाल के बाद, उनके बेटे ... और बेटी सृष्टि बहल ने अपने

चमड़ा व्यापारी है। फिलहाल, "फिल्म सिटी" की ओर से रितु को सगाई की मुबारकबाद।

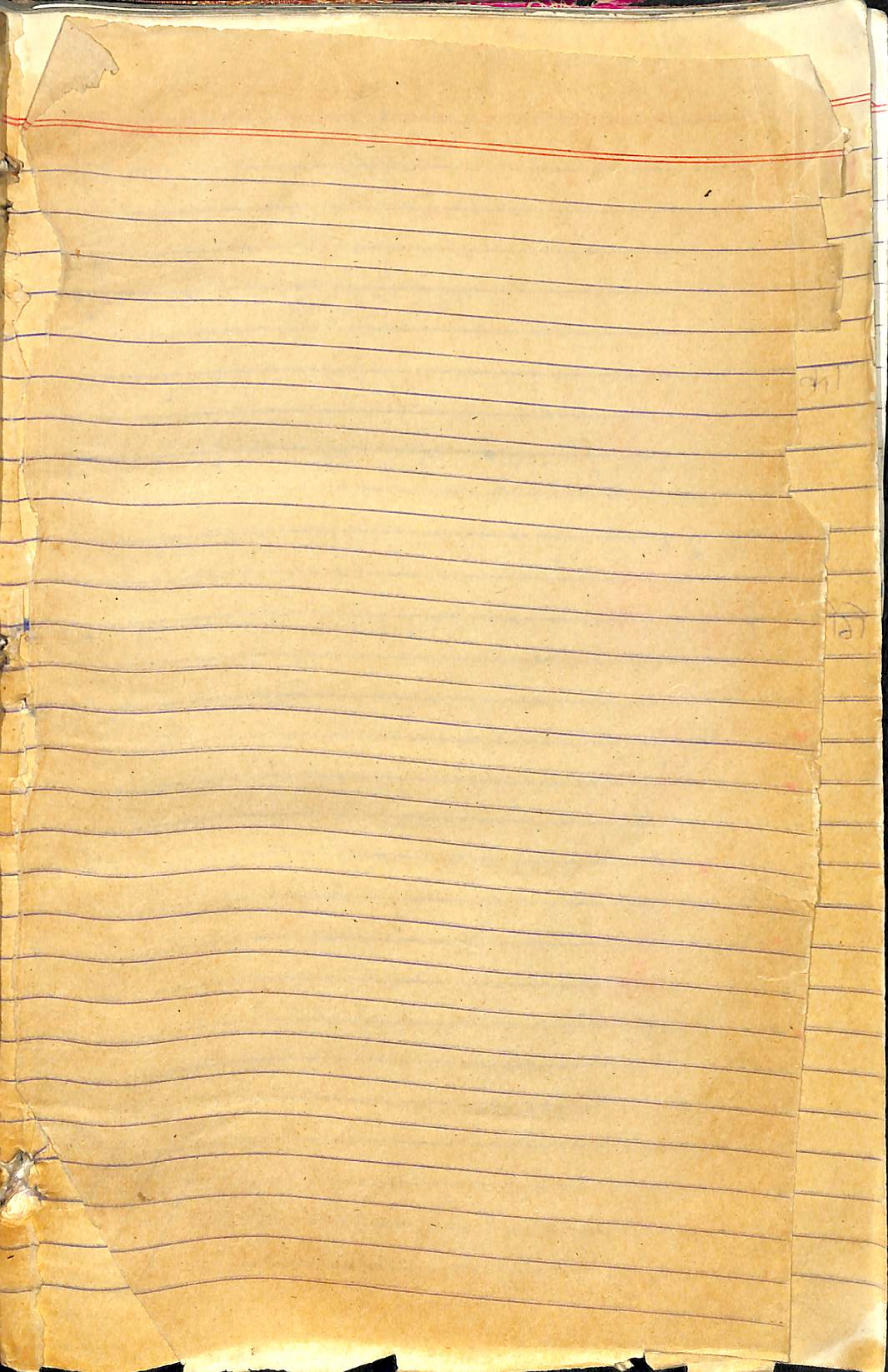
... रानी मुखर्जी, सुष्मिता सेन ... श्रॉफ की प्रमुख भूमिकाएं हैं। ... और जया का "रोज मूवीज" ... अपनी फिल्मों की ... "अब ... इस नयी फिल्म में ... अभिषेक हीरो के तौर पर चमक रहे ... संगीत कंपनी "यूनिवर्सल" वालों ने संगीत अमिताभ के हाथों ही रिलीज

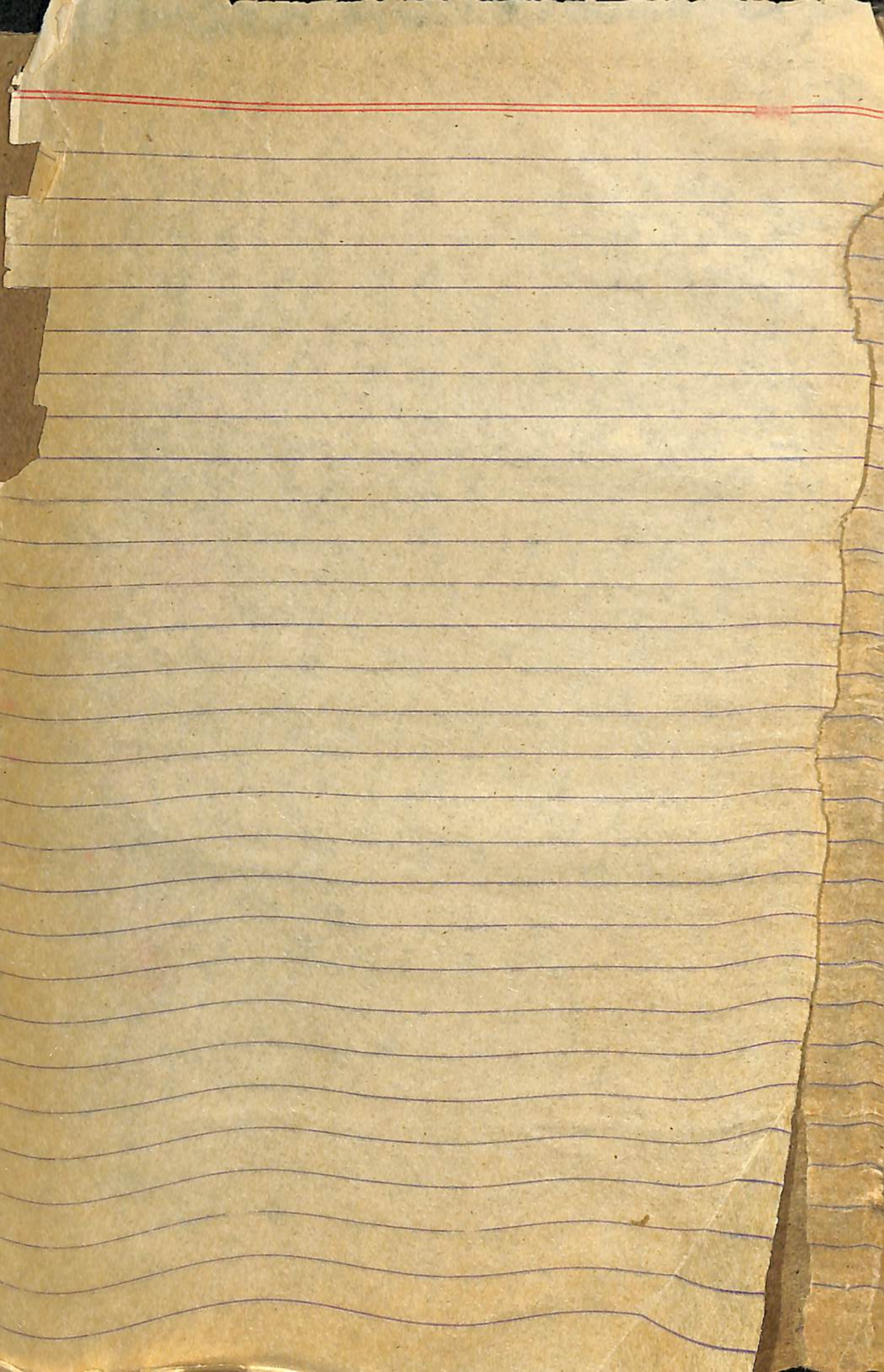
GULSHAN



Exercise Book

GULSHAN





ॐ श्री गणेशाय नमः

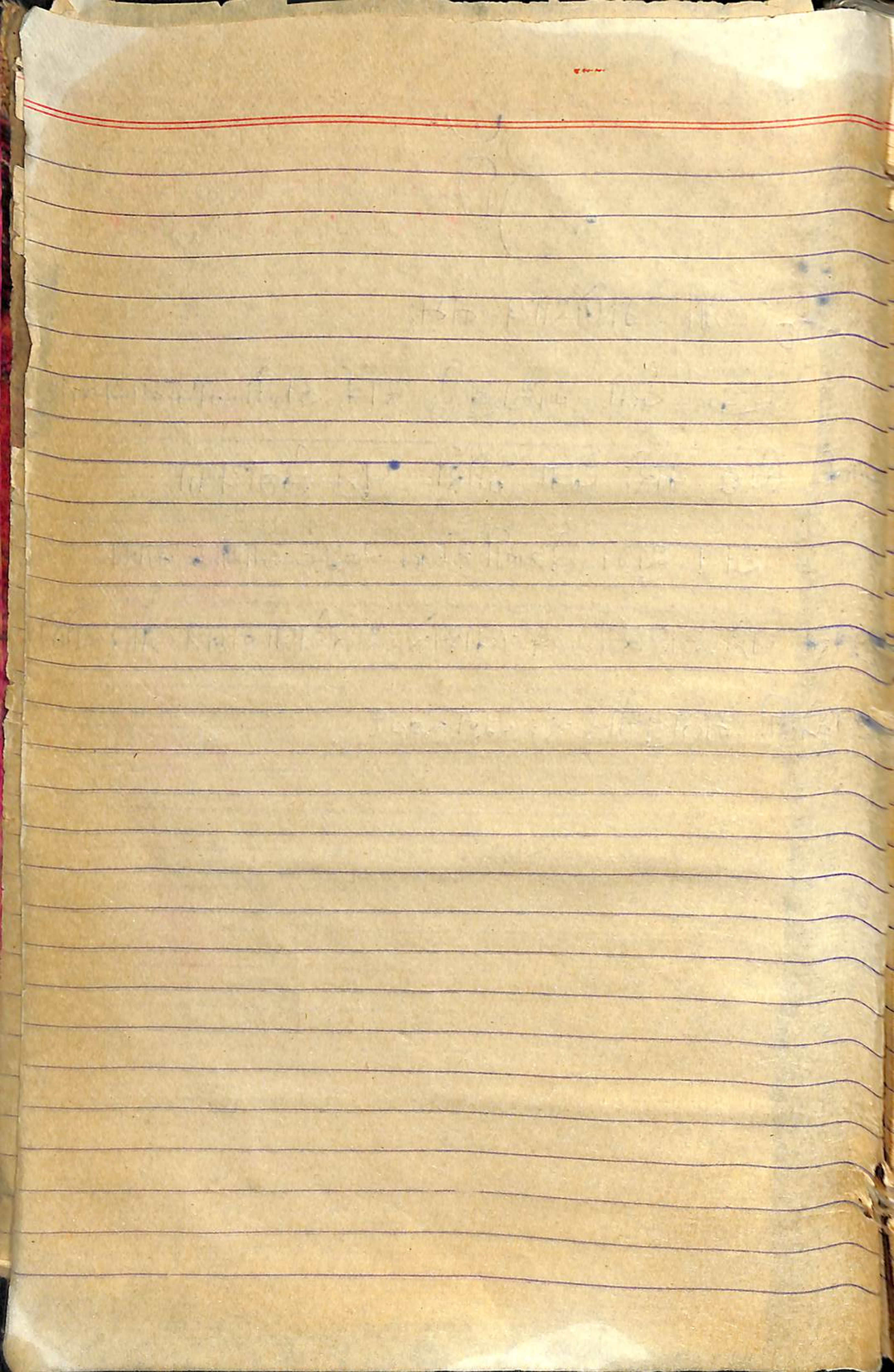
एक दंतो महाबुद्ध सर्व ज्ञो गणनायका

सर्व सिद्ध करो देवा गौरी पुत्र विनायका

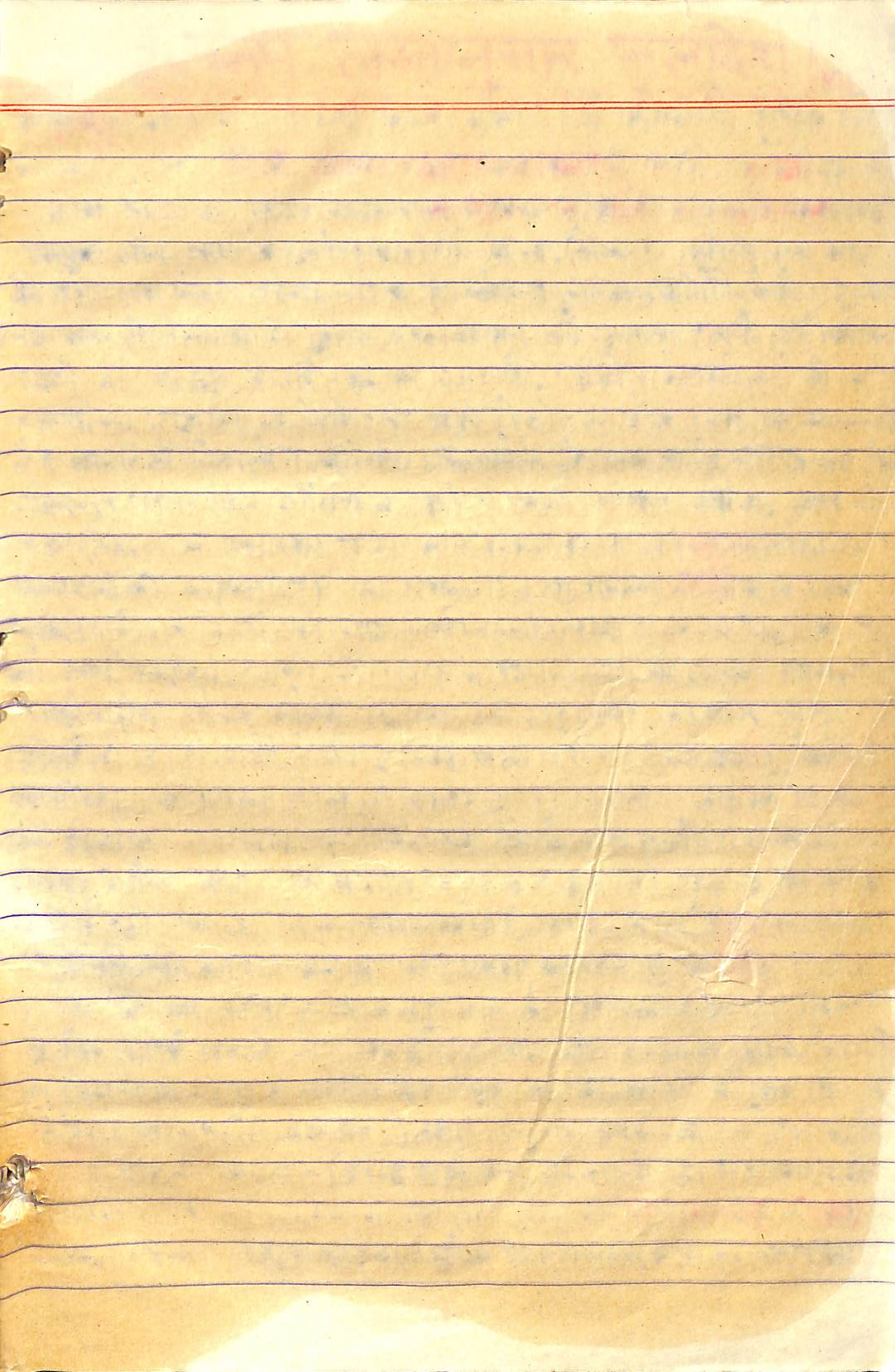
अथ शुभ विक्रमी संवत २०५८ आषाढ मासे

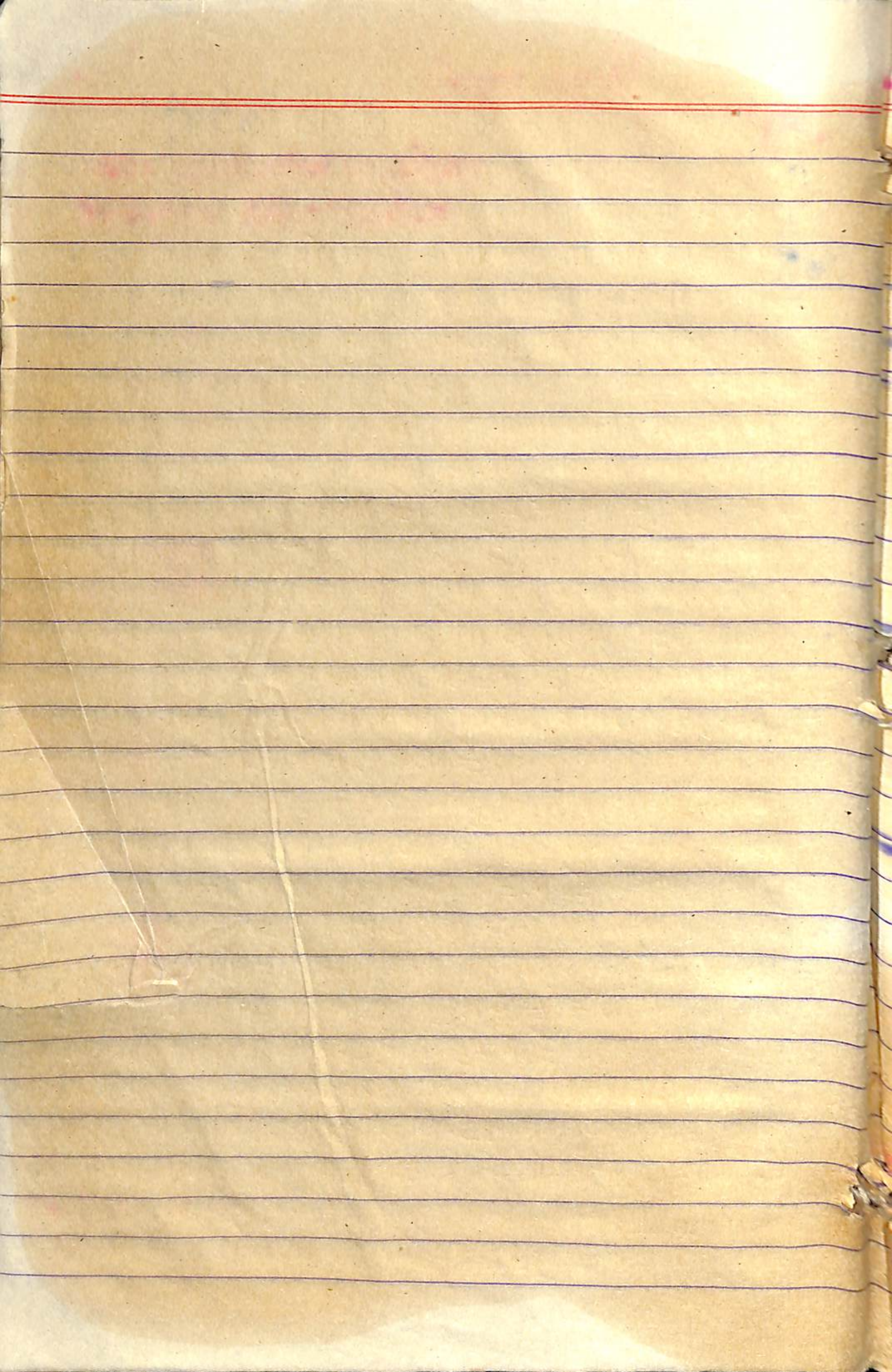
शुक्ल पक्षे अष्टमी बुधवासरे शतभिषा नक्षत्रे प्रीत योगे

अंग्रेजी मतानुसार २७ जून २००१



विषय सूची





जन्म लग्नानुसार फलादेश

[illegible]

[illegible] मेष लग्न का फलादेश [illegible]

मेष लग्न में जन्म लेने वाला जातक मँझोले कद का, सुडौल बदन और गौर वर्ण का, चंचल नेत्रों वाला, तीक्ष्ण दृष्टि वाला, मध्य की शारीरिक [illegible] वाला होता है। चेहरा [illegible], मोटी नाक, मूँछें [illegible] रंग से [illegible] [illegible], [illegible] तर्क से [illegible] लोगों में साहसी, स्वाभिमानी, साहसी, [illegible] में [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] जाना जाता है। [illegible] में [illegible] नहीं। [illegible] शीघ्र क्रोधित परन्तु [illegible] शान्त, शौर्य व [illegible], [illegible], हाथ में [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] कर देने की कठिनाइयों का सामना [illegible] [illegible] जीवन का १६, २२, २८, ३२, ३५ वाँ वर्ष आर्थिक दृष्टि से सफलता, भाग्योदय [illegible], उत्तम सहायता पारिवारिक जीवन सुखी, समाज में प्रतिष्ठा, अत्यन्त सुन्दर मित्रों की कोई कमी नहीं। इसकी पत्नी सुन्दर, स्वस्थ, गौर वर्ण की, [illegible] होने के साथ-साथ [illegible]। जीवन [illegible] में [illegible] [illegible], [illegible] एवं [illegible] पत्नी, [illegible] [illegible], [illegible] कार्य, [illegible] से युक्त, धार्मिक कार्यों में रुचि, उदार स्वभाव की, [illegible] प्रिय तथा [illegible] [illegible] [illegible] सन्तान [illegible]।

यह [illegible] क्रोधी स्वभाव का [illegible] पूर्वक कार्य करने में [illegible] के लिए [illegible] दूर रहता है। [illegible] हैं। परन्तु ऐसा [illegible] होता है। [illegible] की स्त्रियों के साथ सम्पर्क करने से [illegible] भी हो जाती है। यह [illegible] होने से जातक को अन्तिम दिनों में ([illegible]) [illegible] पड़ता है। [illegible]

मेष [illegible]

से मृत्यु होजाती है। व्यक्ति तेजस्वी एवं शान्त, सौम्य, सरल स्वभाव का होता है। [illegible] परन्तु जीवन के मध्यकाल में इसे [illegible] पूर्णता [illegible] इसके [illegible] सौभाग्य [illegible] कार्यों [illegible] होती है, [illegible] जाती है। ऐसा [illegible] पर [illegible] के [illegible] का आशीर्वाद प्रबल [illegible] होता है। [illegible] में यह [illegible] होता है। [illegible] करने वाले एवं [illegible] प्राप्त करता है। [illegible] विशेष योग होता है। [illegible] होता है। [illegible] से [illegible] रहता है। जीवन [illegible] में [illegible] की आवश्यकता है। [illegible] इसके [illegible] रहता है, [illegible] के प्रति [illegible] रखता है। इसका जीवन [illegible] रहता है। जातक [illegible] को [illegible] सम्मान को [illegible] में यह [illegible] रहता है, [illegible] इसके जीवन का [illegible] है। यद्यपि इसके जीवन में प्रलोभन आते हैं तथा बुरे कार्यों [illegible] भोगों को [illegible] हैं, परन्तु [illegible] अपने आदर्श से च्युत नहीं होता। यह [illegible] करता है। [illegible] और [illegible] होता है [illegible] गरीबी में बीतती है परन्तु [illegible] के बल पर [illegible] होकर [illegible] पहुँच जाते हैं। व्यापार [illegible] में [illegible] लाभ [illegible] नौतिक क्षेत्र में शीघ्र सफल होते हैं।

दर्पण [illegible] को)

[illegible] , [illegible] मंगल [illegible]

वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, साहसी, सतर्क, महत्वकांक्षी, उद्यमी,
नेत्र बड़े रहते [illegible] और धार पर तेज रफ्तार [illegible] शक्ति, उत्साही, स्पष्ट
वादी, भ्रमणप्रिय, [illegible] पर दिन के साथ [illegible] बुड्ढों
[illegible] प्रतिकारशील, क्रोधी [illegible] शीघ्र शांत, [illegible]
पित, कफ, [illegible]
शुभ [illegible] संगीत [illegible] शुभ [illegible]
वर्ष [illegible], [illegible] होंगे [illegible]

[illegible]

[illegible] पूर्व की ओर [illegible] सूर्य [illegible] लग्न
और चन्द्रमा के बीच [illegible] जातक का [illegible] पूर्व
की ओर [illegible] प्रकृति पित्त [illegible] एवं साहसी [illegible]
[illegible] दीर्घ स्वर [illegible]
पुरानी [illegible] आयु [illegible] साल [illegible]
[illegible]
[illegible] जन्म
लेने वाली स्त्री [illegible] स्वभाव की [illegible], क्रोधी, [illegible]
से विरक्त, [illegible] होती है। [illegible]

जातक के भीतरी और बाहरी भाव सदा समान रहते हैं,
शूरवीर, हर एक फैसले में राय देने में झट तैयार, भाग्य में कई
प्रकार की तबदीली, जायदाद - जमीन सम्बन्धी कई प्रकार के झगड़े जिनसे
लाभ भी होता है। भाई - बहिन कम, पिता का सुख व रिश्तेदारों का सुख कम।
सन्तान की तरफ से पूर्ण सुख नहीं। जातक चंचल, चुस्त, चालाक, स्वतंत्र।
मुख्य दर्द, सोजश, हाथ, पांव, आँख पर चोट, रक्त विकार। ३,११,१४,२१,२७,४५,
वें वर्ष कष्ट। महत्वपूर्ण वर्ष २०-२८-४२-५६-६८-७०। आयु १०० वर्ष

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वृष लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति शरीर से [illegible] और पुरुषार्थी होता है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्वभाव से गंभीर, कम [illegible] रखने वाला [illegible] करता है और बाद में [illegible] पछताता है। इसकी प्रवृत्ति सांड की तरह होती है, [illegible] [illegible] होता है। [illegible] [illegible] [illegible] इसका स्वभाव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में प्रकृति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अवसर ऐसे भी आते हैं जब किसी स्त्री का इनके जीवन में प्रवेश होता है और वह शारीरिक सम्बन्ध को प्रधानता देती है। भावना प्रधान होने के कारण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होगा, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] मिलता है।

स्वभाव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रखते [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है नवीन विचारों को हानि, पारिवारिक जीवन सुखी एवं प्रसन्न क्रोधी और [illegible], बान्धवों एवं भाइयों से कोई विशेष सहायता प्राप्त नहीं होती, पारिवारिक जीवन भी अधिक सुखी नहीं। इस जातक को सन्तान पिता द्वारा [illegible] हो

दबंग पा तो रखते हैं तथा साधारण स्वास्थ्य ही होती है
व जीवन में कोई प्रभाव नहीं बना पाती। पुत्रों की अपेक्षा
कन्या संतान से विशेष प्रीति होती है ये स्थूलकाय होते हैं,
लम्बी चौड़ी डींगें हांकते हैं, स्वार्थ के प्रसंग में ज्यादा
विश्वास रखते हैं। वास्तव में कुछ और होते हैं किन्तु ये
दिखाते कुछ और हैं। ऐसे व्यक्ति मोटी बुद्धि के होते हैं,
समय की नजाकत को पहचान नहीं पाते, अपने स्वार्थ तो
तक स्वार्थ ही अड़े रहते हैं, फलस्वरूप हानि उठानी पड़ती
है। शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता इनमें होती ही नहीं, जरा
सा भी अधिकार मिल जाए तो दुरुपयोग करने में कभी
नहीं हिचकिचाते, पुत्र संतान का अभाव, व्यक्ति कामुक एवं
स्वार्थी, आसक्त। स्त्री अल्प शिक्षित या अशिक्षित, कलाओं
में रुचि व कलाओं का ज्ञान। आयु, इसको स्त्री का साथ
नहीं देता, बाल्यावस्था में ही इसकी स्त्री को मुसीबतों का सामना
सिर एवं उदर पीड़ा के रोग। मृत्यु, वर्गों परिवारों के बीच
होती है। ह्रदय रोग या क्षय रोग भी संभव है। अपघात
भी देखने को मिलता है। ऐसा व्यक्ति शांति से मृत्यु का
वरण करता है। जातक राजनीति पटु होता है, ऐसा प्रत्येक कार्य
जो लोगों को असंभव लगता है, यह युक्ति से कर डालता है
परंतु फिर भी यह अपना भला नहीं कर सकता। दूसरों
के कार्य यह आसानी से सम्पन्न कर सकता है, पर इसके
स्वयं के कार्य आलस्यवश अधूरे पड़े रहते हैं। भाग्य भी
इससे निरंतर छल करता है। शत्रु पक्ष प्रबल होता है
तथा इसके प्रत्येक कार्य में रुकावटें डालता है। नौकरी में
यह जातक धीरे धीरे प्रगति करता है। भाइयों के लिए [illegible]
[illegible] होता, नेतृत्व की क्षमता वाला, जीवन का उत्तरार्द्ध [illegible]
सफल जीवन सादा परंतु आकस्मिक खर्चे भी कई बार
आ जाते हैं। आय की अपेक्षा व्यय अधिक, कीर्ति, सम्मान

वृष

की [illegible] खेलकूद, [illegible] में रुचि [illegible] प्रसिद्ध गायक, संगीतज्ञ, [illegible] [illegible] का स्नेह इन्हें [illegible] प्राप्त होता, [illegible] स्वभाव, [illegible] पर विशेष [illegible] तथा [illegible] रखते हैं। [illegible] जो तो जीवन के [illegible] में [illegible] [illegible] रखता है। आँखों को [illegible] वृद्धावस्था को आँखों का [illegible] होता है। (लग्न में वृष से)

[illegible] शुभ [illegible] सुन्दर, [illegible] के बाल [illegible] आँखें, सुन्दर वर्ण, आकर्षक [illegible], [illegible], सुन्दर प्रकृति, धीर, शान्त, [illegible] स्वभाव, प्रसन्न हृदय, [illegible] [illegible] पीछे नहीं होगा, [illegible], सौन्दर्य प्रेमी, संगीत, कला [illegible] प्रयत्नशील, [illegible] में भी अपना [illegible] चन्द्र बुध की स्थिति शुभ हो तो [illegible], वस्त्र-उद्योग, [illegible] में सफलता प्राप्त कर सकेगा। शुभ [illegible] भाग्योदायक वर्ष [illegible] के होंगे (पंचांग विचार से)।

गौरवर्ण, सुन्दर रूप, [illegible] एवं माता का [illegible] की ओर, [illegible] प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र एवं [illegible] के आभूषण पहने हैं, [illegible] का भोजन किया हो [illegible] उत्पन्न [illegible]। आयु के १,१३,१८,३३,[illegible] वर्ष [illegible]
(प्रसूति लग्न विचार से)

निम्न फलादेश वृष लग्न की स्त्रियों के लिए :- वृषलग्न में जन्म लेने वाली स्त्री [illegible]नयशीला, सुन्दर, सत्य बोलने वाली, आज्ञाकारिणी संतान[illegible] से युक्त तथा पति प्रिया होती है। [illegible]

जातक हठी, मनमौजी, देरी से काम करने वाला, मजबूत दिल, आराम पसंद, छोटी-2 बातों पर विचार, हर कार्य में झगडा हो जाता, बीमार हो जाऐ तो देरी से अच्छा, झगडों में दिक्कतें, माता-पिता का सुख अच्छा यदि पहली संतान लडकी हो तो मर जाती है; प्रौढावस्था सफल, अधिक शत्रु, मृत्यु विदेश या पानी में। ५-२८, ३७, ४७ वें वर्ष कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष २८ ३६, ४५, ५२, ६२, ७५, ८०। आयु वर्ष ८०। [illegible]

मिथुन

[illegible]

[illegible]

मिथुन [illegible] जातक [illegible] होता है तथा वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को सार्थक करने में लगा रहता है। परन्तु [illegible]

[illegible]

[illegible] लगन को [illegible] कुछ न कुछ करने की धुन सवार। लम्बा कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर, आकर्षक व्यक्तित्व तथा कार्य आरम्भ करने पर प्रसन्न। इनके प्रत्येक कार्य सिद्धि में व्यर्थ की देर होती है और परिश्रम से काम फल प्राप्त होता है। फिर भी इनमें गजब की हिम्मत होती है तथा ये भारी से भारी बाधाओं का सामना करने में तैयार रहते हैं। वैज्ञानिक कार्यों में इनका दिमाग ज्यादा तेज होता है। पुस्तक व्यवसाय, लेखन प्रकाशन इनके शौक हैं। चतुर, बात करने में प्रवीण और अपना कार्य निकालने में होशियार होते हैं। सच्ची मित्रता की कसौटी पर खरे उतरते हैं। आर्थिक मामलों में कंजूसी [illegible]। परिश्रम करते हैं, उतना लाभ नहीं, फिर भी ये जो कुछ अर्जित करते हैं उसे भली प्रकार संचित करते हैं। आकस्मिक खर्चों से ये परेशान रहते हैं। स्टैण्ड बनाए रखने में कई बाधाओं का सामना। २०,२६,२७,३३,३४,३६,४४,४५,५३,५४ वें वर्ष महत्त्वपूर्ण होते हैं। अद्भुत साहस एवं जोश वाला जातक। बाल्यावस्था में शिक्षा के लिए जगह-2 भटकना पड़ता है। परंतु उत्तम शिक्षा प्राप्त कर लेता है। स्वस्थ शरीर एवं महत्त्वपूर्ण चिंतन शक्ति होती है। कला-प्रेमी, काव्य-संगीत में रुचि। पारिवारिक जीवन सुखी, सौभाग्यशाली, जीवन में पूर्ण सुखभोग, विवाह शीघ्र,

मिथुन ६

सुन्दर, सुघड़ सुशील पत्नी। कन्या की अपेक्षा पुत्र संतान अधिक। बाल्यावस्था में धनाभाव, [illegible] वर्ष के बाद धनागमन, पूर्ण धन [illegible] वर्ष से मिलता है। जातक सुन्दर, सुन्दर नेत्रों वाला, मेधावी के साथ कठोर परिश्रमी, परिश्रम के बल पर वर्तमान एवं भविष्य को अपने अनुकूल बना लेता है। कामुक एवं विलासी होता है। जातक की पत्नी अहंकारी एवं गर्वीली होती है। इसके सम्मान को जरा सी ठेस लगने पर वह शेरनी की प्रकार उठती है। ऐसी स्त्री सुंदर, आकर्षक, [illegible] में रहने वाली होती है। जातक को पत्नी अनुकूल नहीं मिलती फिर भी [illegible] जीवन के आर्थिक पक्ष को सुधारने में सहायक होती है। [illegible] पुत्रों को उत्पन्न करने वाली ऐसी स्त्री सौभाग्य [illegible] होती है। जातक की मृत्यु ईश्वर का नाम लेते [illegible] पूरे परिवार के बीच होती है। मृत्यु के समय पुत्र उपस्थित होते हैं तथा बिना व्याधि के देहान्त हो जाता है। जातक बाल्यावस्था में घोर कष्ट पाता है। इधर से उधर भटकना, शिक्षा के लिए ठोकरें खाना। तथा आजीविका प्राप्ति के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है। जीवन के [illegible] वर्ष से समय इसके अनुकूल बनता है। [illegible] वर्ष के बाद से भाग्य साथ देने लगता है। [illegible] वा साल तथा इससे आगे भाग्य की दृष्टि से सफल वर्ष कहे जा सकते हैं। यात्राओं का यह शौकीन भी होता है तथा यात्राओं का योग भी होता है अथवा इसकी आजीविका ऐसी होती है जिसमें यात्रा, भ्रमण आदि [illegible] हो। जीवन के मध्यकाल के बाद यह प्रसिद्धी प्राप्त करने लगता है। [illegible] वें वर्ष के लगभग में जातक देश में ख्याति [illegible] करता है। [illegible] योग्यता, कूटनीतिज्ञ, मानव को परखने की शक्ति, बातचीत में जातक पटु होता है। वृद्धावस्था में जातक लखपति बन जाता है। [illegible] से सम्बन्धित कार्यों या नौकरी में विशेष प्रगति। समाज में इसका सम्मान होता है। नीतियुक्त कार्य वाला जातक होता है। एकादश भाव में मेष राशी शुभ होती है। जातक घोर परिश्रमी।

आय बढ़ाने का हर संभव प्रयास करता है तथा आय को एक से अधिक स्रोत बनाता है। इसकी बाल्यावस्था [illegible] की होती है तथा पिता द्वारा उपार्जित धन इसे बड़ी [illegible] मिलता है। जीवन के 22 वें वर्ष के बाद से इसकी आर्थिक स्थिति ठीक होने लगती है। ऐसा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में स्वतंत्र [illegible] भाई इसके कम होते हैं तथा जातक को उनसे कोई विशेष लाभ नहीं होता। [illegible] जातक, सही निर्णय लेने की क्षमता एवं योग्यता के बल पर ही [illegible] प्राप्त कर लेता है। जातक बुद्धिशील व्यक्ति होता है। जीवन के [illegible] का [illegible] होता है तथा बचपन से ही [illegible] होता है। [illegible] क्षेत्र में भी जातक को सम्मान मिलता है। ऐसा [illegible] अथवा लेखक हो सकता है। 32 वें वर्ष के बाद जातक की आर्थिक स्थिति सुधरती है। ऐसा [illegible] से जुड़ सकता है, यद्यपि इसे जीवन के विविध क्षेत्रों तथा स्थितियों में संघर्ष करने का अवसर मिलता है, फिर भी [illegible] होता है। [illegible] रखता है, आय के विभिन्न स्रोत [illegible] है फिर भी जीवन में कई अवसर ऐसे आ जाते हैं जब आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो जाती है, परन्तु जातक कर्मठ एवं साहसी होता है। साहस के कारण ही विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में समर्थ होता है। फिजूलखर्ची से यह दूर रहता है तथा धार्मिक क्षेत्र में लचीला होते हुए भी सामाजिक रूढ़ियों का पालन करता है। (कुण्डली दर्पण से)

मिथुन लग्न वाला जातक गौरवर्ण, [illegible] सामान्य या ऊँचा कद। जातक अस्थिर किंतु मौलिक विचारों [illegible] बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों की हर प्रकार से [illegible]

नीति [illegible] को [illegible] अधिकारी बनने वाला, तर्क वितर्क करने में कुशल दूसरे के स्वभावों, दुख की बातों को छिपाने वाला [illegible] आदि में बुद्धि और भाव [illegible] कार्य, व्यापार और [illegible] मजबूत हृदय परन्तु नर्म स्वभाव होने से (चौपांग लोकपाल) [illegible] जाता है। एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरु करने की प्रवृति वाला, अपने व्यवसाय में [illegible] परिवर्तन करेगा, अपने सारे काम चातुर्य, बुद्धि के बल पर सफलता प्राप्त करेगा। नए-२ मित्र बनाने में कुशल, बातचीत की कला में निपुण, [illegible] क्रय विक्रय, पुस्तक लेखन, लेखाकार, बैंक, वकालत, ज्योतिष, [illegible] आदि के व्यवसाय में सफल। शुभ नग पन्ना, स्त्रियों के लिए पुखराज। भाग्योदयकारक वर्ष २२, २८, ३५, ३६, ४२वें होंगे (चौपांग विचार)

बालक का चंचल स्वभाव, वात श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उत्पत्ति काल में वायु, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों से दूध कम उतरा हो, माता ने पहले गर्भ में भोजन किया हो। वस्त्र हरा पुराना। देह का द्वार पश्चिम की ओर, [illegible] प्रसव, बालक ने दीर्घ स्वर में रुदन किया हो। आयु के २२, १०, १६, ३६, ४८वें साल कष्ट। (प्रसूति लग्न विचार से)

निम्न फलादेश मिथुन लग्न की स्त्रियों के लिए - मिथुन लग्न वाली स्त्री कामासक्त, गुणहीन, कठोर वचन बोलने वाली, क्रूर कर्मी, कफ वात युक्त, बहुत खर्च करने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक का नर्म स्वभाव, सच्चाई से कार्य करता है, बात का अंदरुनी भाव गुप्त रखता है। नये-२ विचार पैदा, कानूनी काम-व्यापार, लेखा सम्बन्धी बातों को गम्भीरता से करता है। दिल का मजबूत, विद्या द्वारा ख्याती, यात्रा अधिक, दुख व सुख में सदा एक भाव, घरेलू झगडों में चिंतातुर, चिंता से मन उदासीन, संतान अधिक पर थोडी रह जाती है। संतान से

मिथुन

मन चिंतित, मित्रों की प्रीति करे पर मित्रों से लाभ नहीं, स्त्री-क्लेश रहता है। दो स्त्रियों से संयोग, औरतें के झगडे से तंग, गुप्त शत्रु, लिखने पढ़ने का शौकीन, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है। वर्ष कष्ट ३,५,८,११,१८,२०,२८,४५वें। महत्त्वपूर्ण वर्ष १५,२१,३५,४०,४५,५०,५५,६०,७४,८२। आयु वर्ष ८६।

कर्क लग्न का फलादेश

कर्क लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति भावुक और सहृदय होता है। भावनाओं में बहकर वह अपना भला बुरा भी नहीं सोचता। कोरस्तर कठोर परिश्रम करते रहने पर भी कभी सफलता प्राप्ति में देरी हो जाती है। जीवन में आगे बढ़ते रहने की तीव्र इच्छा होती है परन्तु लगातार असफलताओं के कारण हीन भावना मन में घर कर जाती है। सनातन व गतिशील में रुचि, नये कार्य करने की प्रवृत्ति, तीव्र बुद्धि, अन्वेषण विचारधारा जीवन में सफलता प्रदान करने में सहायक होती है परन्तु भावुकता का तत्व प्रधान होने के कारण ये किसी भी कार्य की गहराई तक पहुँचने की क्षमता नहीं रखते। पैसे की कमी होने के कारण भी इच्छा के अनुसार कोई कार्य नहीं कर पाते तो ये सामाजिक कार्यों में खर्च करने को सदा तैयार रहते हैं। न्यायप्रियता, पक्षपातरहिता और ईमानदारी के लिए ऐसे व्यक्ति प्रख्यात होते हैं, दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं, पति पत्नी के विचारों में भिन्नता। ऐसे जातक की बाल्यावस्था बड़े आराम से बीतती है और आर्थिक संकटों का सामना नहीं करना पड़ता परन्तु जीवन के मध्यकाल में ये अपना संचित द्रव्य उड़ा देते हैं या फिर अनिश्चित कार्य व्यापारों में लगाकर गंवा बैठते हैं। भावुकता के कारण भी इन्हें हानि उठानी पड़ती है। भाग्य इनके साथ होता है। पास में पैसा न होने पर भी जरूरत पड़ने पर इनके हाथ में पैसा आ जाता है और काम निपट जाता है। राजनीतिक कार्यों या राजकीय नौकरी से धन संचय होने के ज्यादा अवसर हैं। शास्त्रों में अनुराग, मित्रों द्वारा प्रशंसनीय, सम्बन्धियों से बिल्कुल सहायता नहीं बल्कि दूसरे संपर्क में आने वाले लोग और मित्रगण ही सहायता करते हैं। उसे क्रोध आ जाता है पर क्रोध उचित अवस्था में ही आता है। जल्दी क्रोध चढ़ता है पर उतनी ही जल्दी उतर भी जाता है।

जातक हीन भावना का भी शिकार होता है। सफल व्यापारी, बचपन में निर्धन होते हुऐ भी व्यापार जमाता है और [illegible] फैलाता है। ऐसा व्यक्ति नम्र एवं दयालु होता है, दूसरों की मदद करना इसका स्वभाव होता है तथा क्रोध का [illegible]। कुछ भाग धार्मिक कार्यों में लगाता रहता है। [illegible] कुछ [illegible] शुभ कार्यों में लगा [illegible]। ऐसा व्यक्ति शीलवान एवं [illegible] भी होता है। यौवनावस्था में ही [illegible] सुखभोग करता है तथा वृद्धावस्था सुखी एवं सफल होती है। जातक [illegible] को [illegible] होता है। [illegible] सुख जातक को प्राप्त होता है एवं अंग प्रत्यंग सुन्दर एवं दर्शनीय होते हैं। ये व्यक्ति साहसशील होते हैं [illegible] सोच विचारक कार्य करने वाले होते हैं। ये धन के पालक होते हैं, [illegible] एकत्र [illegible] इसे [illegible] की [illegible] हैं। धार्मिक कार्यों में ये पूर्णतः विश्वास रखते हैं एवं धर्म सम्बन्धी कार्यों में अग्रणी रहते हैं। जातक [illegible] होता है, अपनी [illegible] के लिए कठोर परिश्रम भी, मेहनत करना। परिश्रम के बल पर निरंतर उन्नति करते रहना ही इसका स्वभाव होता है कि जीवन में किसी [illegible] स्त्री से संबंध स्थापित करके भी प्रेम प्राप्त करता है। जातक की स्त्री [illegible] होती है। श्रृंगार पर विशेष ध्यान देती है, आभूषण इसके प्रिय पदार्थ होते हैं। आभूषणों की [illegible] इसके हृदय में समाप्त ही नहीं होती। क्रोधी स्वभाव की [illegible] पर भी विश्वास करती है तथा आत्मसम्मान की रक्षा यह प्राण देकर भी करती है। व्यंग्य इससे सहन नहीं होता और जो भी इसके अहं को ठेस पहुँचाता है उसके प्रति यह भयंकर बन जाती है। वैर यह भूलती नहीं। [illegible] समय पड़ने पर वैर निकाल लेती है। जातक को अ[illegible]। वृद्धावस्था में जातक को वायुविकार भी हो जाता है। [illegible] के सड़ने से भी मृत्यु संभव है। जातक जीवन में [illegible] सफलता प्राप्त करता है। धार्मिक कार्यों में जातक रुचि लेता है [illegible]।

नौकरी [redacted] रखता है। व्यापार में इसे पीली धातु का
व्यापार [redacted]
कार्यों [redacted]
है। [redacted]
पहुँचता [redacted]
तथा [redacted] से ज्यादा परिश्रम
[redacted]
कम [redacted]
कल्पना [redacted]
रहता [redacted]
नियन्त्रण [redacted]
इन्हें धोखा दे देते हैं। विशेषतः [redacted]
खा जाते हैं। प्रौढावस्था में नेत्रों में [redacted]
आप्रेशन अथवा लम्बी सुश्रूषा करनी [redacted]
ये ढोंग, पाखंड तथा समाजिक रूढ़ियों के कट्टर विरोधी होते हैं।
[redacted] पर नियंत्रण रखते हैं (कुण्डली दर्पण से)

[redacted] की सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा,
[redacted] मंगल शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदन
शील [redacted], न्यायप्रिय, दयालु स्वभाव, परिवर्तनशील

स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं का प्रिय, [illegible] शील, समया-
-नुकूल काम निकालने में कुशल [illegible]
अशुभ [illegible]
हो [illegible], संगीत, [illegible]
[illegible]
[illegible] जिस
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] (पांचांग दिवाकर से)

[illegible] बलगम
प्रकृति, [illegible] सुन्दर मुख, नाक का [illegible] उत्तर की ओर
[illegible] पुराने
वस्त्र पहने हों, माता के [illegible] टांग पर [illegible] का निशान, प्रसव
से पूर्व [illegible] आभूषण पहने हों।
[illegible] कौन। आयु
के [illegible] कष्ट (प्रश्न लग्न विचार से)
[illegible] की स्त्रियों के लिए है ÷ कर्क लग्न में
जन्म लेने वाली [illegible], कांति युक्त, साधु वृत्ति, नीती प्रिय, भाइयों
को प्रिय, [illegible] सुखों से युक्त होती है (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक शान्त स्वभाव, चंचल, जिंदगी धालि-पुथल, दिल से जो
काम करना चाहे कर ही लेता है, विचार शक्ति प्रबल, टालमटोल बहुत,
जानकारी विस्तृत, शीघ्र क्रोध पर शान्त, धन इकट्ठा करने में कष्ट,
पैतृक सम्पति थोडी, आयु का पहला हिस्सा सुखी, भाई-बहिन की शीघ्र
मृत्यु, स्त्री से कलेश, गुप्त शत्रु, शत्रु विजयी, नाजुक मिजाज 35 वें
वर्ष तक जिंदगी डांवाडोल। 5-16-18-20-24 वर्ष कष्ट। महत्वपूर्ण

कार्क

वर्ष १६,२४,३८,४२,६५,७०,८५ | आयु वर्ष १००(कालसर्पक पाँचांग)

सिंह लग्न का फलादेश

सिंह लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति क्रोधी, उन्नत विचारों को रखने वाला होता है। कठिनता से गुस्सा होता है और गुस्सा आने पर एकदम शांत भी नहीं होता। संगीत कलादि में रुचि रखने वाला और भ्रमण का शौकीन, शरीर आकर्षक, गोल और चौड़ा मुख, ऊँचा एवं चौड़ा ललाट, चेहरा नीचे के भाग की अपेक्षा ऊपर का भाग अधिक आकर्षक एवं सुन्दर, स्थिति को अनुकूल कर लेता है, अवसरों के प्रति सतर्क, आत्मविश्वास की भावना प्रबल, धर्म के मामले में कट्टर न होकर बीच का रास्ता अपनाता है। भावनाओं पर नियन्त्रण रखता है, परंतु संतुष्ट हो जाने के बाद आलसी भी हो जाते हैं, इसके विचार मौलिक होते हैं तथा जीवन में एक निश्चित उद्देश्य होता है उसे पूरा करने में प्रयत्नशील रहता है। ये रचनात्मक एवं [illegible] प्रकृति के होते हैं तथा किसी की भी बात का तुरन्त विश्वास कर लेते हैं, फलस्वरूप जीवन में कठिनाइयाँ व खतरे भी उठाने पड़ते हैं। इनका एक ही पुत्र होता है। जातक समाज कार्य में तत्पर, कई मित्र बनाने वाला, विनयशील, माता पिता का प्रिय, दानशील तथा प्रख्यात होता है। जातक आर्थिक दृष्टि से कम सम्पन्न, परिश्रम से धनार्जन करते हैं। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में इन्हें धनाभाव देखना पड़ता है। गर्म स्वभाव व तुरन्त निर्णय न लेने की अवस्था में कई बार ऐसे कार्य कर बैठते हैं, जिनसे इन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। व्यापार से लाभ, रेडीमेंट कपड़े की दुकान या फैंसी स्टोर से विशेष लाभ। जातक की संगति निम्न पदों के लोगों के साथ होती है मन अस्थिर होता है तथा वे किसी भी प्रश्न पर तुरन्त निर्णय नहीं ले पाता। बहुत अधिक बोलता है तथा बोलते हुए देश काल पात्र का भी ध्यान नहीं रहता। अनुचित कार्य करने के बाद पछताना भी इसका स्वभाव, पारिवारिक जीवन में मतभेद

जातक हर समय परेशानी में रहता है, उसका मन शान्त
नहीं रहता एवं कई कठिनाइयों का सामना करता है। शत्रुओं से
[illegible] क्योंकि शत्रु [illegible] प्रभावी रहते हैं। इसके
प्रत्येक कार्य में प्रारम्भ [illegible] फिर कार्य
सम्पन्नता की ओर [illegible] मन्दगामी
होता है [illegible] किसी
ओर [illegible] जा
सकता है। जातक घोड़ों से प्रेम रखता है, घुड़सवारी प्रिय विषय।
जातक [illegible] मान-मर्दन
में [illegible]
आ[illegible]
मित्रों से [illegible] जातक भी स्त्री
संघर्षशील [illegible]
डरने [illegible]
में रुचि [illegible]
इसका स्वभाव [illegible]
उसे मान [illegible]
देती है। जातक को वृद्धावस्था में [illegible]
ज्वर की अधिकता से भी मृत्यु संभव है। [illegible] बीमारियाँ
जीवन में कई बार, जलघात भी संभव। ऐसा [illegible]
शरीर छोड़ता है। जातक सौभाग्यशाली, विवेक हर समय जागृत,
जो भी कार्य करता है सोच-विचारक करता है। आर्थिक चिंता।
चौपायों को खरीदने या बेचने से, कृषि से, मकान से जातक को
लाभ। धार्मिक कृत्यों से भी लाभ। आय से अधिक व्यय, धन संचित
नहीं कर पाता। धार्मिक कार्यों में व पिता के प्रति श्रद्धा। समाज,
कुल, राज्य में आदर की दृष्टि से देखा जाता है। राज्य पक्ष अनुकूल,
आ[illegible] श्रम करने पर भी उचित आय नहीं प्राप्त।
[illegible] व्यापार में अधिक लाभ। आर्थिक स्थिति

चिंतनीय। ४२ वें वर्ष के बाद आय के अन्य स्तोत्र बन जाते हैं। बड़े भाई का सुख साधारण, परिवार में कई विरोधी। जातक [illegible] होशियार, समय को पहचानने वाला, साहित्य, [illegible] का पक्का बात का धनी, क्रोधी, व्यापार में विचित्र स्थितियाँ भोगनी पड़ती हैं। विश्वासघात के कारण भारी हानि, शिक्षा सामान्य, नौकरी के क्षेत्र में कुछ नहीं प्राप्त होता। धीरे-2 प्रगति, स्वभाव अस्थिर, फिजूलखर्च साहस एवं निडरता के क्षेत्र में अग्र भी (बृहद् [illegible] दर्पण से)

[illegible]

[illegible] सुन्दर पुष्ट शरीर, चौड़ा मस्तक, मांसल, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व। जातक [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति का अनुसरण करने वाला, उत्साही, सम्मान का शौकीन, [illegible] करने वाला, [illegible] बोलने की [illegible] कठिनाई [illegible] को सम्भालने वाला, छोटी एवं मामूली बातों की उपेक्षा करने, [illegible] से देखने वाला, बड़े-2 कामों को भी अपने उद्यम से पूरा कर देगा। भाई-बन्धु का सुख कम। उच्चाभिलाषी, [illegible], रईसी जीवन जीने के प्रबल इच्छा वाला, फिजूलखर्ची। जातक का बाह्य रूप भी आकर्षक रूप [illegible]। शुभ नग माणिक्य। सूर्य की पूजा करनी चाहिए। भाग्योदय वर्ष १६,२२,२४,२६,२८,३२ वें होते हैं। (पॉचांग दिवाकर से)

[illegible]

जन्म [illegible] माता का मुख पूर्व किंतु गृह द्वार दक्षिण की ओर, माता ने लाल वस्त्र, स्वर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व खट्टा या कोसला भोजन किया हो। उपसूतिकाऐं ३ या ५, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह, दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४६ वे वर्ष कष्ट (प्रसूति लग्न विचार से)

निम्न फलादेश सिंह लग्न की स्त्रियों के लिए:- सिंह लग्न की स्त्री दूषित शरीर वाली, कफ युक्त- कलह, प्रिय, कठोर स्वभाव वाली

सिंह

केतु परोपकारिणी होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से)

जातक पुरुषार्थी, मजबूत हृदय, धर्मात्मा, दानी, भरोसेमंद, अहंकारी मामूली बातों से नफरत, बड़े-२ कार्य करने में तैयार, सम्पत्ति झट कायम, झगड़ों से परेशान। पहली सन्तान मृत, पहनने और खाने वाली चीजों के व्यापार से लाभ, संतान सुख कम, दो स्त्रियों से संयोग। आयु के ५, १०, २०, ३० वर्ष कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १६, २४, ३८, ४२, ६५, ७०, ८५। आयु वर्ष ८३

([illegible])

कन्या लग्न का फलादेश

कन्या लग्न में जन्म लेने वाला जातक प्रत्येक कार्य करने को उतावला रहता है, फिर कार्य चाहे उस के लिए हितकर हो या अहितकर, अत्याधिक भावुक, विचारशील, मस्तिष्क [illegible] कुछ न कुछ नया सोचते रहते हैं, सात्विक प्रकृति [illegible] सी नासिका, चेहरा कोमल एवं [illegible], सीना उभरा और [illegible] व्यक्तित्व, केश राशि सघन, यौवन सर्वाधिक उन्नत काल, [illegible] में कम रुचि, दूसरों को अपनी भावनाओं के साथ बहा ले जाने की अपूर्व क्षमता, स्वार्थी, स्वार्थ के लिए दूसरों का बड़े से बड़ा नुकसान करने में भी नहीं हिचकिचाते, सफल कूटनीतिज्ञ, राजनीतिक जीवन में सफल। इनके मन में कुछ और तथा होठों पर कुछ और होता है, फलस्वरूप इनके मन की थाह पाना कठिन होता है। मानसिक हीन, जीवन के संघर्षों में हिम्मत हार जाते हैं। विपरीत योनि के प्रति विशेष झुकाव, प्रेम के क्षेत्र में असफल, शान-शौकत में अधिक व्ययी, व्यापारिक कार्यों में सफल। नौकरी भी इन्हें व्यापारिक दृष्टिकोण से करनी चाहिए। ये योजनाएं बना लेते हैं, लम्बे २ मनसूबे बना लेते हैं पर उन्हें पूरा करने की क्षमता इनमें नहीं होती। भाग्य इनका साथ देता है तथा किसी अनुचित तरीके से भी धनागमन संभव है। इनके हाथों में पैसा टिकता नहीं। मौज मस्ती, सुख सुविधाओं के लिए ये जरूरत से अधिक खर्च कर डालते हैं। होटल, ढाबा, रेस्टोरेंट या इसी प्रकार के उद्योग से इन्हें लाभ हो सकता है। संगति निम्न प्रकार के लोगों से, व्यसनों का आदी, क्रोधी, भाइयों से सुख नहीं, पारिवारिक जीवन मध्य स्तर का, लड़ाकू प्रवृत्ति, संग्राम में सफल, व्यापारी, अधिकांश उम्र मुकदमेबाजी में बीतती है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार या व्यक्तिगत प्रयत्नों में अधिक लाभ, मिलिटरी या पुलिस में भी लाभ, स्वंय भाग्य का निर्माता, बाल्यावस्था साधारण रूप से बीतती है। समय एवं मानव को पहचानने में सक्षम, पारिवारिक जीवन

सामान्य, बुरे चित्त वाला, बुरे कार्यों या गन्दी राजनीति में आनन्दित, हास्य वृत्ति प्रधान ऐसा व्यक्ति चतुर एवं समय को पहचानने वाला, शत्रुओं से काम निकलवाने में प्रवीण, चरित्र की दृष्टि से शिथिल, अधिकारियों से शत्रुता तथा परस्पर वाद-विवाद होता रहता है। बचपन में उसे जलघात होती है तथा [illegible] वें वर्ष में जल में डूबने का खतरा रहता है। [illegible] तथा जहाज पर काम करने वाला हो सकता है। [illegible] दान पुण्य में सहज [illegible] नहीं कहा जा सकता, [illegible] अत्यंत चंचल होती है, [illegible] के अनुसार [illegible] हो सकती है अथवा स्त्रीन का इसे विशेष शौक होता है। [illegible] पुत्रों को उत्पन्न करने वाली ऐसी स्त्री भाग्यवर्धक कही जा सकती है। जातक अधिक [illegible] करता है, नींद में चलने या बकने की बीमारी [illegible] पिछली घटनाओं [illegible] कर दुखी [illegible] आर्थिक [illegible] सम्पन्न ऐसा जातक विदेश में मरता है [illegible] होता है। समय की गम्भीरता को पहचानता है [illegible] बात कहता है। जीवन के 28वें वर्ष से भाग्योदय तथा पूर्ण भाग्योदय 36वें वर्ष से समझना चाहिए। बाल्यावस्था कष्ट [illegible] के लिए जातक को भटकना पड़ता है फिर भी जातक पूर्ण [illegible] प्राप्ति की दिशा में निरन्तर अग्रसर रहता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में इसके पास खूब धन होता है, धन के द्वारा ख्याति अर्जित करता है। इसे सजावट, भोग विलास मय वस्तुओं की ओर विशेष रुचि होती है। फैन्सी स्टोर के व्यापार से जातक लाभ उठा सकता है। नौकरी में जातक शनैः-2 उन्नति करता है। कृषि या भूमि सम्बन्धी कार्यों में भी लाभ। अपने से बड़ों की तथा पिता की आज्ञा करता है तथा आदर करता है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार में अधिक लाभ। समाज, कुल में सम्मान प्राप्त करता

है। भावुक होने के कारण परिवार वालों पर खर्च करता रहता है एवं मित्रता की कसौटी पर खरा उतरता है। लाटरी में धन प्राप्त हो सकता है। ऐसा व्यक्ति दृढ़ निश्चयी एवं धुन का पक्का होता है।
जातक कोमल प्रकृति का, शांत, शिष्ट, मधुरभाषी, संघर्षों से दूर, एकांतप्रिय। व्यापार की अपेक्षा नौकरी में लाभ। कई व्यसन रखते हैं सुचारुपूर्ण ढंग से रहना, अच्छे एवं उज्जवल परिधान पहनना इनका स्वभाव है। सजावट एवं कलात्मक चीजों में रुचि, बाहरी स्थानों से सम्बन्ध, अपने से उच्च वर्ग के लोगों के साथ सम्बन्ध धार्मिक कृत्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा, सामाजिक रूढ़ियों का कट्टरता से पालन [illegible] तथा फिजूलखर्ची से बचाते हैं। ऐसे व्यक्ति सामाजिक क्षेत्र में सफल
(कुण्डली दर्पण से)

कन्या लग्न वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज और बारीक, प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, नर्म स्वभाव, लज्जाशील प्रकृति, नीती के अनुकूल कार्य करने वाले, कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, संवेदनशील, शान्तचित्त, एकांतप्रिय, कठिन परिस्थितियों में स्वयं को ढालने में समर्थ, एक ही समय में अनेक विषयों में पारागत होने की चेष्टा करेंगे, संगीत कला साहित्य में रुचि, एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं रह पाते। बुध-शुक्र का शुभ योग होने से Account, संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर झुकाव तथा सफलता प्राप्त होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में रुचि। बुद्धिमान, तीव्र स्मरण शक्ति, अध्ययनशील प्रकृति। शुभ नग पन्ना। भाग्योन्नति वर्ष २५, ३२, ३५, ३६, ४२वें होंगे। (पाँचांग दिवाकर से)

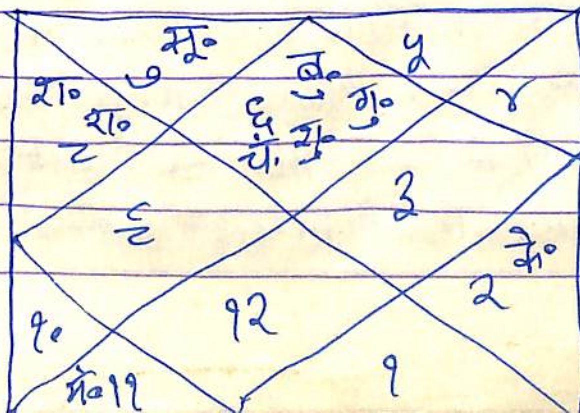
जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र; गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिन्ह [illegible]

को मुख दक्षिण की ओर, उपसूतिकाएं ४ या ५, माता के लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द में रोया हो। आयु के २,४,१५,२३,२५,३५,४५,५६ वें वर्ष विशेष कष्ट। (प्रसूति लग्न विचार से)

निम्न फलादेश कन्या लग्न की स्त्रियों के लिए:- कन्या लग्न हो तो ऐसी स्त्री जितेन्द्रिय, सौभाग्यवती, धर्माचरण करने वाली, समस्त कलाओं में निपुण, सुखी तथा स्वर्ण धन युक्त होती हैं। (स्त्री जातक विज्ञान से)

जातक ज्ञानी, पवित्रात्मा, भले-बुरे को पहचानने वाला, परिश्रमी, शांत स्वभाव, शुद्ध चित्त, गुणवान, धैर्यवान, निर्मोह, प्रेम करे तो दिलोजान से, छोटों से सख्ती का व्यवहार, जिस काम को करना चाहे या जिस पर बिगड़ जाए उसे नहीं छोड़ता। इतिहास, नाटक, चित्रकारी, बाग-बगीचे सम्बन्धी काम करने वाला, सभा में चतुर व मिष्ठभाषी, परिश्रमी पर धन इकट्ठा नहीं होता, बाल्यावस्था में बीमार, प्रौढ़ावस्था सुखी, व्यापार व बैंकादि के काम से लाभ, परदेस में भाग्योदय, संबंधियों व पड़ोसियों से द्वेष, पहली संतान युवावस्था में नष्ट, दो संयोग। आयु के ३,५,१०,१८,३२,४० वें वर्ष कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १६,२१,३५,४१,५०,६२,७०,७५। आयु वर्ष ६०। (कालदर्शक पाँचाग)

नोट, प्रस्तुत कुण्डली एक लड़की की है जिसे पूर्व जन्म का पूरा हाल मालूम था, दस वर्ष की अवस्था में ही वह गूढ़ से गूढ़ विषय पर घंटों प्रवचन दे सकती थी, ढाई वर्ष की आयु में गायत्री मंत्र याद हो गया। पंचम भाव कल्पना तथा स्मरशक्ति का भाव है, इस पर शनि की राशि मकर तथा शनि की दृष्टि भी है, गुरु की दृष्टि है जो उच्च बुध के साथ बैठा है। राहु शनि का संयोग, शनि की दृष्टि ने पूर्व जन्म की बातें याद दिलाईं। बलवान गुरु ने पांडित्य दिया, लग्न में गुरु, चन्द्र के योग ने प्रसिद्धि दिलाई।



तुला लग्न का फलादेश

तुला लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति आदर्श भावना-प्रधान, शीघ्र निर्णय लेने वाला, अपने प्रभाव से दूसरों को मित्र बनाने वाला, रचनात्मक कार्यों में तत्पर, खुलता हुआ गोरा रंग, न अधिक ठिगना न अधिक लम्बा कद, कफ प्रधान प्रकृति, चतुर, सदा मुस्कराते रहने वाले चौड़े चेहरे, तीखी और सुन्दर आँखें, चौड़ी छाती, सुन्दर आकृति, योग्य, कार्यदक्ष, सफल, सामने वाले मनुष्य की थाह पा लेता है। तथा अवसरानुकूल अपने आप को ढाल लेने में प्रवीण। न्याय, दया, क्षमा, शान्ति, अनुशासन की ओर झुकाव। कल्पना शक्ति प्रबल, साधन हीन होने पर भी लक्ष्य सदा ऊँचा, राजनीतिक क्षेत्र में सफल, आर्थिक मामलों में डाँवाडोल, नौकरी की अपेक्षा व्यापार में लाभ, प्रकृति वात प्रधान, जीवन में मित्रों, संबंधियों से भी हानि, व्यापार की योजनाओं में धन लगाना इनके लिए हानिकारक। लघु उद्योगों में लाभ। जातक शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, सुंदर, बलवान। चेहरा सुन्दर, उन्नत ललाट। नौकरी से भाग्योदय, व्यापार हितकर नहीं। जातक पुलिस या मिलिटरी में उच्च पद प्राप्त कर सकता है। बागवानी या बगीचों का स्वामी। नौकरी भी वनस्पति से संबंधित। मित्रों का सहयोग प्राप्त करता है। पत्नी से मतभेद, संतान से जातक को लाभ। जातक स्थिर चित्त वाला होता है, ऊपर से शान्त दिखाई देने पर भी मन में हलचल मची रहती है। गम्भीरता इनका प्रधान गुण है। व्यक्ति व्यर्थ का असत्य भाषण नहीं करेगा। परोपकार करने में प्रसन्नता अनुभव करेगा। प्रसिद्धी भी ऐसे जातकों को शीघ्र मिलती है। कष्ट सहने में माहिर, भयंकर विपत्तियों में भी अडिग। संतान एवं विद्या सुख श्रेष्ठ। पुत्रों से झगडा होता है तथा न्यायालय में भी व्यय होता है। स्त्री से कम बनती है तथा जातक जीवन में रिक्तता अनुभव करता है। जातक की पत्नी क्रोधी

होती है। बात-2 पर हठ करना, रूठना, घर में अशान्ति फैलाना इसका स्वभाव होता है। यद्यपि ऐसी स्त्री गहराई से सोचने का हौसला रखती है फिर भी स्व के स्वार्थ से ऊपर नहीं उठ पाती। आभूषणों से लगाव अत्याधिक होता है। वैवाहिक जीवन मधुर होता है। जातक को अंतिम दिनों में कफ की बीमारी हो जाती है। बलगम के सड़ने या गलने से मृत्यु हो जाती है। रात्रि में दुष्टों से संघर्ष करते या चतुष्पादों के सींगों से घायल होकर भी मृत्यु संभव है। व्यक्ति [illegible] सात्विक, सरल, धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाला, धर्म के मामले में कट्टर न होकर सहिष्णु। सड़ी-गली रूढ़ियों एवं पाखंड का विरोधी। गरीबों के प्रति दया, 26वें वर्ष के भाग्योदय, [illegible] इसका स्वभाव तथा जीवन के प्रत्येक क्षण को [illegible] से देखता है। मध्यकाल में आर्थिक स्थिति [illegible] नौकरों पर इसकी आज्ञा चलती है तथा अपने सम्मान को बनाए रखता है। उच्च विचार, सद्गुणी, शिक्षित, कला-निपुण ऐसा व्यक्ति लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। धार्मिक कार्यों में रुचि, प्याऊ लगाना, कुआ खुदवाना आदि कार्य जिनसे गरीबों का हित हो सके करता है। पाप कार्यों से दूर। अनीतियुक्ति स्वीकार नहीं करता। माता पिता का आदर करने वाला ऐसा जातक श्रम, न्याय, धर्म में विश्वास रखता है। वणिक वृत्ति वाला व्यक्ति। प्रत्येक कार्य को करने से पहले सोचेगा का इस कार्य से मुझे लाभ है या नहीं? नौकरी में उन्नति के अवसर कम, व्यापार में जातक खूब चमकेगा और धनवान बनेगा। इसका स्वभाव मृदु होता है तथा सभी प्रकार के लोगों से सभ्यतापूर्ण ढंग से पेश आता है। रहन सहन सादा होते हुए भी सुचारुपूर्ण। अर्थ का व्यय नहीं करता तथा आमोद प्रमोद को जीवन में महत्व नहीं देता। श्रम के बल पर उन्नति। जातक फल व्यापारी, तुरन्त निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता होती है। आय के नए स्त्रोत ढूंढता है। फिजूलखर्ची ये करते नहीं। न खुद व्यसन

पालते हैं न बच्चों को इस ओर प्रेरित करते हैं। सात्विकता जीवन का ध्येय, मुकदमेबाजी के कारण कई बार कठिनाईयों का सामना पर शत्रु पर विजय प्राप्त करते हैं। जीवन में आकस्मिक खर्चे आ जाते हैं जिनसे आर्थिक स्थिति डगमगा जाती है फिर भी ये अपने आप पर नियन्त्रण रखते हैं। धार्मिक रुढियों का ये कट्टरता से पालन करते हैं। (कुण्डली दर्पण से)

जातक का श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हँसमुख प्रकृति। जातक न्याय प्रिय, हँसमुख, व्यवहार-शील, नीती के अनुसार कार्य करने में कुशल, ईमानदार, मिलनसार, नए-२ मित्र बनाने में कुशल, सौंदर्यानुभूति विशेष होगी। संगीत, कला, नाट्य की ओर झुकाव। रहन सहन का ढंग रईस एवं प्रभावपूर्ण। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। चन्द्र शुक्र शुभ हो तो मानसिक, कल्पना शक्ति प्रबल, परंतु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत हृदय से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश विदेश में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के मौके प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान, तर्कशील, सावधान, सतर्क रहने वाला मध्यस्तता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि के प्रति झुकाव। शुभ नग हीरा या मोती। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ वें वर्ष भाग्योकारक (पाँचांग दिवाकर से)

गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बडी नाक, थोडे बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो, बालक दीर्घ स्वर में रोया। आयु के ३, ५, ८, १५, २७, ३१ वें वर्ष विशेष कष्ट (प्रसूतिलग्न विचार से)

निम्न फलादेश तुला लगन की स्त्रियों के लिए:- तुला लग्न हो तो

तुला 30°

ऐसी स्त्री मतिमन्द, गर्विष्ट क्षमा रहित, प्रीतिहीन तथा पर, नीतीयुक्त होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से।)

जातक नर्म स्वभाव, मीठा बोलने वाला, नीति में निपुण, हर बात में सहायक, संगति का असर बहुत जल्दी, क्षण में क्रोधयुक्त व शान्त, नई बात को जानने और बनाने में तथा जहाज सम्बन्धी कामों में निपुण, मानसिक शक्ति प्रबल पर बहुत देर तक नहीं। जब तक कार्य करता है दिलोजान व मजबूत हृदय से, पर विचार बदलने में भी झट तैयार। अनेक भाई-बहिन। पिता ही इसकी मुसीबत का कारण, संतान-सुखी, वर्ष ८,१५,१८,२३ कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १८,२४,४२,५६,६२। आयु वर्ष ६८
(कालदर्शक पांचांग)

वृश्चिक लग्न का फलादेश।

वृश्चिक लग्न में जन्म लेने वाले जातक पुरुष तत्व प्रधान होते हैं। तथा दूसरों को पीछे छोडने में आनन्द अनुभव करते हैं। अस्थिर प्रकृति, आकर्षक व्यक्तित्व, मँझला कद, गठीला शरीर, विशाल मस्तिष्क, दीप्त ललाट, छितरे काले बाल, उभरी हुई ठोढी, चमकती आँखें होती हैं। इनका व्यक्तित्व सहज ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। चुम्बकीय और सम्मोहक व्यक्तित्व का धनी ऐसा जातक लोकप्रिय होता है। प्रेम के क्षेत्र में अग्रणी, विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रख पाते और बिना परीक्षा लिए दूसरों पर विश्वास कर लेते हैं। स्वार्थ सिद्ध होने तक दुश्मन को कंधे पर बिठाने से कभी नहीं हिचकिचाते, परन्तु कार्य के बाद उसे पैरों तले रौंदने में भी देर नहीं लगाते। राजनीति के क्षेत्र में पूर्णतः सफल। स्वभाव उग्र, जरा सी विपरीत बात होने से भडक उठते हैं। जान पहचान विस्तृत होती है तथा दुश्मनों तक से काम निकलवाने में चतुर। लेखन कार्य में सफल हो सकते हैं परंतु शारीरिक झंझटों एवं आलस्य के कारण नित्य लेखन नहीं कर पाते। धन को संचय करने की कला नहीं इन्हें आती, फिर भी इनके पास धन का अभाव नहीं होता। हीनभावना प्रबल होने के कारण ईश्वर अराधना का दिखावा करते हैं। जातक धन के मामले में लापरवाह, साझेदारी या किसी के साथ व्यापार इनके लिए हानिकारक। सहयोगी इसे धोखा देगा। जीवन में कई बार धोखे खाते हैं। इन्हें चाहिए कि ये किसी भी कागज पर हस्ताक्षर करने से पहले सोच लें। यदि जातक नौकरी करता है तो उसे नौकरी में काफी उतार चढाव देखने पडेंगे। २४, २७, २८, ३२, ३३, ३४, ३७, ४२, ४८, ५२, ५४, ५५, ५८वाँ वर्ष जातक का शारीरिक गठन सुन्दर, सुन्दर श्याम केश, उन्नत ललाट, गौर वर्ण, प्रभावपूर्ण चेहरा होता है। संतान की दृष्टि से

जातक सौभाग्यशाली, मित्रों में ख्याति तथा धार्मिक कार्यों में श्रद्धा रखता है। जातक स्त्री के मामले में सौभाग्यशाली, सुंदर एवं शिक्षित पत्नी मिलती है, जातक को ससुराल से धन प्राप्त होता है भाग्योदय विवाहोपरंत होता है। पारिवारिक जीवन सफल होता है। पत्नी सुशील होती है। पत्नी जातक का जीवन बनाने में सहायक आर्थिक दृष्टि से साधारण, आय की अपेक्षा व्यय अधिक। जातक कामुक प्रकृति का होता है, ऐश-आराम में विश्वास रखता है। जातक स्त्रियों में विशेष लोकप्रिय होता है। स्वभाव से जातक भावुक, हर समय मुस्कुराहट बिखेरने वाला तथा सौम्याकृति का होता है। संतान-सुख मध्यम रहता है तथा स्त्री के विचारों से मतभेद बने रहने के कारण पारिवारिक कलह भी संभव होती है। वृद्धावस्था सफल। जातक का स्वभाव दुष्टतापूर्ण होता है। यद्यपि वह परिश्रमी होता है फिर भी चुगली खाना, अफसरों के कान भरना उसका स्वभाव होता है। जातक की स्त्री सुन्दर, गुणवान, नाक-नक्श तीखे और रूप पर गुमान करने वाली होती है। वार्तालाप करने में मधुर एवं पटुभाषी होती है। कलादि में निपुण होती है। सिलाई, कसीदा, चित्रकला, नृत्य में उसकी रुचि होती है। उसे नित नये-२ व्यंजन बनाने का भी शौक होता है। ऐसी स्त्री भावुक, कामकला में प्रवीण, पतिवल्लभा होती है। जातक शत्रुओं से संघर्ष करते हुए मारा जाता है। मृत्यु के समय ऐसे व्यक्ति को गुदरोग या प्रमेह रोग भी संभव है। जातक भावुक, कल्पनाप्रिय होता है। यह जातक सफल शिक्षक, प्रकाशक, लेखक, पत्रकार हो सकता है। व्रतोत्सव आदि में जातक गहरी रुचि लेता है। चाहते हुए भी सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ नहीं सकता। बचपन में पेट सम्बन्धी बीमारी सम्भव है। वायु प्रकोप जीवन भर बना रहता है। अस्थिरता, चंचलता, तुरन्त निर्णय न लेने के कारण कई बार हानि भी उठा लेता है। यह जातक जो भी कार्य करना चाहता है उसे सोचने में अधिक समय लगा देता है। जीवन के मध्यकाल में कोई आघात

चढाव सहने पडते हैं तथा हानि भी हो जाती है। जातक अपने जीवन को सफल बनाने की भरसक कोशिश करता है। जातक को माता का अल्प सुख प्राप्त होता है, इसके साथ ही आजीविका के लिए उसे कठोर परिश्रम व संघर्ष करना पडता है। वाहन-सुख स्वल्प होता है तथा भूमि संबंधी कार्यों में जातक को लाभ नहीं होता। शिकार का यह शौकीन होता है तथा राजनीति पूर्ण जीवन बिताने में रुचि होती है। यह पूर्ण परिश्रमी होता है पर परिवार में इसे नहीं के बराबर सहायता मिलती है। जातक मेहनती होने के साथ दूरदर्शी। वह जो भी कार्य करता है खूब सोच-बिचार कर करता है। राजनीतिक कार्यों में लाभ, तुरन्त निर्णय लेने की शक्ति रखता है। ये आय बढाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। परिवार तथा भाईयों से जातक को लाभ नहीं होती, अपितु यह अपने परिवार का पूर्ण सहायक होता है। जीवन निर्वाह, जीवन की आवश्यकताऐं पूरी हो जाती हैं। जातक श्रम पर पूरा विश्वास रखते हैं तथा श्रम के बल पर प्रगति करते हैं। माता-पिता का बहुत कम सुख इन्हें मिल पाता है। इनका बचपन अत्यंत कष्टों एवं अभावों में बीतता है। ये अपना कार्य आप करते हैं। सभी प्रकार के लोगों से ये खुलकर मिलते हैं, जीवन में मित्रों से लाभ उठाते हैं। एक बार जो इनके सम्पर्क में आ जाए वह इनका हो जाता है। खर्च पर इनका नियन्त्रण नहीं रहता। यद्यपि आय के कई स्तोत्र इनके पास होते हैं, फिर भी इनकी आर्थिक स्थिति डॉवाडोल रहती है। सजावट, भव्यता, दिखावा आदि में ये विश्वास रखते हैं। उच्च स्तर के कपडे पहनते हैं। जीवन में मनोरंजन कार्यों पर भी व्यय करते हैं। स्त्रियों के संपर्क से ये बदनाम भी हो जाते हैं। आँखे कमजोर होती हैं तथा ऐसे जातक व्यापार की अपेक्षा नौकरी में अधिक सफल होते हैं। धार्मिक कृत्यों में विश्वास रखते हैं। (कुण्डली दर्पण से)

जातक का सुन्दर मुख, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति। मंगल शुभ हो तो उत्साही, उदार परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार कुशल, कर्तव्यनिष्ठ, दृढ संकल्प शक्ति वाला, भाई-बंधु से कम सहायता प्राप्त, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही आय। तनिक विरुद्ध बात हो जाने से शीघ्र उत्तेजित हो जाऐंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेगा। जातक किसी कार्य को करने का निश्चय करता है तो उसे पूर्ण करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्ता के क्षेत्र में सफलता। शुभ नग मूँगा। शुभ रंग लाल, संतरी, हल्का पीला (PINK) है। आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४ वें वर्ष भाग्योन्नतिकारक। (पाँचाँग दिवाकर से)

ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण, भूरे नेत्र, तेज स्वभाव, केश लम्बे। उपसूतिका ऐंर या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहने हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २, ६, ११, २७, ५८ वें वर्ष विशेष कष्ट। (प्रसूति लग्न विचार से)

निम्न फलादेश वृश्चिक लग्न की स्त्रियों के लिए:- वृश्चिक लग्न हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर, रुपवान, गुणवान, पुण्यशीला, पतिव्रता, सत्यवादिनी होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से)

जातक अत्यंत ज्ञानी या अत्यंत मूर्ख, ईर्ष्या द्वेष अहंकार युक्त, बड़े-२ कार्य करने में देवता के समान, शूरवीर, लड़ाई में तत्पर, हरेक कार्य में अत्यंतता करने से बीमार, आत्मिक शक्ति बलवान व स्थायी, हर काम के रहस्य को जानकर उसकी कमजोरियां दूर करता है, अग्नि के समान प्रचंड प्रकृति, गंवारों जैसा व्यवहार, सत्यवक्ता, मयर हित, धन सम्बन्धी चिंता, मध्यावस्था में भाग्योदय, दूसरे देश की यात्रा करता है। ससुराल व कानूनी कामों से लाभ, अचानक धन मिलने की संभावना, भाई

बहिन कम, पिता की एक ही संतान रह जाती है। संतान बहुत होने पर भी सुख नहीं, सम्बन्धियों का सहायक, एक से अधिक विवाह, गुप्त रोगी। आयु के २,५,१०,१२,१८,२०,३०वें वर्ष कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १४,२०,२५,३५, ३८,४५,५६,६४। आयु वर्ष ८५ (कालदर्शक पाँचाग)

धनु लग्न का फलादेश

धनु लग्न में जन्म लेने वाला जातक अधिकांशत: दार्शनिक विचारों से धनी, ईश्वर में इनकी दृढ आस्था होती है, दूसरों पर तुरन्त विश्वास कर लेते हैं। शारीरिक गठन सुन्दर और सजीला, गोल और आकर्षक चेहरा, श्याम पीत केश, पैनी और खिलती हुई आँखें, सम्मोहक मुस्कुराहट, शरीर साधारणत: स्थूल। निरन्तर परिश्रमरत ऐसे जातक वाणिक वृत्ति प्रधान होते हैं तथा प्रत्येक कार्य में अपना भला- बुरा पहले सोचते हैं। ऐसे जातक सात्विक वृत्ति प्रधान होते हैं। व्यर्थ का फैशन, दिखावा, अपव्यय से दूर रहते हैं। जीवन में सत्य, न्याय, ईमानदारी, दयालुता और स्वतंत्रता को महत्त्व देते हैं। जातक सौभाग्यशाली होता है। ये लम्बे चौडे प्लान बनाते हैं और उसमें सफलता भी प्राप्त करते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यापार या स्वतंत्र व्यवसाय इनके लिए हितकारी। जातक को चाहिए कि वे 'योजना औयोग' आदि में नौकरी करें जिसमें कल्पना और वास्तविकता का सुखद मिश्रण हो। खान, पत्थर का कार्य से भी ये लाभ उठा सकते हैं। जातक गम्भीर स्वभाव का होता है, भाइयों से उसे स्नेह मिलता है पर सहायता नहीं प्राप्त होती। समाज में उसका आदर होता है। नये विचारों का स्वागत करने वाला ऐसा जातक गायन, कलादि में रुचि रखने वाला होता है। जातक नौका चालक या जहाज का कप्तान होता है। या जल से सम्बन्धित सरकारी नौकरी करता है। धीर-गम्भीर होने के साथ-२ जातक शिक्षित भी होता है तथा अपने सद्गुणों के कारण समाज में सम्मान प्राप्त करता है। जातक धनवान होता है। इसे अपने जीवन में पूर्ण सुखभोग की सामग्री उपलब्ध होती है। जातक धार्मिक होता है। जातक को पूर्ण जीवन सुखी कहा जा सकता है। जातक क्रोधी होने के साथ-२ विवेकहीन होता है। कई बार उतावली में ऐसे कार्य कर डालता है जिसके कारण आगे चलकर

पछताना पडता है। घर में पति पत्नी एक मत नहीं हो पाते और
पुत्रों के विचारों से उसकी असमानता रहती है। ऐसे व्यक्तियों का
चित्त अस्थिर रहता है तथा किसी भी प्रश्न पर ये तुरन्त निर्णय नहीं
दे पाते। जातक की संतान विद्रोही होती है। उसके तथा उसकी पत्नी
के विचारों में असमानता रहती है तथा वह दुखी हृदय घूमता रहता है
जातक की पत्नी सुशील एवं समझदार होती है यद्यपि वह सुन्दर
नहीं कही जा सकती, फिर भी नाक नक्श उभरे और स्वच्छ होने
के कारण आकर्षक अवश्य कही जा सकती है। जातक का ससुराल
मध्यवर्ग का होता है। उच्च विचारों वाली ऐसी स्त्री जातक के लिए
सौभाग्यशाली सिद्ध होती है। सुन्दर कपडे पहनती है तथा अपने
आप को सुंदर दिखाती है। सभी गुणों से युक्त ऐसी स्त्री सफल कही
जा सकती है पर अतृप्त इच्छा रखते हुऐ ऐसी स्त्री कामकला में
कठोर होती है। जातक जल में डूबने से मरता है या स्वगृह में
शान्ति से मृत्यु लाभ करता है। जातक धर्म का विरोधी होती है।
धार्मिक कट्टरता का विपक्षी यह जातक मानवधर्म में ही श्रद्धा
रखता है। धर्म के दुर्बल पक्ष पर बहस करना इसका स्वभाव होता
है। भाग्य इसका साथ देता है, पर इसकी प्रत्येक कार्य- सिद्धि के
बीच में व्याधान आता है। ऐसा व्यक्ति चाहते हुऐ भी अपने अधिका-
-रियों को संतुष्ट नहीं कर पाता। जातक का समाज में सम्मान
होता है। यह जातक कठोर परिश्रमी होता है। पूर्वार्द्ध की अपेक्षा
उत्तरार्द्ध अधिक सफल, यात्रा इसका प्रिय विषय होता है। जातक
स्वाभिमानी, अपनी आन पर मर मिटने वाला होता है। चापलूसी
इसे पसंद नहीं और दूसरों की हाँ में हाँ मिलाना यह बुरा समझता
है। उदासीन वृत्ति से तथा नौकरी को गम्भीरता से न लेने के कारण
इसकी प्रगति धीरे-२ होती है। नौकरी के अपेक्षा व्यापार अधिक
लाभदायक। स्त्री से अनबन। यद्यपि यह धीरे-२ उच्च पद पर
पहुँच जाता है, फिर भी उससे धन संचय नहीं होता। समाज
इसके कार्यों की आलोचना करता है तथा कुल से इसे कोई लाभ नहीं

मिलता। जातक धीर, गम्भीर, अवसर की उचितानुचित को समझने वाला, नाजुक क्षणों में अद्भुत प्रतिभा दिखाने वाला होता है। परिवार एवं स्वजन इसके सहायक होते हैं तथा उन्नति में वे सहयोग भी देते हैं। व्यक्ति धार्मिक कार्यों में विश्वास रखते हैं। व्यापार में की अपेक्षा नौकरी या स्वतंत्र कार्यों में प्रगति करते हैं। लेखन-प्रकाशन आदि में निश्चय ही चमकते हैं। बचपन सुखमय, जीवन के १६ वें वर्ष के बाद संघर्षशील क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं। यौवनावस्था पूर्णतः संघर्षशील। व्यापार में कई उतार-चढाव देखने पडते हैं। नौकरी करने पर जातक की प्रगति शनैः-शनैः होती है। फिजूलखर्ची तथा व्यसनों से दूर रहते हैं। संयत जीवन जीना ही इनका ध्येय होता है। बाहरी स्थानों से इनका विशेष सम्बन्ध होता है तथा जीवन में कई बार तीर्थयात्रा करते हैं। (कुण्डली दर्पण से)

जातक का ऊँचा मस्तक, कान बडे, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा। गुरु-बुध की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा दयालु, दूसरों की थाह पा लेने वाला, बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति प्रबल, उत्साही, ये शीघ्र निर्णय नहीं ले पाते। इन्हें क्रोध जल्दी नहीं आता एवं क्रोध आ जाए तो उतरता भी नहीं। पुरुषार्थी, साहसी, सुखों को प्राप्त करने वाला होता है। मंगल-गुरु शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या का योग। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीती, वैद्य डाक्टर, वकील, पुस्तकालय व्यवसाय में सफल। शुभ नग पुखराज। भाग्योदय वर्ष २३, २७, ३२, ३६ वें होंगे। (पाँचांग दिवाकर से)

जातक का रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बडे नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र, पकवान्न भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर पूर्व

की ओर होगा। उपस्तुतिकाऐं १ या ५, बालक दीर्घ स्वर से रोया हो। वर्ष के १,३,१०,१८,२१,३७,४२ वें वर्ष कष्टकारी। (प्रसूति लग्न विचार से)

निम्न फलादेश धनु लग्न की स्त्रियों के लिए:- धनु लग्न की स्त्री उत्तम बुद्धि वाली, कठोर कर्म करने वाली, स्नेही, प्रेम से वश में होने वाली होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

जातक की दो प्रकार की प्रकृति, नियमों का पालन या उल्लंघन करने में तत्पर, गुप्त रहस्यों का जानकार, विश्वासपात्र, दानी, सत्यवक्ता, निष्काम कार्य, दिमागी काम। पहली अवस्था में पितृ सुखकम, पिता की विपत्ति के कारण भाग्योदय नहीं होता, कई प्रकार की विद्या का ज्ञाता, स्वतंत्र रुचि, किसी पर विश्वास न करने वाला, शांत स्वभाव, परिश्रम से धन कमाता है, भाई कम, संबंधियों से प्रेम, संतान कम, दुश्मन अधिक, देवताओं व ब्राह्मणों का सेवक, यात्रा अधिक। आयु के ८,१२,१५,२६,३८,४० वें वर्ष कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष २०,२५,३८,४४,६६,७०,७२। आयु वर्ष ७५ (कालदर्शक पाँचाग)

मकर लग्न का फलादेश

मकर लग्न के जातक रहस्यमय होते हैं तथा इसका कोई भी कार्य निश्चित नहीं होता, अपने उद्देश्यों के प्रति यह सचेत रहता है तथा ऊँची-२ योजनाऐं बनाने में सदा तैयार रहता है। लम्बा, ऊँचा, रक्त गौर वर्ण और कड़े केशों वाला यह जातक चपटी नाक, बड़ा सिर, पैनी आँखों का धनी होता है। शरीर से ये पतले और फुर्तीले होते हैं। इनका स्वभाव उग्र होता है, परन्तु जहाँ अपना पक्ष कमजोर पड़ता है वहाँ से नम्र भी हो जाते हैं कमाते हैं पर पैसा इनके पास टिकता नहीं। दिखावे और शान-शौकत में ये अपव्यय कर डालते हैं। इनका दाम्पत्य जीवन मधुर नहीं होता। पति-पत्नी के विचारों में मतभेद बने रहते हैं। व्यापारिक कार्यों में इनकी रुचि होती है, पर उसमें ये सफल नहीं हो पाते। हीन भावना से ग्रस्त होते हैं, बहुत अधिक बोलते हैं। वाक् शक्ति पर इनका नियन्त्रण नहीं रहता। ये अच्छे अभिनेता होते हैं तथा क्षण में रूप बदलने में पारंगत होते हैं। स्वार्थ की भावना विशेष होती है। जातक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, एक से अधिक आय के स्तोत्र। पत्रकारिता, लेखन, प्रकाशन, व्यापार, राजनीति कार्यों में भी ये भाग लेकर द्रव्य संचय कर सकते हैं। इन जातकों को भाइयों तथा सम्बन्धियों से विशेष लाभ नहीं मिलता। विश्वास करना इनके लिए हानिकारक सिद्ध होता है। साझेदारी लाभप्रद। जीवन के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध आर्थिक दृष्टि से सफल। जातक धनवान होता है। संतान से उसे विशेष स्नेह मिलता है। वृद्धावस्था में उसे पुत्रों से पूर्ण सहायता प्राप्त होती है। धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, अतिथियों का आदर करने वाला ऐसा जातक सभी को प्रसन्न रखने वाला होता है। जातक के घर में जानवर बँधे रहते हैं। इस प्रकार के जातक की या तो सगाई होकर छूट जाती है, या जीवन में एक से अधिक स्त्रियाँ

के साथ सम्बन्ध। जीवन सुखी, शान्तमय तथा विविध भोगों का जातक भोग करता है। व्यापार, कृषिकार्यों में जातक को लाभ। पारिवारिक जीवन सुखी, वृद्धावस्था में पूर्ण संतान सुख। जातक

मनुष्य सहज ही धन प्राप्त कर डालता है। द्रव्योपार्जन में वह विशेष संलग्न रहता है। कई बार लाटरी या जुऐ से भी धनलाभ हो जाता है। ऐसी व्यक्ति की स्त्री सुंदर, सौभाग्यशाली होती है पर सारी चिंता इसे भोगनी पडती है। संतान या तो देरी से होती है अथवा संतान से उसे त्रास मिलती है। संतान दुर्बल या मलिन स्वभाव की होती है। ऐसे व्यक्ति क्षमावान, धैर्यवान, सहिष्णु, समझदार होते हैं। जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण होता है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार की ओर झुकाव अधिक होता है। आर्थिक दृष्टि से बार-२ हानि उठाता है। जातक की स्त्री अत्यंत सुंदर होती है। लम्बी छरहरी तीखे नैन नक्श वाली तथा सुन्दर मधुर स्वभाववाली ऐसी स्त्री सहज ही सबका मन मोह लेती है। यह स्त्री अत्यंत भावुक होती है। कठोरता अथवा रुखे मन से इसे वश में नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत भावनाओं के द्वारा इसे नियन्त्रण में लाया जा सकता है। सरल चित की ऐसी स्त्री कल्पना प्रिय होती है तथा हवा में महल बनाना इसका स्वभाव होता है। जीवन की कठोर वास्तविकताओं को भी नहीं झेल पाती। आभूषणों से अत्यंत प्रेम करने वाली, सुन्दर वस्त्रों की इच्छा वाली यह स्त्री सौभाग्यशालिनी होती है। सर्प के काटने से मृत्यु संभव है। चोरों से संघर्ष करते हुऐ या हिंसक पशु के शिकार में भी मृत्यु संभव है। जातक बिल्ली सी प्रकृति से युक्त होता है। अपने परिवार, पुत्र, पत्नी से प्रेम रखता है। भाग्य निरन्तर इससे छल करता रहता है तथा यह जीवन में

कई उतार- चढाव देखता है। अन्याय एवं पक्षपात का प्रबल विरोधी होता है। लोगों से वाहवाही लूटना इसका ध्येय होता है।

जरूरत से ज्यादा प्रदर्शन कर अपने आप को तैयार उच्च एवं धनी बताने का प्रयत्न करता है जबकि वास्तविकता इसके विपरीत होती है। वृद्धावस्था में पोते- पोतियों का पूर्ण सुख भोगता है। इसका भाग्योदय 28 वें वर्ष के बाद होता है। जातक की प्रवृत्ति व्यापार में रमती है और भाग्योदय भी व्यापार से ही होता है। नौकरी में उन्नति के अवसर कम रहते हैं। यदि जातक नौकरी करता है तो उसे वह सब प्राप्त नहीं होता, जिसका यह हकदार है। व्यक्ति बात का धनी, पिता का आज्ञाकारी। यौवनावस्था सफल, एक साथ कई कार्य करने में निपुण, भूमि या भूमि संबंधी कार्यों पर व्यय, कृषि में लाभ, समय पर सही चोट करने में निपुण। ऐसा व्यक्ति ध्यानपूर्वक भाव प्रकट करता है। जातक तुरन्त निर्णय लेने वाला, परिस्थिति को गंभीरता से समझने वाला, समय के अनुसार चलने वाला, वातावरण को पहचानने वाला, जीवन को ढाल लेता है जैसा समय और स्थिति हो। कई प्रकार के व्यसनों से युक्त, अत्याधिक मित्र, आय की अपेक्षा व्यय अधिक। आर्थिक स्थिति में उतार चढाव पर नियन्त्रण रख लेते हैं। लोकप्रिय, जीवन में इसकी समस्त आवश्यकताऐं पूरी हो जाती हैं। (कुण्डली दर्पण से)

जातक का मध्यम कद, तीखे नैन-नक्श, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल, पतली कमर, जातक गम्भीर, भावुक, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील, धार्मिक। बुध-शुक्र शुभ होने पर व्यवहार कुशल, गहरे विश्लेषण के पश्चात निर्णय लेने वाला। क्षमा नहीं करते, बदला लेना नहीं भूलते, जातक की मानसिक, आत्मिक शक्ति प्रबल। गुरु- शनि शुभ हो तो जातक विनम्र विनयशील, व्यवहार

कुशल, नीतिवान, तर्कशील, भले बुरे को पहचानने में कुशल, विश्वसनीय, मित्र बनाने में सावधान, ईमानदार, ~~कर्क~~ जातक तर्क वितर्क करने में कुशल, खाँसी तथा वायु रोग। शुभ नग नीलम, भाग्योन्तिकारक वर्ष २२,२४,२८,३२वें होंगे। (पॉचाग दिवाकर)

जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक, ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला-नीला वस्त्र, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, उपसूतिकाऐं ३ या ४, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक थोड़ा रोया। शनि का विशेष प्रभाव। वर्ष के १,३,१०,१८,२१,३७,४२वें वर्ष विशेष कष्ट (प्रसूति लग्न विचार)

निम्न फलादेश मकर लग्न की स्त्रियों के लिए ÷ मकर लग्न हो तो स्त्री गुणवती, सत्यवादिनी, सुन्दर, रुपवति, अच्छे कर्म करने वाली, प्रतिष्ठित शत्रुहन्ता होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक का सेवा करना धर्म, जिस कार्य में रुचि उसे दृढ़ता व शांति से करते हैं, परिश्रमी, कभी मलिन चित्त व ईर्ष्या द्वेष से युक्त हो जाते हैं। किसी समय शूरवीरता से बड़े काम को भी कर लेते हैं। चलना-फिरना कुछ अजीब व चतुर, परंतु कभी-२ बोलते हुऐ वाणी में रुकावट हो जाती है, संशयात्मक बुद्धि, उदासीन, मित्रों में स्वतंत्र व दूसरे पुरुषों में लज्जायुक्त, शत्रु को क्षमा करना, हरेक काम सोच-समझकर करते हैं। व्यापार से धन प्राप्त, भाई-बहिनों व पिता से सुख नहीं, कई विवाह परंतु विवाह के समय अड़चनें। स्त्री प्रसङ्ग, संतान थोड़ी होती है, खाँसी व वायु रोग, महत्वपूर्ण वर्ष १८,२२,३२,४०, पूरा आयु वर्ष ८८। (काल दर्शक पॉचाग)

मकर

कुम्भ लग्न का फलादेश।

कुम्भ लग्न दार्शनिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। जातक शिक्षित, सभ्य, शांत, कुलीन, विचारों का धनी, दूसरों की सहायता करने में सदा तत्पर, सेवा-सहानुभूति इनके जीवन का उद्देश्य, तीव्र स्मरणशक्ति, कद लम्बा, हृष्ट पुष्ट, प्रभावयुक्त चेहरा होता है। सरल स्वभाव के ये जातक प्रत्येक विचार में नवीन युक्ति प्रस्तुत करते हैं। खरी-2 कह देने में हिचकिचाहट नहीं महसूस करते। इनकी उन्नति और अवनति अप्रत्याशित, जीवन बाधाओं से युक्त, कठिन से कठिन संघर्षों में उलझना इनका स्वभाव, दाम्पत्य जीवन साधारण, वृद्धावस्था में पेट और छाती सम्बन्धी बीमारी। यदि जातक अपने विचारों तथा भावनाओं पर नियन्त्रण रख सकें तो निस्संदेह सफल धनी। इस प्रकार का जातक डॉक्टरी, वैद्यक, दवाईयों का विक्रेता बनकर धनी हो सकता है। यदि ये वे व्यक्ति शेयर खरीदें या लघु उद्योग में रुपया लगाएं, तो भी लाभ है। अधिक स्तोत्रों से अर्थ लाभ, खर्च पर पूर्ण नियन्त्रण, धन के पीछे भूत की तरह लगे रहते हैं। इनके जीवन में शांति नहीं रहती। तुरन्त निर्णय लेने में असफल, अतः कई बार हानि उठानी पड़ती है। २२, २४, २८, ३२, ३३, ३४, ३७, ४२, ४८, ५२, ५४, ५५, ६० वाँ साल आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण। जातक बल विक्रम में धनी, मांसल भुजाएं, बलिष्ठ कंधे, उत्तम साहस वाला होता है। भुजबल से यश लाभ करता है, दूसरों की भलाई करने वाला, कई प्रकार की कलाएं जानने वाला एवं धन संचय करने वाला होता है। जातक की समाज में इज्जत, सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़कर भाग लेता है। साहस, धीरता, गम्भीरता में जातक अग्रणी, स्वस्थ सुदृढ़ शरीर, सुन्दर रूप, गुण। धार्मिक, व्रतोत्सव आदि धूम धाम से मनाता है। शिव की पूजा से जातक को विशेष लाभ, पारिवारिक जीवन सुखी, वृद्धावस्था में पूर्ण संतान सुख मिलता है। जातक को पूर्ण संतान सुख। जातक दृढ़, साहसी,

कुम्भ

मजबूत होता है पर विचारों में अस्थिरता रहती है। वह किसी भी एक कार्य पर काफी समय तक विचार नहीं कर सकते। इन्हें क्रोध जल्दी आता है, पर क्रोध शीघ्र ही शान्त हो जाता है। विद्या योग उन्नत। ऐसे व्यक्तियों के शिक्षा काल में कई प्रकार की बाधाएं आ जाती हैं। जातक पुत्रों से अत्याधिक प्रेम करने के कारण दूसरों से अकारण झगडा मोल लेता है। न तो वह स्वंय आराम करता है न ही अपने अधीनस्थ संबंधियों या कर्मचारियों को आराम करने देता है। जातक की पत्नी क्रोधी स्वभाव की, तुनक मिजाज। जरा सा कार्य यदि उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं होता तो वह रुठ जाती है, कलह करती है तथा घर के वातावरण को विषासक्त बना देती है। न इसे शृंगार करने का चाव होता है न अपने आप को सजा पाती है। मित्रों की पार्टियों में एकरस-सी न होकर, अलग-२ सी दिखाई देती है। ऐसी औरत साहसी होती है तथा विपत्ति के समय भी धैर्य को अक्षुण बनाए रखती है। धन का मोह होता है, आभूषणप्रियता इसका स्वभाव, मानव मन को परखने में प्रवीण, समय के अनुरुप अपने आप को ढालने में चतुर होती है। मस्तिष्क से स्वस्थ, बुद्धिमान। यदि अष्टमेश षष्टस्थान गत हो तो सुजाक रोग से ग्रस्त होता है तथा व्याधि पीडा से मरता है। स्त्री की हत्या तथा विषपान की भी आशंका रहती है। मृत्यु स्वगृह में होती है। जातक धर्मभीरु होता है तथा प्रत्येक कार्य करने से हिचकिचाता है जो अन्याय हो या फिर जिस कार्य को समाज में मान्यता न मिलती हो।

बाल्यावस्था में इसे काफी परेशानियाँ देखनी पडती हैं। इसकी प्रगति धीरे-२ होती है। शिक्षण काल में भी कई व्यवधान आते हैं। या तो इसे सभी प्रकार की डिवीजन मिलती है या फिर रुक रुकर पढाई होती है। भोग विलास का इच्छुक, नौकरी की अपेक्षा व्यापार में लाभ एवं भाग्योदय शीघ्र। नेतृत्व कार्यों में जातक अग्रणी, यात्राएं इसके भाग्य में होती हैं।

घुमक्कड़ जीवन बिताने का इच्छुक होता है। ससुराल से धन-प्राप्ति संभव है। २४वें वर्ष के बाद भाग्योदय, मनुष्य सद्‌गुणों से अलंकृत गरीबों का सहायक। यद्यपि परिस्थितियाँ इसके प्रतिकूल रहती हैं फिर भी यह अपने सौम्य व्यवहार एवं नीति से वातावरण को अनुकूल बनाने में समर्थ रहता है। धार्मिक कार्यों में गहरी रुचि, नौकरी में उन्नति करता है तथा जीवन निर्वाह के लिए कठोर श्रम करता रहता है। जातक व्यापार में प्रगति करता है। नौकरी में उन्नति के अवसर कम। अफसरों से जान पहचान होती है जिससे शनैः-२ प्रगति करता रहता है। हँसमुख, मिलनसार, तीक्ष्ण बुद्धि, वह बात का धनी। आमदनी के कई स्तोत्र होते हैं। जीवन का एक ही ध्येय कि आमदनी में विस्तार किया जाए। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने पर भी यह बचत कर लेता है। आवश्यकताऐं सीमीत होती हैं तथा वे पूरी भी हो जाती हैं। (कुण्डली दर्पण से)

शनि शुभ हो तो जातक मध्यम या ऊँचा कद, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्व, बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति, गम्भीर, दयालु, परोपकारी, मित्रों व सम्बन्धियों का सहायक, व्यवहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी, निस्वार्थी, स्वाभिमानी, स्वतंत्रता प्रिय, नए-२ मित्र बनाने का इच्छुक, उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी, प्रबन्धात्मक, देश-विदेश में जाने के अवसर प्राप्त होंगे, महत्त्वकांक्षी, क्रियात्मक दृष्टिकोण, निर्धन होते हुए भी उच्च पद प्राप्त करने में सफल। यदि गुरु शुभ हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय विक्रय, प्रोफैसर, जज वकील अथवा उच्च एवं धनी व्यापारी होंगे, आर्थिक मामलों में कठिनाइयाँ। शुभ नग नीलम। स्त्रियों के लिए पुखराज। शुभ वर्ष २५, २८, ३६, ४२, ४५ वें होंगे। (पाँचाँग दिवाकर से)

बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, मोटे होंठ, वात पित्त प्रकृति, श्वेत श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, उपस्तिकाऐं ३ या ५, शाकादि का भोजन किया हो,

कुम्भ

माता को शरीरकष्ट, पिता घर में न हो, बालकने रुदन किया हो। आयु के २,४,१३,२८,३३,४२,५८,२४ वें वर्ष विशेष कष्ट। शनि का विशेष प्रभाव (प्रसूति लग्न विचार)

निम्न फलादेश कुम्भ लग्न की स्त्रियों के लिए :- कुम्भ लग्न हो तो स्त्री कृतज्ञता रहित, रक्तदोष एवं अभिमानी, खर्चीली, पर-पुरुष पर आसक्ति रखने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक साहित्यकला, कौशल, दर्शनों के गुप्त का शौकीन, लेखक, वक्ता, प्रेमी, वृद्धावस्था तक पत्नी से प्रेम, एकांत सेवी, लोगों से मेल जोल कम, अच्छे मित्र, इच्छा शक्ति प्रबल, दौलत हासिल करने में उद्यम के बावजूद असफल। कई गुप्त दुश्मन। परिवारसे धन सहायता तथा मित्रोंसे मरतबे की सहायता इसके दुख का कारण। रुपए के खातिर यात्राऐं, संबंधीया भाई कारोबार में कष्ट का कारण, अकादमी गुप्त। फौजी में गुप्तचर, भाई-बहन कम, कई बार भाई के साथ झगडा। पिता का जल्दी देहांत। संतान सुखकम खासकर पहली, शादी खानदानी स्त्री या गवैया स्त्री से, सबन्ध कालाभ, स्त्री शिक्षक, वृश्चिक राशि वालोंसे दुखी। वर्ष ६,११,१८,२५,३६,४० कष्ट। महत्तवपूर्ण वर्ष १८,२३,३७,४८,५२,६४,७२। आयु वर्ष ६५ (कालदर्शक पांचांग)

मीन लग्न का फलादेश।

मीन लग्न में जन्म लेने वाले जातक श्रद्धालु, आस्तिक, मेहनती, सामाजिक रुढियों का पालन करने वाले, बातचीत में प्रवीण, समझदार, मध्यम कद, घुँघराले केश, उन्नत नासिका, छोटे-२ दाँत, पैनी आँखे, भव्य आकृति, सहिष्णु। यदि इनका साथ कोई बुराई करता है तो वे प्रत्युत्तर भलाई करते हैं। अधिकतर ये अपने आप में ही केन्द्रित रहते हैं। पारिवारिक जीवन पूर्ण सुखी, लेखक, संगीत, नाटक आदि में रुचि; आर्थिक मामले में पिछड़े रहते हैं। धन इनके पास आता है पर टिकता नहीं। दोनों हाथों से खर्च करते हैं। भरपूर आत्म विश्वास तथा जीवन में ये अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं। आर्थिक मामलों में बड़े अनिश्चित। जातक किसी समय अच्छे धन प्राप्त कर लेता है, पर उड़ते भी देर नहीं लगती। विवाह के बाद भाग्योदय। जातक जरुरत से ज्यादा प्रदर्शन करता है। शत्रुओं से असावधान रहने से हानि की संभावना। जातक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करता है। परिवार में प्रशंसनीय, दान-पुण्य में अग्रणी, लेखन शैली से भी धन प्राप्त करता है। कवि, चित्रकार, कलाकार बनने के साथ-२ अन्य कलाओं में भी सहज रुचि, कलाओं के माध्यम से लाभ। जातक कामी, सुखी, सुन्दर स्त्रियों की संगति में आनन्दित, यौवन में यह व्यर्थ का द्रव्य लुटाता है। सुगन्धित पदार्थ, तेल, इत्र आदि पर खर्च होता है। आर्थिक दृष्टि से साधारण, द्रव्य संचय के लिए विशेष प्रबन्ध करता है। जीवन के अंतिम काल में प्रबल धन हानि। जातक की लडकियाँ अधिक जातक विनयशील, समझदार, नम्र। पुत्र सुख देरी से प्राप्त, व्यक्ति स्थूलकाय, शीघ्र दूसरों पर विश्वास करने वाला, संतान सुख से पीड़ित एवं दुखी रहता है। जातक कामी, क्रोधी। पर स्त्री के संपर्क से हानि उठाता है। गृह कलह रहती है तथा सन्तान का उसे स्वल्प सुख ही मिलता है। जातक की पत्नी सुंदर, सुशील, कोमलांगी, लज्जाशील, मधुरभाषी, सौभाग्ययुक्त, घर की संपदा बढाने वाली होती है। इस

कुम्भ

माता को शरीरकष्ट, पिता घर में न हो, बालकने रुदन किया हो। आयु के २,४,१३,२८,३३,४२,४८,५४ वें वर्ष विशेष कष्ट। शनि का विशेष प्रभाव (प्रसूति लग्न विचार)

निम्न फलादेश कुम्भ लग्न की स्त्रियों के लिए :- कुम्भ लग्न हो तो स्त्री कृतज्ञता रहित, रक्तदोष एवं अभिमानी, खर्चीली, पर-पुरुष पर आसक्ति रखने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक साहित्यकला, कौशल, दर्शनों के गुप्त का शौकीन, लेखक, वक्ता, प्रेमी, वृद्धावस्था तक पत्नी से प्रेम, एकांत सेवी, लोगों से मेल जोल कम, अच्छे मित्र, इच्छा शक्ति प्रबल, दौलत हासिल करने में उद्यम के बावजूद असफल। कई गुप्त दुश्मन। परिवारसे धन सहायता तथा मित्रोंसे मरतबे की सहायता इसके दुख का कारण। रुपए के खातिर यात्राऐं, संबंधीया भाई कारोबार में कष्ट का कारण, अकादमी गुप्त। फौजी में गुप्तचर, भाई-बहन कम, कई बार भाई के साथ झगडा। पिता का जल्दी देहांत। संतान सुख कम खासकर पहली, शादी खानदानी स्त्री या गवैया स्त्री से, सबन्ध का लाभ, स्त्री शिक्षक, वृश्चिक राशि वालोंसे दुखी। वर्ष ६,११,१८,२५,३६,४० कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १८,२३,३०,४८,५२,६४,७२। आयु वर्ष ६५ (कालदर्शक पंचाग)

मीन लग्न का फलादेश।

मीन लग्न में जन्म लेने वाले जातक श्रद्धालु, आस्तिक, मेहनती, सामाजिक रुढ़ियों का पालन करने वाले, बातचीत में प्रवीण, समझदार, मध्यम कद, घुँघराले केश, उन्नत नासिका, छोटे-२ दाँत, पैनी आँखे, भव्य आकृति, सहिष्णु। यदि इनका साथ कोई बुराई करता है तो वे प्रत्युत्तर भलाई करते हैं। अधिकतर ये अपने आप में ही केन्द्रित रहते हैं। पारिवारिक जीवन पूर्ण सुखी, लेखक, संगीत, नाटक आदि में रुचि; आर्थिक मामले में पिछड़े रहते हैं। धन इनके पास आता है पर टिकता नहीं। दोनों हाथों से खर्च करते हैं। भरपूर आत्म विश्वास तथा जीवन में ये अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं। आर्थिक मामलों में बड़े अनिश्चित। जातक किसी समय अच्छे धन प्राप्त कर लेता है पर उड़ते भी देर नहीं लगती। विवाह के बाद भाग्योदय। जातक जरूरत से ज्यादा प्रदर्शन करता है। शत्रुओं से असावधान रहने से हानि की संभावना। जातक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करता है। परिवार में प्रशंसनीय, दान-पुण्य में अग्रणी, लेखन शैली से भी धन प्राप्त करता है। कवि, चित्रकार, कलाकार बनने के साथ-२ अन्य कलाओं में भी सहज रुचि, कलाओं के माध्यम से लाभ। जातक कामी, सुखी, सुन्दर स्त्रियों की संगति में आनन्दित, यौवन में यह व्यर्थ का द्रव्य लुटाता है। सुगन्धित पदार्थ, तेल, इत्र आदि पर खर्च होता है। आर्थिक दृष्टि से साधारण, द्रव्य संचय के लिए विशेष प्रबन्ध करता है। जीवन के अंतिम काल में प्रबल धन हानि। जातक की लड़कियाँ अधिक जातक विनयशील, समझदार, नम्र। पुत्र सुख देरी से प्राप्त, व्यक्ति स्थूलकाय, शीघ्र दूसरों पर विश्वास करने वाला, संतान सुख से पीड़ित, दुःखी रहता है। जातक कामी, क्रोधी। पर स्त्री के संपर्क से हानि उठाता है। गृह कलह रहती है तथा सन्तान का उसे स्वल्प सुख ही मिलता है। जातक की पत्नी सुंदर, सुशील, कोमलांगी, लज्जाशील, मधुरभाषी, सौभाग्ययुक्त, घर की संपदा बढ़ाने वाली होती है। इस

मीन

स्त्री के संतान देरी से होती है, फलस्वरूप संतान की चिंता में पीड़ित हँसमुख, सत्यवादी, पति को सत्पथ पर ले जाने वाली, नीती एवं मर्यादा की बात कहने वाली, शृंगार प्रिय, साधारण शृंगार से उसका रूप खिल उठता है। इसे धन की लालसा रहती है तथापि यह लालसा अन्य सद्गुणों पर हावी नहीं होती। दृढ़ चित्त वाली ऐसी स्त्री संकटों एवं बाधाओं में पति का साथ देती है। जातक की मृत्यु उपवास से होती है। क्रोधातिरेक में नुकसान होने से या युद्ध भूमि में भी मृत्यु संभव है। जातक पाखंड प्रिय होता है। प्रदर्शन की प्रवृत्ति इसमें खूब होती है इसके फलस्वरूप व्यर्थ का व्यय भी हो जाता है। फैशन एवं सजावट में रुचि। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष कष्ट तथा उथल पुथल। जातक को आजीविका के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है। परिवार एवं जाति की ओर से बिल्कुल सहायता नहीं। २८ वर्ष तक स्थिति साधारण इसके बाद भाग्योदय। जीवन में प्रगतिशील तथा अपने ध्येय तक पहुँच जाता है। जीवन में कई यात्राएं करता है तथा समय को पहचानकर तदनूकूल कार्य करता है। जातक की व्यापार में प्रगति। नौकरी में परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परंतु इसमें इच्छाशक्ति अदम्य होती है तथा निरन्तर संघर्ष करता हुआ अन्ततः विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना ही लेता है। भूमि सम्बन्धी अथवा धर्म संबंधी कार्यों में जातक को लाभ होता है। एवं पिता की सेवा करने वाला यह जातक समाज में यश लाभ करता है। जातक चंचल प्रकृति का युवक होता है तथा उसका दिमाग अत्यंत गतिशील रहता है। एक ही बिंदु पर घंटों सोचने की इसकी आदत नहीं होती परंतु बहुत कम समय में यह बात की तह तक पहुंच जाता है। नौकरी में उन्नति के कई अवसर तथा प्रगति भी करता है। विवाह के ठोस साधन। परिवार तथा समाज में लोकप्रिय तथा भाइयों के साथ स्नेह संबंध। अपने वचनों का पालक। सजावट प्रिय। सुरुचि एवं सफाई में विशेष मोह होता है। (कुण्डली दर्पण से)

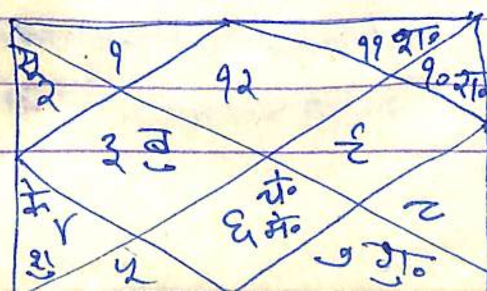
जातक बुद्धिमान, गम्भीर, सौम्य, परोपकारी, ईमानदार, सत्य प्रिय, धार्मिक, फिलास्फर, साहित्य एवं गूढ विद्याओं में रुचि, उच्चाभिलाषी, उच्चकांक्षी, स्वाभिमानी, मान मर्यादा का ध्यान रखने वाला, सेवाभाव, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल, नैतिक, विश्वसनीय, ईमानदार मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहायक, परिस्थितियों के अनुसार ढललेने की क्षमता वाला, न अन्याय करेगा न अन्याय सहन करेगा। जातक कलाकार, चल चित्र, व्यवसाय, खाने पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल। शुभ नग पुखराज, वैवाहिक जीवन के लिए पन्ना। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८ वें होंगे। (पाँचाग दिवाकर से)

बालक जन्म समय सुन्दर, सौम्य, पीतवर्ण, वात कफ प्रकृति, माता के पीले मिश्रित वस्त्र, मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किया हो, मुख उत्तर की ओर, उपसूतिकाऐं २ या ३। बालक जन्म से कुछ देर बाद रोया है। आयु के १, ७, १०, १३, २६, २९, ३८, ४१ वें वर्ष विशेष कष्ट। (प्रसूतिलग्न विचार)

निम्न फलादेश मीन लग्न की स्त्रियों के लिए :- मीन लग्न हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता, नयशील, विनम्र, गुरु की आज्ञाकारिणी, बन्धु प्रिय, देवता-भक्त, पुत्रवती होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक देवता के समान, मानी, कला-कौशल, विद्वान, लेखक, अपना प्रभाव दूसरों पर डालने वाले, जातक ज्ञानी, संगीतज्ञ, साहित्यकार, भोगी, संतान अधिक, भाग्यवान, दानी, पुण्यात्मा लोगों से सहानुभूति, अस्वार्थी, क्रोध जल्दी नहीं और शांत भी जल्दी नहीं, भाई-बहिन अधिक, सम्बन्धि सहायक, भाई-बहिन की मृत्यु, माता का सुख कम, पिता अकाल मृत्यु, प्रतिभाशाली, व्यापार में लाभ, कर्जपीडा, विदेश में दुखी। ४, २५, २०, ३२, ३८, ४० वें वर्ष कष्ट। महत्वपूर्ण वर्ष ४, १२, २४, ३२, ४५, ५२, ६०, ६४। आयु-८० वर्ष (कालदर्शक पांचांग)

नोट- आगे एक महिला की कुण्डली है जिसकी ६ पुत्रियां हैं पर पुत्र एक भी नहीं है। मीन लग्न उपर्युक्त कारण का हेतु है, राहु की दृष्टि संतान सुख में बाधक, पंचम भाव का शुक्र स्त्री कारक ग्रह है जिसके कारण लडकियां अधिक। (कुण्डली दर्पण)



सूर्य

(१) प्रथम भाव में हो तो ईमानदार, तुनकमिजाज, गुस्सैल, शारीरिक पुष्ट, रंग भी खुलता हुआ। (कुण्डली दर्पण से)

जातक साहसी, कुशाग्र, उदार दृढ इच्छाशक्ति, स्वतंत्र विचार, स्वाभिमानी दलेर, उन्नत नासिकाग्र, चौडे ललाट युक्त, उच्च पद, भ्रमणशील, विदेश में भाग्योदय सूर्य अशुभ हो तो चंचल, क्रोधी, दुर्बल, अल्पकेशी, बाल्यकाल में चोरादि का भय, शिर एवं नेत्र कष्ट, स्त्री व परिवार सम्बन्धी चिन्ता, रक्त पित्त रोग, अस्थिर प्रकृति [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री क्रूर, दुष्ट, कृतघ्न, परान्नप्रिय, कृश, कांतिहीन, रोगयुक्ता, बाल्यकाल में रोगिणी, नेत्रकष्ट, नीचों की सेविका, धन तथा पुत्र सुख से वंचित। सूर्य उच्चस्थ हो तो सुखी (स्त्री जातक विज्ञान)

(२) द्वितीय भाव में हो तो जातक द्रव्य के सम्बन्ध में चिंतित, पिता द्वारा अर्जित धन उसे नहीं मिलता। जीवन के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध अधिक सफल। मध्यकाल में रोगों का शिकार होना पडता है तथा आपरेशन आदि भी होते हैं। नौकरी की अपेक्षा उद्योग कार्यों में जातक सफल। (कुण्डली दर्पण से)

जातक मुखरोगी, सम्पत्तिवान, भाग्यवान, झगडालू, नेत्र कर्ण दन्तरोगी, राजभीरु, स्त्री के लिए परिवार से झगडनेवाला होता है। (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री कलहप्रिय, धन-धान्य विहीना, पराक्रम हीन, द्वेषी, स्नेहहीना, कठोर भाषिणी, पारिवारिक सुख से रहित, नेत्र रोग, मध्यम धन। सूर्य उच्च हो तो सुखी (स्त्री जातक विज्ञान)

(३) तृतीय भाव में हो तो जातक के हौसले बहुत बढे-चढे होते हैं। झुकना तो वह जानता ही नहीं। शत्रुओं से खिलवाड करना तथा खतरों से खेलना इसके लिए सहज होता है। दिमागी कार्यों में

अग्रणी। राजनीति में सफल हो सकते हैं। भाइयों से लाभ नहीं। धनवान, सुखी, धैर्यवान, सानन्द जीवन व्यतीत करता है। (कुण्डली दर्पण से)

जातक पराक्रमी, प्रतापशाली, कवि, बन्धुहीन, बलवान, लब्धप्रतिष्ठ (पांचांग दिवाकर से)

स्त्रि की कुण्डली में स्त्री सुन्दर शरीर व मुख, विशाल स्तन, नम्र, रोग पीड़ित, सदैव आनन्दित दिखने वाली, बन्धु सुख से रहित, धैर्य, शक्ति सम्पन्न, पति के सुख से वियुक्त तथा दूसरों की रक्षा करने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

४) चतुर्थ भाव में हो तो जातक मानसिक रूप से परेशान, दिमाग में अस्थिरता असंतोष एवं घुमडन सी बनी रहती है। जातक जीवन में प्रसन्न। मित्र सहायक पर स्वार्थी फलस्वरूप मित्रों का विशेष लाभ नहीं। गम्भीर विषयों और संगीत में रुचि। राजनीति असफल तथा कठिनता से सफलता प्राप्त होती है। (कुण्डली दर्पण से)

जातक चिन्ताग्रस्त, सुन्दर, कठोर, पितृधन नाशक, भाईयों का वैरी, गुप्त विद्या प्रिय, वाहन सुखहीन (पांचांग दिवाकर से)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री बडे दांत वाली, रोगी, प्रभावहीना, अपमानित, सुखरहित, पति-पुत्रादि सुख से युक्त, धन, शौर्य, शक्ति से सम्पन्न, कोमल हृदय, सुन्दर पति, संगीत की जानकार तथा सदैव सुखी (स्त्री जातक विज्ञान)

५) पंचम भाव में हो तो जातक को संतान सुख का अभाव या स्त्री के गर्भपात या देरी से संतान लाभ। जीवन में प्रसन्नता का अभाव तथा कई उतार-चढाव, बाल्यावस्था कष्टदायक, [illegible] में कठोर संघर्ष करना पडता है। जीवन के उत्तरार्द्ध [illegible]

था दिल के दौरे से भी मौत संभव। आय की अपेक्षा व्यय अधिक। (कुण्डली दर्पण)

5. जातक रोगी, अल्पसन्तान, सदाचारी, बुद्धिमान, दुखी, शीघ्र क्रोधी, वंचक (पांचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री अल्प पुत्रवती, व्रताचारिणी, माता पिता की भक्त, प्रिय भाषिणी, देव ब्राह्मणों की पूजक, स्त्रियों में श्रेष्ठ, बाल्यावस्था में रोगिणी, धनहीना। सूर्य मेष, सिंह का हो तो धन पुत्रादि सुख से युक्त (स्त्री जातक विज्ञान)

6) षष्ठ भाव में हो तो जातक कुशल राजनीतिज्ञ, समय को पहचानने वाला, सोच विचारक कर कार्य करने वाला, प्रसिद्ध। यद्यपि स्वस्थ उत्तम कोटि का नहीं वृद्धावस्था में लम्बी बीमारी, जातक योगाभ्यास में रत, परिवार का कल्याण करने वाला, बंधुओं में पूज्य एवं पूर्ण गृहस्थ सुख प्राप्त करता है। जातक कुशल प्रशासक। इसके शत्रु अनेक पर इससे डरते हैं। जातक पूर्ण परिश्रमी व धनवान। 'सैल्फ मेड मैन' होता हुआ भी अर्थ संचय में निपुण, वृद्धावस्था में सीने में दर्द, हार्ट ट्रबल, रक्त सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो जाते हैं। (कुण्डली दर्पण)

जातक शत्रुनाशक, तेजस्वी, वीर्यवान, मातुलकष्टकारक, सबसे बलवान, श्रीमान, न्यायवान, निरोगी (पांचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दक्ष, प्रौढ़, धार्मिक, शान्त स्वभाव, शत्रुजयी, सौभाग्यशाली, सुन्दर शरीर, कुटुम्ब की रक्षा, धन पुत्रादि से युक्त, उत्तम स्वभाव, लोक में मान्य (स्त्री जातक विज्ञान)

7) सप्तम स्थान में हो तो जातक की स्त्री सुन्दर, सुशिक्षित, सुशील। स्त्रियों के साथ आनंद भोग की प्रवृत्ति। वैवाहिक सुख क्षीण। यदि

सप्तम भाव में कोई शुभ ग्रह न हो तथा दृष्टि भी न हो तो जातक के दो विवाह होते हैं। जातक चंचल, विलासी, सुन्दर स्त्रियों के लिए वह असफल प्रयत्न करता रहता है, क्रोधी, शरीर कृश। संतान सुख मध्यम तथा एक, दो बार गर्भपात। प्रथम संतान के शरीर विकार या न्यूनता। जातक का संतान सुख मध्यम। जातक शीघ्र निर्णय नहीं ले पाता क्रोधावेश में काम बिगाड़कर पछताता है। स्त्री के साथ सम्बन्ध मधुर नहीं। विचारों में मतभेद। स्त्री का स्वभाव भी क्रोधी (कुण्डली दर्पण से)

जातक की स्त्री कलेशकारक, स्वाभिमानी, कठोर, आत्मरत, राज्य से अपमानित व चिन्ता युक्त। (पॅचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुरुपा, पापिना, लज्जाहीना, कफयुक्त, पति द्वारा परित्यक्त, चंचला, कपिल वर्ण के नेत्र (स्त्री जातक विज्ञान)

ट) अष्टम स्थान में हो तो जातक क्रोधी, चंचल, हृदय में अपनों से बड़ों के प्रति श्रद्धा, रोगी, बुरी संगति के कारण स्वस्थ एवं धन घटता है। भाग्य इसका साथ नहीं देता। ऐसा जातक धोखेबाज, दूरदर्शी तथा आजीविका के लिए घर से दूर रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक पित्तरोगी, चिन्तायुक्त, क्रोधी, धनी, सुखी, धैर्यहीन, निर्बुद्धि (पॅचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री रक्तदोष से पीड़ित, उत्साहहीना, कुधर्माचारिणी दुःख, दारिद्रय से युक्त, चंचल स्वभाव, मलिन चित्त, रोगिणी, दुःशीला, पति सुख से रहित (स्त्री जातक विज्ञान)

(९) नवम भाव में हो तो जातक का मध्यम कद, उभरा वक्षस्थल, उन्नत ललाट एवं सुन्दर नेत्र होते हैं। जातक परिवार से स्नेह रखने वाला, नवीन विचारों का अन्वेषी होता है। जातक साहसी, परिश्रमी, विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करता हुआ उन्नति की ओर अग्रसर होता है। बाल्यावस्था सुखद नहीं, शिक्षा एवं आजीविका के लिए संघर्ष करना पडता है। युवावस्था, वृद्धावस्था सफल, यात्राओं का प्रबल योग, २४ वें वर्ष से भाग्योदय, अपूर्व नेतृत्व क्षमता (कुण्डली दर्पण)

जातक योगी, तपस्वी, सदाचारी, नेता, ज्योतिषी, साहसी, वाहनसुख युक्त, भृत्य सुख रहित (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री क्रोधिनी, साहसकर्म-प्रिय, अनेक शत्रु वाली, भाग्यहीना, ऐश्वर्यहीना, सुन्दर केश, सत्यवादी, धन धान्य से युक्त, बाल्यकाल वृद्धावस्था दुखी, यौवन सफल (स्त्री जातक विज्ञान)

(१०) दशम भाव में हो तो जातक तेजस्वी, सच्चरित्र, विद्वान होता है। यदि अन्य ग्रह कारक हो तो जातक नौकरी में प्रगति करता है। परंतु राज्य भंग योग भी होता है। नौकरी में उतार चढाव, मातृ सुख अत्यल्प, माता के विचारों से विरोध जिसके कारण माता से दूर रहता है। पितृ सुख कम या पिता का धन नहीं प्राप्त होता। कई बार व्यय होने के कारण आर्थिक स्थिति चिंतनीय, उत्तम जीवन बिताने का [illegible] समाज में व्यक्ति श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक प्रतापी, व्यवसायी, राजमान्य, लब्ध प्रतिष्ट, राजमंत्री, उदार, ऐश्वर्यसम्पन्न, लोकमान्य (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुकर्मी, निस्तेज, पीडित, स्वकृत्यों के प्रति दुर्लक्ष, समस्त गुणों से युक्त, अभिमानी, दानी, धन-पुत्र सुख से सम्पन्न, नृत्य गान में रुचि (स्त्री जातक विज्ञान)

११) एकादश भाव में हो तो जातक अडियल प्रकृति का, एक बार जो सोच लेता है उसे पूरा करने में कृतसंकल्प और अंततः विचारों को मूर्त रूप दे ही देता है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न। बचपन सुखमय तथा यौवन में अर्थ संचय भी कर लेता है। आवश्यकताऐं पूरी कर लेता है, प्रगति तथा लाभ प्राप्त करता है। परिवार से विचारों में भिन्नता फिर भी सोच समझकर बोलता है। जातक सफल वकील या राजनीतिज्ञ। जीवन में अभाव नहीं रहता तथा स्वतंत्र चिंतन के कारण प्रख्यात होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक धनी, बलवान, सुखी, स्वाभिमानी, मितभाषी, तपस्वी, सदाचारी, अल्पसन्तति, उदर रोगी (पंचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री समस्त कलाओं में निपुण, पुत्र-पौत्र युक्त, बन्धु वर्ग को मान्य, लाभायुक्त, जितेन्द्रिय, सुखी, धनी, सुन्दर सुशील, दूसरे के गुणों को ग्रहण। (स्त्री जातक विजान)

१२) द्वादश भाव में हो तो जातक उदासीन, वाम नेत्र एवं मस्तक रोगी, आलसी, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी, कृश शरीर (पंचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुकर्मी, शुचिता रहित, फिजूलखर्ची, दुष्ट, नेत्र-रोगी, सब जगह जाने वाली, दुर्बल, कामी, पर-पुरुष, परधन प्राप्त करने वाली) (स्त्री जातक विजान)

चन्द्र

प्रथम भाव में हो तो जातक कोमल, कल्पना शक्ति की प्रबलता, भावुक, सहृदय, दयार्द्र, मानसिक चिंता से ग्रस्त या उदर रोगी होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक बलवान, ऐश्वर्यशाली, सुखी, व्यवसायी, गान-वाद्यप्रिय, स्थूल शरीर (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो चन्द्र शुक्लपक्ष का तो गौरवर्ण, सुन्दर, धन-धान्य युक्त कृष्ण पक्ष हो तो कृशांगी, कुवस्त्र, विवाद प्रिय, रुग्णा, अल्पसुखा। (स्त्रीजातक विज्ञान)

२) द्वितीय भाव में हो तो जातक सुखी-सम्पन्न, बृहद परिवार का स्वामी होता है। स्त्रियों के मामले में सौभाग्यशाली, स्त्रियों के सम्पर्क से वह द्रव्योपार्जन में सफलता प्राप्त करता है। चन्द्र व्यक्ति को सफल पत्रकार, लेखक भी बना देता है और पुस्तक व्यवसाय, प्रकाशन संस्थान अथवा लेखन से भी भाग्योदय हो सकता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक मधुरभाषी, सुन्दर, भोगी, परदेशवासी, सहनशील, शान्तिप्रिय, भाग्यवान (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो नम्र स्वभाव, धर्मशीला, नीती युक्त, धनवती, पति का कार्य करने में दक्ष, सुन्दर, कीर्तिमती, सुखी, सुशील, धार्मिक होती है। (स्त्रीजातक विज्ञान)

तृतीय भाव में हो, तो जातक शीघ्र सोचने वाला, तुरन्त निर्णय लेने वाला, कठिन संघर्षों में भी आगे बढते रहना

एवं बाधाओं पर विजय पा लेने की क्षमता वाला, जातक अल्पभाषी, कम से कम बोलकर अधिक से अधिक कार्य कर देना इसका स्वभाव, जीवन के मध्यकाल में अपने रास्ते बदल देता है। जातक यात्राओं का शौकीन, शत्रुओं का मान-मर्दन करने वाला, परम साहसी। पारिवारिक जीवन अल्प होता है, परिवार में मनमुटाव व चलता रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक प्रसन्नचित्त, तपस्वी, आस्तिक, मधुरभाषी, कफरोगी, प्रेमी (पांचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कफ-वात-पित्त युक्त, दुष्ट, कुसंगति प्रिया, कठोर भाषिणी, नीति रहिता, कृपण, कलहन, धनपुत्रादि से युक्त, थोड़े भाई, चन्द्र बली हो तो बन्धु सुख (स्त्री जातक विज्ञान)

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक भावुक, दयालु, परोपकारी, सम्बन्धियों से विचारों में गहरी असमानता, हँसमुख। आत्मविश्वास एवं आत्मसंतोष की मात्रा जरूरत से अधिक। बलवान चन्द्र जातक को विख्यात, धनी, प्रभावशाली बना देता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक दानी, मानी, सुखी, उदार, निरोगी, रागद्वेष वर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात भाग्योदयी, जलजीवी, बुद्धिमान (पांचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री का स्थिर स्वभाव, सुखी, धार्मिक, सुखी मधुर भाषिणी, मांस में रुचि। चन्द्र क्षीण हो तो रोगिणी, दुर्बल, दुखी। (स्त्री जातक विज्ञान)

५) पंचम भाव में हो तो पूर्ण संतान सुख। संतान सरल, सौम्य, गुणवान, प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली होती है। धार्मिक [illegible] जातक सम्पन्न, जातक की स्त्री गुणवान एवं कुलीन [illegible]

जातक ईश्वर से डरने वाला, ईश्वर आराधक, धार्मिक, सत्यवादी, ईमानदार, चातुर, तीक्ष्ण बुद्धि, कलाओं का ज्ञान होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक चंचल, कन्या सन्तानवान, सदाचारी, सट्टे से धन कमाने वाला, क्षमाशील होता है। (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो रूपवती, गुणवती, सुपुत्रवती, सेवक सुख सम्पन्न, गौरवमयी, पति की आज्ञाकारी, पति प्रिया, सुशीला। चन्द्र क्षीण हो तो विपरीत फल। (स्त्री जातक विज्ञान)

6) षष्ठ भाव में हो तो जातक बाल्यावस्था में विविध रोगों से ग्रस्त, मानसिक रूप से परेशान, दुखों को झेलते-2 सहिष्णु हो जाता है। मित्रों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यदि चन्द्र बली हो तो बहुत से सुख प्रदान करने में समर्थ। (कुण्डली दर्पण)

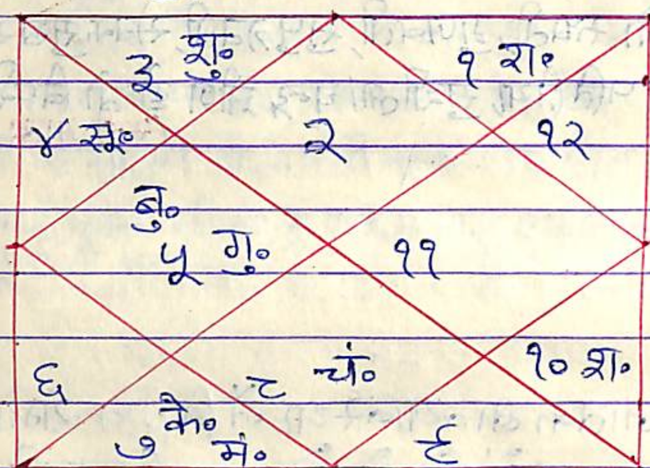
जातक कफरोगी, अल्पायु, आसक्त, खर्चीला स्वभाव, नेत्ररोगी, भृत्यप्रिय (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री चंचल स्वभाव की, विनयहीन, कृश शरीर, रोगग्रस्त, दीर्घद्वेषी, अल्पधनवती, बचपन में रोगिणी, शत्रु से परास्त। चन्द्र बली हो तो अत्यंत सुख (स्त्री जातक विज्ञान)

7) सप्तम भाव में हो तो जातक को स्त्री (स्त्री की कुण्डली हो तो पति) का पूर्ण सुख नहीं प्राप्त होता। यद्यपि जातक सुन्दर, सुशोभित, सुशील होता है भाग्य भी उसका साथ देता है परंतु फिर भी स्त्री (पति) के सम्बन्ध में योग शुभ नहीं। (कुण्डली दर्पण)

[illegible] आगे दी गई कुण्डली को देखें। दाम्पत्य सुख सप्तम भाव, शुक्र को देखा जाता है। इस कुण्डली में चन्द्र सप्तम में नीच

हुआ पड़ा है, साथ ही सप्तमेश मंगल ने षष्ठ भाव में केतु के साथ गठबंधन कर रहा है, फलस्वरुप मारक सा हो गया है क्षीण चन्द्र भी अकारक है, साथ ही सप्तम भाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं। अतः दाम्पत्य सुख कम है।



एक ऐसी स्त्री की कुण्डली जो विवाह के एक सप्ताह पूर्व विधवा हो गई। (कुण्डलीदर्पण)

जातक सभ्य, धैर्यवान, नेता, विचारक, प्रवासी, जलयात्री, अभिमानी, व्यापारी, वकील, प्रसिद्ध, शीतल स्वभाव व स्फूर्तिवान (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री चतुर, पतिप्रिया, तेजस्विनी, ऐश्वर्यसम्पन्न, मधुर भाषिणी, विवेकयुक्त, सुखी, सुन्दर व गुणवान पति। चन्द्र क्षीण हो तो पतिसुख से वंचित (स्त्री जातक [illegible])

८) यदि अष्टम भाव में हो तो जातक की कुण्डली में अगर क्षीण हो तो शीघ्र मृत्यु परंतु यदि बली चन्द्र स्वंय की राशि; शुक्र की राशि; बुध की राशि में हो तो जातक को साँस की बीमारी या दिल के दौरे की वजह से मृत्यु होती है। (कुण्डली दर्पण)

जातक स्त्रीरोगी विकारग्रस्त, प्रमेहरोगी, कामी, व्यापार से लाभ, वाचाल, स्वाभिमानी, बंधन से दुखी, ईर्ष्यालु (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुरुप, विद्रूप अवयवों वाली, क्रोधनी, घातिनी, निन्दिता चन्द्र अशुभ हो तो बाल्यकाल में मृत्यु। गुरु केन्द्रस्थ व शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो दीर्घायु (स्त्री जातक [illegible])

९) नवम भाव में चन्द्र की स्थिति अनुकूल होती है। जातक 'सैल्फ मेड मैन' होता है। भाग्य निरंतर उसका साथ देता है। जातक संघर्षशील, नेतृत्व करने की क्षमता वाले, विपरीत से विपरीत स्थितियों में भी दीमागी संतुलन बनाऐ रखते हैं। जीवन का मध्यकाल उन्नत, शत्रु विजयी, धर्म के क्षेत्र में सहिष्णु, राजनीतिक क्षेत्र में सफल। जातक धनवान, विनम्र, विपक्ष का भी हित चाहने वाला होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक सन्तति सम्पत्ति युक्त, धर्मात्मा, कार्यशील, प्रवासप्रिय, न्यायी, चंचल, विद्वान, विद्याप्रिय, साहसी, अल्पभ्रातृवान। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सुन्दर, पतली कमरवाली, सुन्दर पुत्र, सेवकों से युक्त, सुखी, धर्मात्मा, सौभाग्यवती। चन्द्र क्षीण हो तो धर्म व सुख से रहित। (स्त्री जातक विज्ञान)

१०) दशमभाव में हो तो जातक का बचपन अत्यंत सुंदरता से बीतता है। भाग्य साथ देता है, १६ वर्ष के बाद उन्नति। जातक स्वस्थ, सुंदर, कुलीन, गुणवान, समय की नाजुकता को पहचानने वाला, नौकरी में लाभ, यदि चन्द्र बली हो तो जातक लोकप्रिय होता है, आकर्षक व्यक्तित्व, शत्रुओं में भी प्रशंसनीय। यदि चन्द्र क्षीण हो तो जातक वृद्धावस्था में स्वासरोग से पीड़ित, मातृ सुख से वंचित रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक कार्यकुशल, दयालु, निर्बल बुद्धि, व्यापारी, कार्य परायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान, कुल दीपक, संतोषी, लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित, दीर्घायु (पाँचांग दिवाकर)

~~जातक की~~ स्त्री की कुण्डली में पुण्यशीला, सत्यवादिनी, संतुष्ट, श्रेष्ठ, दानी, पति पुत्र व धन से युक्त। चन्द्र क्षीण हो तो दुबली व कास-रोगी। (स्त्री जातक विज्ञान)

११) एकादश भाव में हो तो जातक साहसी, दृढ निश्चयी, हठी, नेतृत्व की क्षमता वाला, सूझवान, शत्रु विजयी, युवावस्था में प्रसिद्ध हो जाता है। इनका बचपन साधारण स्तर का होता है, जीवन के १६वें वर्ष के बाद भाग्योदय, नौकरी में हो तो उच्चपदाधिकारी, व्यापार में भी लाभ, धन का अभाव नहीं, जीवन की आवश्यकताऐं सहज ही पूरी हो जाती हैं। जातक कीर्तिवान, मौलिक होते हैं। (कुण्डली दर्पण)

जातक चंचल बुद्धि, गुणी, सन्तति, सम्पत्तियुक्त, सुखी, लोकप्रिय, यशस्वी, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेसप्रिय, राज्यकार्यदक्ष (पाँचांग दिवाकर)

~~जातक की~~ स्त्री की कुण्डली स्वस्थ, विनम्र, दानी, संतुष्ट चित्त, इन्द्रियनिग्रह, सुन्दरी, सौभाग्यवती, धन-पुत्रादि से सम्पन्न (स्त्री जातक विज्ञान)

१२) द्वादश भाव में हो तो नेत्ररोगी, चंचल, कफरोगी, क्रोधी, एकान्तप्रिय, चिन्ताशील, मृदुभाषी, व्ययी होता है। (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दीन, अन्यायी, दरिद्री, क्षमाहीन, पापी, बहुत खर्चीली, क्षीण नेत्रों वाली, दुश्चरित्रा, विकट रुप व बाल्यकाल में रोगिनी (स्त्री जातक विज्ञान)

मंगल

1) प्रथम भाव में हो तो रुखापन, चेहरे पर रक्तिमा, साहसी, स्वस्थ, [illegible]व्य आकृति, धोखेबाज, स्वार्थी, अपने सिद्धांतों पर दृढ। (कुण्डली दर्पण)

जातक क्रूर, साहसी, चपल, महत्तवकांक्षी, गुप्तरोगी, लौहधातु एवं चोटादि से, कष्ट युक्त, व्यवसाय में हानि (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री रक्त दोष से पीडित, भाग्यहीन, पराक्रमहीन, अभिमानी, पति से तिरस्कृत, दुर्बल, बाल्यकाल में रोग, सुखों से रहित, दाँत रोग, दुष्ट कृष्ण वर्ण (स्त्री जातक वैज्ञानिक)

2) द्वितीय भाव में हो तो जातक आर्थिक दृष्टि से कमजोर, विद्या के क्षेत्र में कमजोर तथा विद्या प्राप्ति में रुकावटें आती रहती हैं। [illegible] बातचीत में पटु, सेल्स मैन के रुप में सफल। (कुण्डली दर्पण)

जातक कटुभाषी, धनहीन, निर्बुद्धि, पशुपालक कुटुम्ब क्लेशवाला, चोर से भक्ति, धर्मप्रेमी, नेत्र कर्णरोगी, कटु तिक्तरस प्रिया। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री, दरिद्र, कुबुद्धि, रोगिणी, कामी, दुर्बल, गृहकार्य में कुशल, सुख भोगिनी, क्षमाशील, पति जुआरी, अनेक पुरुषों की आश्रित (स्त्री जातक वैज्ञान)

3) तृतीय भाव में हो तो जातक सीमित साधन होने पर भी अडिग, [illegible] कठिनाइयों का सामना करना पडता है तथा ये अपनी [illegible] भी [illegible]काल लेते हैं। व्यक्ति दृढ निश्चयी, यात्राओं का शौकीन, [illegible] में विशेष लाभ नहीं, समाज में आदरणीय, पारिवारिक [illegible] बहाल सामान्य, खतरों से खेलने का शौकीन,

नए विचारों को अपनाना इनका स्वभाव होता है। राजनीति पटु ऐसा जातक जीवन का स्वंय ही निर्माता होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक प्रसिद्ध, शूरवीर, धैर्यवान, साहसी, सर्वगुणी, बन्धुहीन, बलवान, प्रदीप्त जठराग्निवाला, भ्रातृकष्टकारक, कटुभाषी (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में मंगल स्वराशि या उच्च तो स्त्री सौभाग्यवती, लोगों की प्रिया मंगल मित्र या शत्रु क्षेत्री हो तो धनहीना। भाईयों का सुख कम। [स्त्री जातक विज्ञान]

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक की प्रगति शनैः-शनैः होती है। पिता से विचारों में मतभेद। नौकरी के लिए कठोर संघर्ष करना पडता है। जातक आत्मविश्वासी, संघर्षशील, माता के लिए आदर और श्रद्धा, मंगल की दशा में जातक को वाहन सुख की प्राप्ति, राजनीति में सफल, परिस्थिति एवं मनुष्य को भाँपने की गजब की शक्ति। पारिवारिक जीवन सुखी, संतुष्ट होता है।

जातक वाहनसुखी, सन्तानवान, मातृसुखहीन, प्रवासी, अग्निभय युक्त, अल्पमृत्यु या अपमृत्यु, कृषक, बन्धुविरोधी, लाभ युक्त होता है। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुखहीन, धनहीन, तिरस्कृत, क्रोधी, रोगिणी, कुबुद्धि, पर-पुरुष पर आसक्त, लोभी, भ्रातृ सुख रहित, गृह सुख रहित। [स्त्री जातक विज्ञान]

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक पुत्ररहित होता है। [illegible]
निर्बल हो तो पुत्रों द्वारा प्रतिपादित, पाप कृत्यों में [illegible]
जातक कई बाधाओं का सामना करता है। जातक [illegible]
संघर्षशील। पत्नी के साथ मतभेद, फिर भी कोई [illegible]

मंगल

निकल जाता है। डाक्टरी या वैधक आदि क्षेत्र में जातक सफल। (कुण्डली दर्पण)

जातक अग्रबुद्धि, कपटी, व्यसनी, रोगी, उदररोग, कृशशरीर, गुप्तांग-रोगी, चंचल, बुद्धिमान, सन्तति कलेशयुक्त (पाँचांग दिवाकर

स्त्री की कुण्डली में स्त्री लज्जाहीन, संतानहीन, कुपुत्रवती, बन्धु सुखवी हीन, पापी, दुखी। मंगल स्व या उच्च क्षेत्री हो तो एक पुत्र। [स्त्री जातक विज्ञान]

६, यदि षष्ठ भाव में हो तो जातक युद्धस्थल में मृत्यु प्राप्त करता है अथवा शत्रु संघर्ष करते हुऐ विजय लाभ करते हुऐ मरता है। राजनीतिक क्षेत्र में सफल, कठोर हृदय, शत्रु विजयी। यदि लग्न सिंह हो तो पूर्ण गृहस्थ जीवन भोगता है। उच्चाधिकारी, शासक या मंत्री। यदि मंगल शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का ऐक्सीडेंट या अंगभंग। यदि मंगल शनि एक साथ शुभ ग्रहों से अदृष्ट हों तो जातक की मृत्यु पशु के कुचलने से होती है अथवा आप्रेशन के समय मृत्यु। यदि राहु व मंगल बलवान होकर स्थित हों तो जातक आत्महत्या करता है तथा सम्बन्धियों को दुख देता है। यदि जातक का कुम्भ लग्न हो तो जातक पाप कर्मों में रत रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक प्रबल जठराग्नि, बलवान, धैर्यशाली, कुलवन्त, शत्रुहन्ता, ऋणी, पुलिस अफसर, दायरोगी, क्रोधी, रक्तविकारयुक्त, फिजूलखर्ची (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री शत्रुरहित, स्वस्थ, धनवती, पति व पुत्र सुखयुक्ता। मंगल निर्बल हो तो अल्प रोगभय। [स्त्री जातक विज्ञान]

7) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक की स्त्री दुर्बुद्धि एवं कलहप्रिय। यदि मंगल नीच या शत्रु क्षेत्री हो तो अथवा अष्टमेश हो तो एक से अधिक शादियाँ होती हैं। यदि मंगल स्वराशिगत हो तो जातक स्त्री के कारण दुखी रहता है तथा साधारण स्तर का दाम्पत्य जीवन रहता है [कुण्डली दर्पण]

जातक स्त्री-दुखी, वात रोगी, राजभीरु, शीघ्र कोपी, कटुभाषी, निर्धन, मूर्ख, घातकी, धननाशक, ईर्ष्यालु [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में ~~स्त्री~~ मंगल शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो स्त्री कुरुप, दुष्ट, ऐश्वर्यहीन, गुणहीन, बाल-विधवा। मंगल शुभ हो तो दुष्ट, दुखी, चंचल, पर-पुरुष पर आसक्त [स्त्री जातक विज्ञान]

8) यदि अष्टम भाव में हो तो तथा धनु लग्न हो तो जातक की मृत्यु जल में डूबने से। मंगल क्षीण हो तो जातक की जलने से मृत्यु। यदि मंगल धनु या मीन राशि का हो तो जातक कई बार मरते-मरते बचता है। उसका जीवन जोखिम से भरा तथा मृत्यु से संघर्ष करने में आनन्दित होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक व्याधिग्रस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्र रोगी, शस्त्रचोर, अग्निभीरु, संकोची, रक्तविकार व धन चिन्तायुक्त [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री कृश, कृष्णवर्ण, दुखी, दारिद्र, रुग्णा, कान्तिहीन, हिंसक, दुखी, मौत पानी में डूबकर या पति की मौत। [स्त्री जातक विज्ञान]

9) यदि नवम भाव में हो तो जातक वीर, साहसी, कर्मठ, परिश्रमी। यदि मंगल शत्रु क्षेत्री हो तो रोगी। प्रारम्भिक वर्षों में दुखी, आजीविका के लिए कठोर परिश्रमी। मंगल मकर का या स्वराशिगत हो

तो भाग्यवृद्धि में सहायक होता है। विद्या में रुचि, जातक सफल लेखक या पत्रकार, प्रकाशक, सच्चरित्र, नम्र स्वभाव, सरल जीवन व्यतीत करने का इच्छुक होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक द्वेषी, अभिमानी, क्रोधी, नेता, अधिकारी, ईर्ष्यालु, अल्प लाभ, यशस्वी, ~~अधम ब्राह्मणों से~~ ~~पुत्र~~ असंतुष्ट व भ्रातृ विरोधी (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सुन्दर, रोगी, तामसी, धर्महीन, भाग्यहीन, जन-हीन, बड़े परिवार वाली, संगीत की रुचि व प्रसिद्ध [स्त्री जातक विज्ञान)

10) यदि दशम भाव में हो तो जातक सफल व्यापारी, नौकरी से लाभ नहीं, बाल्यकाल गरीबी में व्यतीत, माता की मृत्यु बचपन में, शिक्षा में कठिनाइयाँ, जातक परिश्रमी, संघर्षशील, सूझ-बूझ से व्यापार में उन्नति करते हैं। यौवनावस्था संघर्षों में परंतु वृद्धावस्था सफल। जीवन में ये लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं। (कुण्डली दर्पण)

जातक धनवान, कुलपति, सुखी, यशस्वी, उत्तम वाहन, स्वाभिमानी, सन्तति कष्ट वाला (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में हो तो स्त्री अधर्मा, शीलहीन, लज्जाहीन, रतिप्रिय, स्वकुल में श्रेष्ठ, परोपकारिणी, संतुष्ट, कार्यकुशल, पति उच्चपदस्थ व आभूषण सम्पन्न [स्त्री जातक विज्ञान]

11) यदि एकादश भाव में हो तो जातक पिता के धन को नहीं भोग पाता, पैतृक सम्पत्ति नहीं के बराबर मिलती है। शिक्षण काल में व्यवधान आते रहते हैं। मंगल स्वगृही हो तो जातक को लाभ कराता है। जातक आजीविका के लिए कठोर परिश्रमी, 28 वें वर्ष से भाग्योदय

मंगल

भाईयों से विशेष लाभ नहीं पर जातक भाइयों की सहायता करने का इच्छुक, तुरंत निर्णयी, प्रौढावस्था सफल। (कुण्डली दर्पण)

जातक कटु भाषी, दम्भी, झगडालू, क्रोधी, प्रवासी, साहसी, लाभ कराने वाला, न्यायवान, धैर्यवान (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री धर्मासिक्त, पति से प्रेम, श्रेष्ट, धनी, लाभकारी, पुत्र-पौत्र से युक्त, कार्य-कुशल [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो नेत्ररोगी, स्त्रीकष्ट, उग्र, ऋणी, झगडालू, मूर्ख, व्यय शील प्रकृति (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दुर्बल, मद्यपान प्रिय, आतुर, गुणहीन, घातकी, खर्चीली, धनहीन, क्रोधी, पति-सुख हीन तथा बन्धुओं की विरोधिनी [स्त्री जातक वि०]

बुध

1) यदि प्रथम भाव में हो तो जातक का चेहरा सुन्दर, चेहरे पर रक्तिमा, कुछ पीलापन लिए हुए गौर वर्ण, ठिगना कद, पुष्ट शरीर। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, तर्किक, गणितज्ञ, विनोदी, उदार, वैद्य, विद्वान, स्त्री प्रिय, मिष्टभाषी, मितव्ययी [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री रूपवती, धर्मात्मा, नीतियुक्त, सत्यवादी, सर्वप्रिय, धनधान्यसम्पन्न, पति द्वारा मान्या, पण्डिता, धैर्यवान, सुशीला, अधिक सन्तान, गृह कार्य में कुशल, प्रियवादिनी, शिल्पज्ञ, दानादि करने वाली। [स्त्री जातक विज्ञान]

2) यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक धार्मिक मामलों में कट्टर, अर्थ संचय में प्रवीण, धन का अभाव, भाषण करने में पटु, लोगों को अपने पक्ष में करने की कला में प्रवीण, उद्योगों में धन लगाने का इच्छुक रहता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक वक्ता, सुंदर, सुखी, गुणी, मिष्ठान्नभोजी, दलाल या वकील, मितव्ययी, संग्रही, सत्कार्य कारक, साहसी। [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री रूपवती, सुन्दर, धनवती, शुद्ध आचरण, धार्मिक, कोमल हृदय, कार्य कुशल, सन्तान सुख से युक्त। [स्त्री जातक विज्ञान]

3) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक हितकारी, स्मरण शक्ति अद्भुत, परिस्थिति भाँपने की क्षमता वाला। पढ़ने-लिखने का शौकीन, साहसी, पारिवारिक जीवन सुखी। [कुण्डली दर्पण]

जातक कार्यदक्ष, परिश्रमी, भीरु, लेखक, सामुद्रिकशास्त्र

का ज्ञाता, सम्पादक, कवि, सन्ततिवान, विलासी, अल्प भ्रातृवान, चंचल, व्यवसायी, यात्राशील, धर्मात्मा, मित्रप्रेमी, सद्गुणी [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धर्मिणी, पुत्रवती, मानवती, धनवती, थोड़े सहोदर, अपने कर्म करने वाली, दुखी, कुटिल हृदय [स्त्री जातक विज्ञान]

4) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक सफल कूटनीतिज्ञ। बुध उच्च या कारक हो तो जातक राजदूत। बुध नीच हो तो जातक सफल राजनीतिज्ञ शिक्षा की दृष्टि से उत्तम, भाषण एवं लेखन में प्रवीण, जनता को सम्मोहित करने की शक्ति वाला होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक पण्डित, भाग्यवान, वाहनसुखी, दानी, स्थूलदेही, आलसी, गतिप्रिय, उदार, बन्धुप्रेमी, विद्वान, लेखक, नीतिज्ञ, नीतिवान [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धर्मरता, प्रख्यात कुल में उत्पन्न, धनी, सज्जनों से युक्त, अधिक कार्य वाली, रोगिणी, दुर्बल, चंचल, हास्यप्रिय, सहोदर सुख रहित होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

5) यदि पंचम भाव में हो तो जातक सौभाग्यशाली, स्त्री के मामले में परम सौभाग्यशाली, स्त्री गुणवान, समझदार होती है। संतान की तरफ से भी सौभाग्यशाली, कन्या संतान अधिक, जातक हँसमुख, प्रसन्नचित्त विनोदी, मधुर जीवन, आस्तिक, पवित्र, श्रद्धालु, सेक्रेट्री, सचिव या मिनिस्टर हो सकता है। तीक्ष्ण बुद्धि, संघर्षशील, प्रेम के क्षेत्र में सफल होता है। (कुण्डली ...)

जातक प्रसन्न, कुशाग्र बुद्धि, गण्यमान्य, सुखी, सदाचारी, वाद्यप्रिय कवि, विद्वान, उद्यमी [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दारिद्री, दुष्ट, कलहप्रिय, पुत्रवती, पतिसुखयुक्त सौंदर्यवती, धनवती, सुखी, गुरुजनों की भक्त [स्त्री जातक विज्ञान]

(६) यदि छठे भाव में हो तो जातक चिड़चिड़ा, क्रोधी, दूसरों की सलाह पर ध्यान नहीं देता, शिक्षा अपूर्ण, परेशानियों से ग्रस्त, हीनभावना का शिकार, यदि बुध एवं शनि हों तो नौकरी में विश्वासघात, आलसी, निकम्मा, शत्रुओं से भयभीत एवं कायर होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक विवेकी, वादी, कलहप्रिय, आलसी, रोगी, अभिमानी, परिश्रमी, दुर्बल, कामी, स्त्रि प्रिय (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दयालु, शत्रुहन्ता, अल्पायु। बुध शुभ ग्रह से युक्त हो तो रोगी, शत्रु से भय। बुध पाप ग्रह दृष्ट हो तो निरोगी, शत्रुहन्ता (स्त्री जातक विज्ञान)

(७) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री के पक्ष से सौभाग्यशाली, जातक की स्त्री दूरदर्शी, आभूषप्रिय, धन की इच्छुक, राजनीति में सफल होती है। (कुण्डली दर्पण)

जातक सुन्दर, विद्वान, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, धार्मिक, अल्पवीर्य, दीर्घायु (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री चतुर, विनम्र, उत्तम आचरण, शास्त्रप्रिय, सुखी, चंचल, रुपवती, गृहकार्य में कुशल, सुन्दर पति। (स्त्री जातक विज्ञान)

बुध

८) यदि अष्टम भाव में हो तो जातक जितेन्द्रिय, सत्यावादी, सुन्दर, शत्रुहन्ता बाल्यावस्था में सिर में चोट जिससे ज्योति मंद पड जाती है। अतिथियों का सत्कार करने वाला, सफल यदि बुध अकारक हो कामुक, परस्त्री गमन प्रसंग से मृत्यु प्राप्त करता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, लब्धप्रतिष्ठ, अभिमानी, कृषक, राजमान्य, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायधीश, मनस्वी, धनवान, धर्मात्मा [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दुखी, कृतघ्न, नीतिवान, धर्म-रहित, अभिमानहीन सत्यवादिनी, दानी, सत्कर्मी, अल्पायु, धनहीन, पाप ग्रह से युक्त हो तो। [स्त्री जातक विज्ञान]

९) यदि नवम भाव में हो तो जातक चतुर एवं विनम्र, परिश्रमी, प्रसिद्ध, निरन्तर घात-परिघातों का सामना करने वाला, संकटों में मुस्कराने वाला होता है। ३२ वें वर्ष से भाग्योदय, पूर्ण सुखभोगी, उत्तम कोटि के वाहन प्राप्त करता है। पारिवारिक जीवन सुखद एवं सफल। [कुण्डली दर्पण]

जातक सदाचारी, कवि, गवैया, सम्पादक, लेखक, ज्योतिषी, विद्वान, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री विनयशील, शांत, मिष्ट भाषिणी, कार्यकुशल, कीर्तिमती भाग्यवान, धार्मिक, पति व पुत्र सुख युक्त, धनवती, सुन्दर, सुशील। बुध पाप ग्रह से युक्त हो तो विपरीत फल। [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) यदि दशम भाव में हो तो जातक विनीत, कुशल प्रशासक, निम्न स्तर से उन्नति करते हुऐ उच्च पद पाने में समर्थ, सफल राजनीतिज्ञ, मौलिक, अच्छी राजनीति, बाल्यावस्था साधारण, साधारण कुल में जन्म पर विचारों व कार्यों के फलस्वरुप विख्यात, ईमानदार, छल-कपट से

दूर, व्यक्तित्व उच्च एवं भव्य होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक सत्यावादी, विद्वान, लोकमान्य, मनस्वी, व्यवहार कुशल, कवि, लेखक, न्यायी, भाग्यवान, राजमान्य, मातृ पितृ भक्त, जीमींदार [पाँचाँग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सत्कर्मी, नीतिवान, विवेकी, पति को मान्य, बंधुप्रेमी, आज्ञाकारी, कार्यकुशल, रुपवती, धनवती, मितभाषी [स्त्री जातक विज्ञान]

११) यदि एकादश भाव में हो तो जातक चतुर, परिस्थिती के अनुकूल कार्य करने वाला, हीन भावना से पीडित परंतु साहसी, दृढनिश्चयी, परिश्रमी। नौकरी में अधिक लाभ नहीं, परिश्रमी। भाईयों से विशेष लाभ नहीं। जातक 'सैल्फ मेड मैन' होता है। उच्चाधिकारियों से विशेष सम्पर्क, जीवन का मध्यकाल सफल, आमदनी के कई स्तोत्र, लेखन, सम्पादन, प्रकाशन से लाभ। जीवन में सफल होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, योगी, सदाचारी, धनवान, प्रसिद्ध, विद्वान, गायन-प्रिय, ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान, विचारवान, शत्रुनाशक [पाँचाँग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो पतिव्रता, बन्धुजनमान्य, धन का लेनदेन करनेवाली, लाभन्वित, सुन्दर, हितैषी, श्यामवर्ण, कृश, सन्तान सुख युक्त। [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक विद्वान, आलसी, अल्पभाषी, शास्त्रज्ञ, लेखक, वेदान्ती, सुन्दर, वकील, धर्मात्मा [पाँचाँग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो लडाकू, व्याकुल, गुणहीन, तिरस्कृत, रोगिणी, कुटिल, धनी, दानी, पर पुरुष पे आसक्त [स्त्री जातक विज्ञान]

गुरु

१) यदि प्रथम भाव में हो तो जातक ऊँचा, लम्बा और दृढ, पीतिमा, विशाल आँखें, उन्नत ललाट, भव्य आकृति होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक ज्योतिषी, दीर्घायु, कर्त्तव्यपरायण, विद्वान, कार्यकर्ता, तेजस्वी, स्पष्ट वक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, विनीत, धनी, पुत्रवान, राज्यमान्य, धर्मात्मा [पंचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री अत्यंत सुन्दर, सत्यवादी, गंभीर, सुखी, श्रेष्ठ, पति को अत्याधिक प्रिय होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

२) यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक धार्मिक नेता, कवि लेखक अथवा सफल धर्मोपदेशक। लेखन से द्रव्योजर्न करता है। जातक सफल वैज्ञानिक, मित्र अधिक, ससुराल से सहायता मिलती है तथा पढी-लिखी पत्नी प्राप्त होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक सुन्दर शरीर, मधुरभाषी, सम्पत्ति व संतानवान, राज्यमान्य, लोकमान्य, सुकार्यरत, सदाचारी, पुण्यात्मा, भाग्यवान, शत्रुनाशक, दीर्घायु, व्यवसायी [पांचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, धार्मिक, सौभाग्य, नीतिवान, धनवती, श्रेष्ठ पति, उत्तम कुटम्ब, सर्वत्र आदरणीय [स्त्री जातक विज्ञान]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक शुभ लक्षणों से सम्पन्न, जीवन में उतार चढाव, संघर्षशील परंतु मजबूत, साहसी, समय को गम्भीरता को भाँप लेने वाला, शिक्षा के क्षेत्र में सफल, एक से अधिक कार्यों में निष्णात तथा मशीनी कार्यों का शौकीन। यद्यपि शत्रुओं से कई बार

घात खाने पडते हैं फिर भी अटूट हिम्मती, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, पारिवारिक जीवन भी सुखद होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक जितेन्द्रिय, मन्दाग्नि, शास्त्रज्ञ, लेखक, प्रवासी, योगी, आस्तिक, ऐश्वर्यमान, कामी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, विदेशप्रिय, पर्यटनशील, वाहनयुक्त [पांचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कृश शरीर, गौरवरहित, पराक्रमहीन, दोषी, कृपण, नीचबुद्धि, भाई-सुख युक्त, पतिप्रेम रहित, खर्चीली [स्त्री जातक विज्ञान]

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक दार्शनिक, उन्नति की ओर अग्रसर होता रहता है। समाजिक जीवन में ख्याति प्राप्त करने वाला, शत्रुओं में भी प्रशंसनीय, वाहन धन आदि की दृष्टि से सौभाग्यशाली, राजकीय नौकरी में प्रगति शनैः-शनैः होती है। धार्मिक कार्यों में रुचि होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक भोगी, सुन्दर, कार्यरत, उद्योगी, ज्योतिर्विद, सन्तानरोधक, राजमान्य, लोकमान्य, मातृ पितृ भक्त, यशस्वी, व्यवहारज्ञ [पांचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दरी, रुपवती, विद्वान, गौरवशालिनी, यशस्विनी, धन-धान्य युक्त, प्रसन्नचित्त, कार्य कुशल [स्त्री जातक विज्ञान]

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक तर्क शास्त्र, व्याकरण, हिस्ट्री, कानून में रुचि रखने वाला होता है। व्यक्ति मंत्र-तंत्र, वेद पाठ आदि में भी सिद्ध होता है। पत्नी के मामले में सौभाग्यशाली, जातक की पत्नी सुन्दर गुणवान, पतिव्रता होती है। पति-पत्नि में गहरा प्रेम, स्मरणशक्ति कमजोर पर अधिकारियों का प्रिय। जातक सेक्रेटरी, सलाहकार होता है।

सजावट की ओर विशेष ध्यान। उत्तम कोटि के मित्र, जातक गंभीर, धैर्यपूर्वक विपक्ष की बात सुनने वाला, सहिष्णु, क्षमावान, परोपकारी, चतुर, धनवान होता है। संतान सुख श्रेष्ठ तथा उच्च वाहन सुख प्राप्त करता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक आस्तिक, ज्योतिषी, विवेकी, प्रसिद्ध, ~~विद्वान, सुकर्मरत, दुर्बल~~, उदार, कुलश्रेष्ठ, सट्टे से धन प्राप्त, सन्ततिवान, नीति विशारद [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री निष्पाप, सत्यपथी, यशस्विनी, प्रतिष्ठित, नीति युक्त, व्रत धर्म में दक्ष, सात पुत्र, उत्तम बुद्धि, मधुरभाषी, पतिसुख युक्त, पुराण कि जानने वाली [स्त्री जातक विज्ञान]

6) यदि छठे भाव में हो तो जातक समाज एवं जाति में अपमानित, निरंतर व्यंग बाणों का शिकार, आलसी, छिद्रान्वेषी, हाथ की सफाई दिखाने वाला, शत्रुओं से भयभीत, अभाग्यशाली, स्वस्थ साधारण स्तर का होता है। [कुण्डली दर्पण]

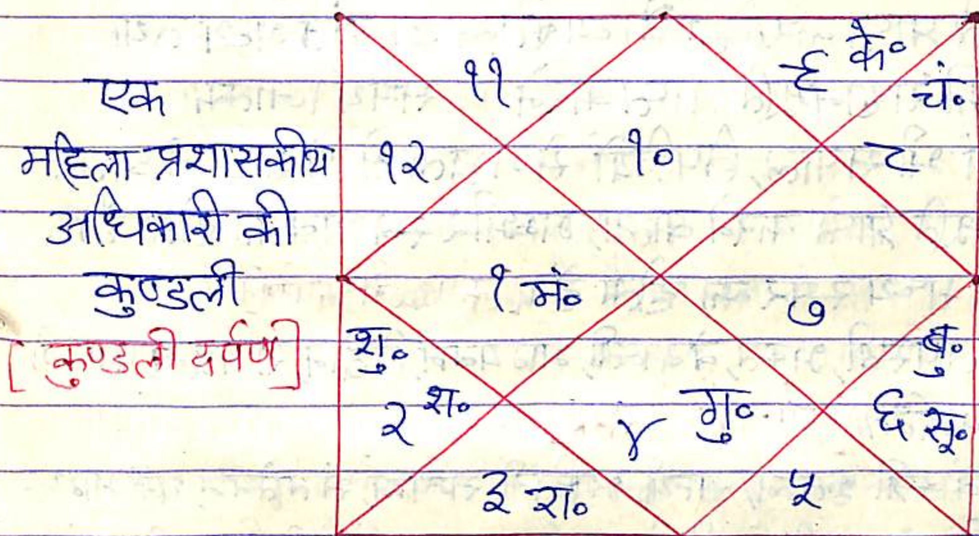
जातक मधुरभाषी, ज्योतिषी, विवेकी, प्रसिद्ध, विद्वान, सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, लोकमान्य, नीरोगी, प्रतापी [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री नीतियुक्त, श्रेष्ट, शारीरिक कष्ट व उपचार पाने वाली विपत्तियों से ग्रस्त, शत्रुरहित, सत्यावादी, सुकीर्ति, घर के कार्य में आलसी। गुरु नीच का हो तो रोगिणी [स्त्री जातक वि.ज्ञा]

7) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नि सफल एवं समझदार, मानवीय गुणों से विभूषित ऐसी स्त्री बहु सन्तानवाती होती है। व्यक्ति का स्वस्थ उत्तम रहता है तथा राजा के तुल्य सुख प्राप्त करता है। व्यक्ति मजेस्ट्रेट आफिसर, विद्वान, ~~कला~~ कलाप्रिय, गुणज्ञ होता

है। नीचे एक शासकीय महिला अधिकारी की कुण्डली है जिसका पति भी उच्च पद पर स्थित है। गुरु उच्च राशि का होकर स्थित है फलस्वरूप सुन्दर एवं कुलीन पति मिला, इस स्त्री की अठारह संतान हुई क्योंकि पंचम भाव का स्वामी शुक्र भी अपनी राशि में है तथा चन्द्र की उच्च शुक्र योग प्रधान ग्रह है परंतु शनि भी शुक्र के साथ पड़ा है तथा लग्नेश की सप्तम भाव पर दृष्टि है। इसके अतिरिक्त शनि द्वितीयेश हो कर मारक बना भी जिसके कारण इस स्त्री की आंखों के सामने नौ संतान गुजर गईं। फिर भी गुरु, शुक्र बलवान हैं जिनके कारण संतानाभाव नहीं रहा।

एक महिला प्रशासकीय अधिकारी की कुण्डली [कुण्डली दर्पण]



जातक भाग्यवान, विद्वान, वक्ता, प्रधान, नम्र, ज्योतिषी, धैर्यवान, प्रवासी, सुन्दर, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत। [पांचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री ज्ञानी, गुणवती, शीलवती, कीर्तिमानी, शास्त्रज्ञ, उत्तम पति, पति प्रिय, शिक्षित, विनम्र, सुखी। [स्त्री जातक विज्ञान]

६) यदि अष्टम भाव में हो तो जातक जीवन में कई तीर्थ यात्राएं करता है। व्यक्ति चंचल तथा समय का पाबन्द, परंतु तुरंत निर्णय लेने में असमर्थ, स्त्री सुख गोष्ट तथा योगाभ्यास में भी ध्यान देने वाला होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, शीलसम्पन्न, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषी, लोभी, गुप्तरोगी, मित्रों द्वारा धननाशक [पांचाग दिवाकर]

गुरु

स्त्री की कुण्डली में स्त्री विशाल देह, व्यसनी, रोगी, पति के मन में परित्यक्त, चंचल, तीर्थ, धन-वस्त्रादि का अभाव, पुत्र-पति के सुख से वंचित [स्त्री जातक विज्ञान]

९) यदि नवम भाव में होतो अत्यंत शुभ। जातक साधारण कुल में जन्म लेने पर भी उन्नति प्राप्त कर लेता है। व्यक्तित्व अत्यंत भव्य तथा सहज ही लोगों की सहानभूति प्राप्त करने में समर्थ। जातक राजनीतिक क्षेत्र में भी सफल, विपक्षियों से नम्रता से पेश आने वाला, लोगों की सहानभूति प्राप्त करने वाला, गम्भीर स्वभाव का होता है। पारिवारिक जीवन मध्य स्तर का होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक तपस्वी, भक्त, वेदान्ती, भाग्यवान, विद्वान, राजपूज्य, पराक्रमी बुद्धिमान, पुत्रवान, धर्मात्मा [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री कृतघ्न, सत्यी, भक्तिनी, सम्पन्न, संततिवान, धनी, भाग्यशालिनी, सौभाग्यवती, उत्तम पति, सुखी, ऐश-आराम सम्पन्न [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) यदि दशम भाव में होतो जातक धार्मिक, धर्म जीवन पर हावी रहता है, धार्मिक कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेता है, विचारों में उज्जवलता प्राप्त करता है, व्यापार की अपेक्षा नौकरी में सफल। माता-पिता का आदर करने वाला, प्रसिद्ध, तीर्थयात्राऐं खूब तथा सरल जीवन बिताने का इच्छुक रहता है। [कुण्डली दर्पण] शेष(3)

जातक सत्कर्मी, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राज्यमान्य, स्वतंत्र विचार, मातृ पितृ भक्त, लाभवान, धनी, भाग्यवान [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री गुणवती, गुणज्ञ, सत्कर्मी, प्रख्यात, पुण्यशीला, दास-दासियों वाली, धनी, आभूषण युक्त, पति-पुत्र सुख से सम्पन्न, गृहकार्य में कुशल [स्त्रीजातक विज्ञान]

११) यदि एकादश भाव में हो तो अत्यंत शुभ। जातक शान्त, धीर, गम्भीर, कुशल प्रशासक, बाल्यावस्था सानंद, १६ वें वर्ष के बाद से भाग्योदय, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, आय के कई स्त्रोत्र, सम्पति की ओर सचेष्ट। जीवन का मध्यकाल संघर्षशील, अकारण ही अनेक शत्रु हो जाते हैं परंतु ये विपत्तियों से घबराते नहीं। परिश्रमी, लेखन प्रकाशन के क्षेत्र में प्रसिद्ध, पारिवारिक जीवन सामान्य, भाईयों से विशेष लाभ नहीं, विचार मौलिक एवं उच्च रहते हैं, जीवन में सफल [कुण्डली दर्पण]

जातक सुन्दर, नीरोगी, लाभवान, व्यवसायी, धनिक, संतोषी, अल्पसंतान, राजपूज्य, विद्वान, बहुस्त्रीयुक्त, सद्व्ययी, पराक्रमी [पंचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री जितेन्द्रिय, कीर्तिमती, सम्पन्न, सत्यी, शिल्पकला कुशल, धर्मात्मा, सुखी, पति प्रिया, कला को जानने वाली, ऐश्वर्यशाली [स्त्रीजातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक जीवन का लक्ष्य एक क्षण के लिए भी आँखों से ओझल नहीं होने देते, निरन्तर निस्वार्थ परिश्रम करते हैं, वाहन योग प्रबल, शनैः-२ जीवन की सभी आवश्यकताऐं पूरी हो जाती हैं। आय के एक से अधिक स्त्रोत्र, व्यय भी अधिक रहता है, आर्थिक जीवन साधारण, ईमानदार, सद्गुणों से अलंकृत ऐसे जातक सफल होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक आलसी, मितभाषी, सुखी, मितव्ययी, योगाभ्यासी,

गुरु

परोपकारी, उदार, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, सदाचारी, लोभी, यात्री, दुष्ट चित्तात्मा होता है। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री रुग्ण, लाभ-रहित, दुष्ट, परधर्मी, कुटिल, बुद्धिहीन, धनहीन, मानहीन, लज्जाहीन, इधर-उधर घूमने वाली। [स्त्रीजातक विज्ञान]

शुक्र

१) यदि प्रथम भाव में हो तो जातक सुन्दर, परिवार से स्नेह करने वाला, स्त्रियों पर अनुसक्त, सुन्दर स्त्रियों से संपर्क में रहने का इच्छुक, कोमल, गेहूँआ रंग होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, सुन्दर, ऐश्वर्यवान, सुखी, मधुरभाषी, प्रवासी, विद्वान, भोगी, विलासी, कामी, राजप्रिय। [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, गोरी, सुशील, श्रेष्ठ, कार्यदक्ष, स्वस्थ, भाग्यवती, धनी, मधुर बोलनेवाली, धन-पुत्रादि युक्त, कला कुशल [स्त्री जातक विज्ञान]

२) यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक का विस्तृत परिवार, जातक दूसरों से काम निकलवाने में चतुर, द्रव्य का अभाव नहीं रहता। व्यक्ति डॉक्टर, सफल पत्रकार अथवा व्यवसायी होता है। दृढ व्यक्तित्व तथा शत्रुओं को अपने वश में रखता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक धनवान, मिष्ठान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, सुखी, समयज्ञ, कुटुम्ब युक्त, कवि, दीर्घजीवी, साहसी, भाग्यवान होता है। [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सत्कर्मी, भाग्यवान, मृदुभाषी, प्रख्यात, आभूषण सम्पन्न, सुंदर, विद्वती, कार्य-कुशल, सुखी [स्त्री जातक विज्ञान]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक भाग्यहीन, यद्यपि उसके साथ द्रव्य रहता है परंतु वह उसे भोग नहीं पाता। स्मरणशक्ति प्रबल, साहसी, संगीत, काव्य, चित्रकलादि में प्रवीण। यदि शुक्र कारक हो तो सफल

शुक्र

लेखक या चित्रकार। आर्थिक चिंता से परेशान, परिश्रमी, जीवन के मध्यकाल में कई बार यात्राऐं भी करनी पडती हैं। पारिवारिक जीवन साधारण रहता है तथा सन्तान की ओर से भी विशेष लाभ नहीं रहता। (कुण्डली दर्पण)

जातक सुखी, धनी, कृपण, आलसी, चित्रकार, पराक्रमी, विद्वान, भाग्यवान, पर्यटनशील (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दरिद्र, दुष्ट, बन्धु परित्यक्त, दुर्बला, कृपणी, धनहीना, कुटिल, कामी, साधुजनों का अनिष्ट करने वाली (स्त्री जातक विज्ञान)

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो शुभकारी, जातक का जीवन सुखी एवं आनन्दमय, सुन्दर एवं गुणवान पत्नि। जातक मातृभक्त यद्यपि माता से कई बार स्वभाव मिलता नहीं। मन का गहरा तथा इसके मन की थाह पा लेना आसान नहीं होता। जीवन में राजनीति हावी। मित्रों की कमी नहीं रहती। स्त्रियों एवं प्रेमिकाओं का भी गहरा हस्तक्षेप। (कुण्डली दर्पण)

जातक बलवान, परोपकारी, आस्तिक, सुखी, व्यवहारदक्ष, विलासी, भाग्यवान, पुत्रवान, दीर्घायु। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुखी, सौभाग्ययुक्त, जितेन्द्रिय, धर्म-कर्म में दक्ष, कुलदीपक, सुशील, सुन्दरी, यानी, भक्तिनी, पतिव्रता। (स्त्री जातक विज्ञान)

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक कल्पनाशील युवक, काव्य प्रतिभा, काव्य, संगीत, नृत्य के माध्यम से द्रव्योपार्जन, कई मित्र, संतान सुख श्रेष्ठ, पाँच से अधिक संतान, पुत्रियों की संख्या अधिक, वृद्धावस्था में पूर्ण संतान सुख, भोगी, हँसमुख, रंगीला होता है।

जीवन सानन्द बीतता है। राज्य की ओर से पूर्ण सम्मान, धुन का धनी, जीवन के प्रत्येक निश्चय को पूरा करता है। शिक्षण काल में कई व्यवधान, यौवन काल में पूर्ण संघर्ष करते हुऐ समय को अपने अनुकूल बनाता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक सुखी, भोगी, सद्गुणी, न्यायवान, आस्तिक, दानी, उदार, विद्वान, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री विलासिनी, सुन्दरी, हास्य मुख, धनवती, सुखी, कुल में श्रेष्ठ, धनी, अधिक संतान, पतिव्रता (स्त्री जातक विज्ञान)

६) यदि छठे भाव में हो तो जातक शत्रु रहित होता है, मित्रों से लाभ पहुँचता है, प्रतिष्ठित कुल में जन्म लेकर विद्वान, विलासी, चरित्र संदिग्ध कहा जा सकता है। स्वस्थ एवं सुन्दर स्त्रियों के प्रति आसक्त, स्त्रियों से संबंधित कार्यों में लाभ उठाता है। यदि मीन राशि का शुक्र हो तो व्यक्ति धनी, विद्वान, सम्मान लाभ करता है। (कुण्डली दर्पण)

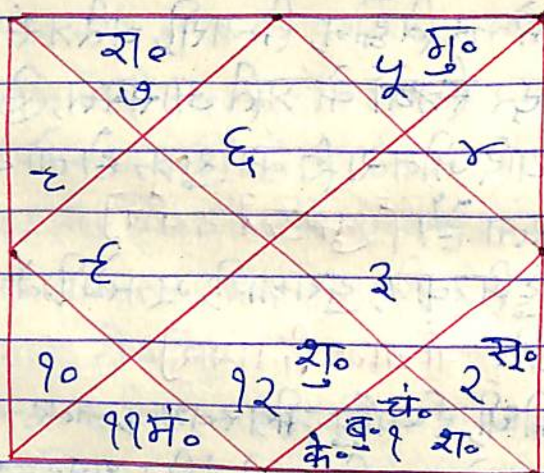
जातक स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान, दुराचारी, मूत्ररोगी, वैभवहीन, दुखी, स्त्रीप्रिय, शत्रुनाशक, मितव्ययी (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो क्रोधी, ईर्ष्यालु, तीव्र स्वभाव, कलह-कारिणी, पति-पुत्र से परित्यक्त, अनेक शत्रु, कफ-वात रोग, पतिप्रेम से वंचित, शत्रुहन्ता (स्त्री जातक विज्ञान)

७) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक भावुक, कल्पनाशील, सरल हृदय, सुन्दर गौरवर्ण एवं गुणवान स्त्री, जातक प्रसन्नचित्त, गुणी पुत्रों को जन्म देने में समर्थ होता है। (कुण्डली दर्पण)

आगे एक ऐसे व्यक्ति की कुण्डली है जो बहुत गरीब

था। शिक्षा के क्षेत्र में शून्य था। कठिनता से निर्वाह करता था पर भाग्यवश इसका विवाह लखपति पिता की सुन्दरतम सुशील कन्या से हुआ तथा कई संतानें भी हुईं। जातक विवाहोपरांत भी कठिनता से निर्वाह कर रहा है। लग्नेश बुध, आयेश-चन्द्र तथा पंचमेश शनि तीनों अष्टम भाव में हैं। अतः यह स्पष्ट है कि जातक का न तो व्यक्तित्व है, न उच्च कुलीन परिवार, न आय के मजबूत स्त्रोत्र हैं। परंतु मीन राशि का शुक्र उच्च होकर केन्द्रस्थ है, जिसने दाम्पत्य जीवन को उच्च बनाया, साथ ही शुक्र भाग्यस्थान का भी स्वामी है एवं धनभाव का भी स्वामी है तथा सप्तम भाव में है तो ससुराल से धन प्राप्त हुआ, सुन्दर पत्नि प्राप्त हुई, गहरा दहेज भी प्राप्त हुआ। मुफ्त में उच्च स्तर भी मिला। जातक का विवाह शुक्र की दशा में बुध की अंतर्दशा में सम्पन्न हुआ।



[कुण्डली दर्पण]

जातक स्त्री से सुखी, उदार, लोकप्रिय, धनिक, लोकप्रिय, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधु प्रेमी, कामी, अल्प व्याभिचारी, चंचल, विलासी, मानप्रिय भाग्यवान [पांचाग दिव...]

स्त्री की कुण्डली हो तो सर्वमान्य, पतिप्रिया, शास्त्ररता, धनवती, प्रभावी, कला-कुशल, सुंदर, उत्तम पति, रतिप्रिय, आभूषणयुक्त [स्त्री जातक विज्ञान]

८) यदि अष्टम भाव में हो तो मनुष्य धार्मिक प्रवृत्ति का, राजा की सेवा में तत्पर, नौकरी में सफल, अधिकारियों का प्रिय, सहायक मित्रों एवं संबंधियों का। वृद्धावस्था सानन्द तथा शिकार में रुचि लेता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक वि देशवासी, निर्दय, रोगी, क्रोधी, ज्योतिषी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दरिद्र, दुखी, उद्धत स्वभाव, सुंदर नेत्र, गर्वीली, धर्मवती, सुशील, दीर्घायु, धन की चिन्तक, परिजनों से निंदित (स्त्री जातक विज्ञान)

९) यदि नवम भाव में हो तो ऐश-आराम से जीवन व्यतीत करता है। २२वें वर्ष से भाग्योदय, बाल्यावस्था सुखद, मध्यकाल में कठोर परिश्रमी, यात्राओं का शौकीन, धार्मिक मामलों में कट्टर, पारिवारिक जीवन सफल, उच्च गुणों से सम्पन्न, मध्यकाल में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक आस्तिक, गुणी, गृहसुखी, प्रेम दयालु, तीर्थयात्री, राजप्रिय, धर्मात्मा (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धार्मिक, धनवती, कला से धनोपार्जन, तीर्थयात्री, सुन्दरी, सुशीला, सौभाग्यवती (स्त्री जातक विज्ञान)

१०) यदि दशम भाव में हो तो जातक की व्यापार में हानि, नौकरी में उन्नति के अवसर अधिक, धार्मिक क्षेत्र में सहिष्णु, काव्य, संगीत, नाटकादि में गहरी रुचि, मध्यकाल संघर्षशील पर वृद्धावस्था आनन्दमय, प्रसिद्ध, सादा जीवन, उच्च विचार होते हैं। (कुण्डली दर्पण)

जातक विलासी, ऐश्वर्यवान, न्यायवान, ज्योतिषी, विजयी, लोभी, धार्मिक, मानप्रिय, भाग्यवान, गुणवान; दयालु [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनी, बुद्धिमान, निरोगी, सत्यी, यशस्विनी, श्रेष्ठ, सम्मान्य, पतिप्रिया, संतानको प्रेमकरने वाली, साध्वी, ऐश्वर्यशाली [स्त्री जातक विज्ञान]

११) एकादश भाव में हो तो जातक मनमौजी, आय के अनेक स्त्रोत्र फिर भी व्यय बढा चढा रहता है, शिक्षण काल में कई व्यवधान आते हैं। नौकरी में सफल नहीं क्योंकि अधिकारियों के साथ खींचातानी रहती है। सजावट पर खर्च करने वाला, तडक-भडक तथा शान से रहने वाला, प्रेम के क्षेत्र में अग्रणी। जीवन में सफल होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान, लोकप्रिय, परोपकारी, जौहरी, धनवान, गुणज्ञ, कामी, पुत्रवान (पंचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री लाभवती, निर्दोष, शास्त्रों की जानकार, आज्ञायुक्त, सत्कर्मी, सदैव लाभ प्राप्त करने, हास्य-प्रिय, नृत्यगीतादि में रुचि, सुंदर (स्त्री जातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक सौभाग्यशाली, बाल्यकाल साधारण जातक का विवाह जल्दी हो जाता है। ससुराल साधारण श्रेणी का, ससुर की अपेक्षा साले से अधिक लाभ। संतान सुख श्रेष्ठ। लडकों की संख्या अधिक। बच्चों के द्वारा जातक का नाम विख्यात होता है। आय के कई स्त्रोत्र पर व्यय भी बढाचढा रहता है। परिवार से विशेष लाभ नहीं, जातक 'सेल्फ मेड मैन' होता है। बाहरी स्थानों व व्यक्तियों से जातक का गहरा संबंध होता है। जीवन में मित्रों की संख्या बहुत

अधिक आमोद-प्रमोद, शृंगार आदि पर विशेष व्यय, धार्मिक क्षेत्रों में अग्रणी, तीर्थयात्रा का विशेष योग, विद्वान, कवि, कला प्रिय, प्रतिभाशाली, विख्यात होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक न्यायशील, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल, परस्त्रीरत, बहुभोजी, धनवान, मितव्ययी, शत्रुनाशक (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कपटी, दुर्बुद्धि, रोगिणी, कटुभाषी, दुर्बल, दुष्ट, व अधिक व्ययी। बाल्यावस्था में बीमार। (स्त्री जातक विज्ञान)

शनि

१) प्रथम भाव में हो तो जातक का श्याम वर्ण, स्थूल शरीर, छोटी-२ पर पैनी आँखें, लम्बा तगडा शरीर, संकरा तथा अंदर खिंचा हुआ सीना, चालाक, कुटील स्वभाव होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक धनाढ्य, सुखी यदि मकर या तुला का हो अन्य राशियों का हो तो दरिद्री [पॉंचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुरूप, कृष्णवर्ण, क्रोधी, बंधुसुखरहित, दरिद्र, नीच, रोगी। यदि शनि उच्च या स्वक्षेत्री हो तो स्वस्थ, धनवती [स्त्रीजातक विज्ञान]

२) द्वितीय भाव में हो तो शुभ नहीं। शनि अकारक हो तो जातक दुखी, परेशान, धनहीन होता है। धन के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है। यदि शनि कारक हो तो बाल्यावस्था दुखद पर यौवनावस्था और वृद्धावस्था सफल होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक मुखरोगी, साधुद्वेषी, कटुभाषी। कुम्भ या तुला का हो तो धनी, कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी, लाभवान [पॉंचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दरिद्र, अपयशी, रुग्णा, घातकी, सुखहीन, लोगों के विरोध में बोलने वाली, प्रारम्भिक अवस्था में दुखी, निर्धन। बाद में उद्योग से कुछ धन, सुख [स्त्री जातक विज्ञान]

३) तृतीय भाव में हो तो जातक के छोटे भाई होते नहीं। अगर हों तो भी जातक को उनसे विशेष लाभ नहीं होता। जातक साहसी, वीर, क्रोधी, क्रूर, भयंकर से भयंकर काम करने में भी नहीं हिचकिचाता।

बड़े भाइयों की तरफ से परेशान, संघर्षों में जीता है, कठोर परिश्रमी, शत्रुओं से खिलवाड करने में आनन्दित, नियमों का पाबंद। मित्र भी अपने जैसे चुनता है। स्थानीय स्वशासन का मुखिया होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक नीरोगी, योगी, विद्वान, शीघ्र कार्यकर्ता, मल्ल, सभाचतुर, विवेकी, शत्रुहन्ता, भाग्यवान व चंचल (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री श्रेष्ठ, धन-धान्य सम्पन्न, शरणागतों की आश्रय, साधु संतों से प्रशंसित, दक्ष, बुद्धिमान, स्व-धन से लालन पालन, सहोदर होना (स्त्रीजातक विज्ञान)

४) चतुर्थ भाव में हो तो व्यक्ति बाल्याकाल में अस्वस्थ, भाईयों का जीवन में कोई महत्त्व नहीं। माँ को तृणवत समझ कर जीवन से बाहर कर देता है। जीवन में सदा अप्रसन्न तथा मानसिक रुप से अस्वस्थ रहता है। जीवन में सदा चिन्तित, मानसिक परेशानी के साथ-२ हीन भावना का आधिक्य रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक बलहीन, अपयशी, कृश, शीघ्रकोपी, कपटी, भाग्यवान वातपित्तयुक्त उदासीन (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री चंचल, दुष्ट, मतिमन्द, नीचों की संगति, दरिद्र, दुखी, मलिन, आलसी, कलहकारिणी, वात-पित्त रोगी (स्त्री जातक विज्ञान)

५) पंचम भाव में हो तो जातक का दिमाग ऊलजलूल विचारों से ग्रस्त, व्यर्थ की बातों में अधिक ध्यान देता है। आय की अपेक्षा व्यय की अधिकता रहती है। यदि शनि उच्च का हो तो पैरों में बीमारि लो देता है। जीवन में निरन्तर उत्थान पतन देखने पड़ते हैं। मित्रों से वाद-विवाद

शनि
होता रहता है। ये योजनाएं बनाने में सफल होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक वातरोगी, भ्रमणशील, विद्वान, उदासीन, संतानयुक्त, आलसी, चंचल (पाराशर दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री निर्दय, गर्वीली, पुत्रहीना, वेश्या जैसी, ~~स्वच्छ, प्रतिष्ठित, संतोषी स्वभाव~~, दुर्बुद्धि, धनहीन, रोगिणी [स्त्री जातक विज्ञान]

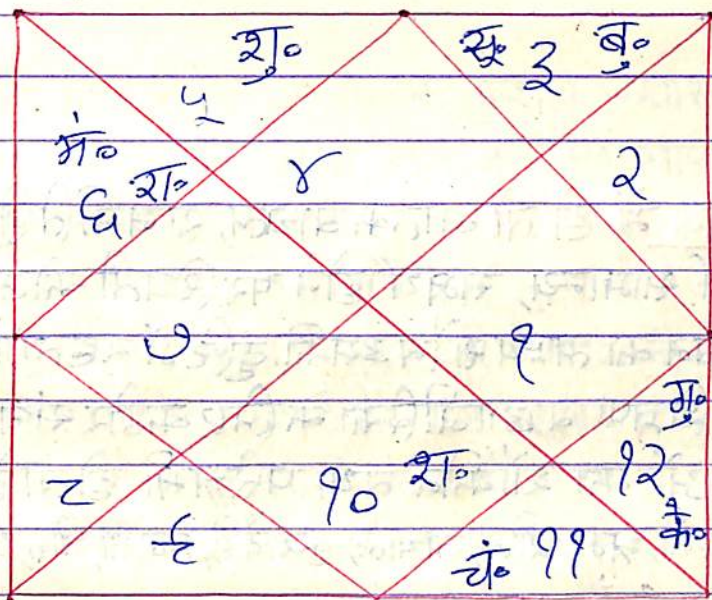
६) यदि षष्ठ भाव में हो तो जातक वीर, साहसी, लडाकू, भोजन का शौकीन, साहसी होता है। इसके अधीन कर्मचारी इससे लाभान्वित नहीं रहते, मित्रों के ओर से इसे धोखा खाना पडता है। यदि मंगल शनि हों तो पेट के आपरेशन के दौरान मृत्यु हो जाती है। राहु तथा शनि का संयोग (स्त्री की कुण्डली में) हिस्टीरीया रोग उत्पन्न कर देता है। यदि शनि उच्च का हो तो सम्मान में वृद्धि तथा कुल विस्तार में सहायक होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक शत्रुहन्ता, भोगी, कवि, कण्ठ-श्वासरोगी, जातिविरोधी, व्रणी, बलवान, आचारहीन (पाराशर दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री मंदमति परंतु गुणी, पुत्रवती, धनी, पुत्रों को प्रिय, रोग- शत्रुहीन, पुष्ट, धनवती, गुणवती, गुरुजनों की सेविका, प्रतिष्ठित, संतोषी। [स्त्री जातक विज्ञान]

७) सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री सुख से वंचित। शनि निर्बल हो या अन्य स्थानों पर बैठे शुभ ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो स्वल्प पत्नी सुख। जातक कठोर हृदय, उन्नति के कार्यों में तत्पर

होता है परंतु सुख एकांगी ही कहा जा सकता है। इस कुण्डली में सप्तमभाव में शनि स्वगृही है, अष्टमेश होकर मारक भी हो गया है। इस प्रकार पूर्ण बलवान मारक ग्रह होकर सप्तम भाव में बैठने से गृहस्थ जीवन पूर्णतः नष्ट कर दिया है। जाया कारक शुक्र भी दूसरे भाव में बैठकर मारक ही बना, अतः जाया कारक ग्रह निर्बल रहा। इसके साथ ही सप्तम भाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी नहीं है। (कुण्डली दर्पण)



जातक क्रोधी, निर्धन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, आलसी, स्त्री भक्त, विलासी, कामी (पांचांग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री रोगी, कपटी, द्वेषी, मध्यपान प्रिय, पति सुख से हीन, निर्धन, शोक-संताप, निन्दितकर्मी (स्त्री जातक विज्ञान)

८) यदि अष्टम स्थान में हो तो जातक लम्बी उम्र प्राप्त करता है। घर से दूर रहकर आजीविका प्राप्ति में कष्टरत रहता है। जातक को परिवार से विशेष स्नेह नहीं मिलता। बाल्यावस्था कष्टदायक, यौवनकाल संघर्षशील। यदि शनि क्षीण हो तो चोरी का इल्जाम लगता

है या झूठा मुकदमा चलता है। गलतफहमियों के कारण इसे बुरा समझ लिया जाता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक कपटी, वाचाल, कुष्ठरोगी, डरपोक, धूर्त, गुप्तरोगी, विद्वान, स्थूल, उदार (पंचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री अधर्मी, पापी, धोखेबाज, कृश, दुष्ट, क्रोधी, नेत्ररोग असंतुष्ट, पति व संतान सुख रहित। (स्त्री जातक विज्ञान)

९) यदि नवम भाव में हो तो जातक वाचल, राजनीति निपुण, जीवन के प्रारम्भिक वर्ष सामान्य, समर्थ होने पर स्थिती को अनुकूल बना लेता है। जीवन का लक्ष्य सदैव उसकी दृष्टि में रहता है, धैर्यपूर्वक कार्य करता है, शिक्षण व आजीविका के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है। यात्राओं का शौकीन तथा परिश्रमी होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक वातरोगी, भ्रमणशील, वाचाल, कृशदेही, प्रवासी, भीरु, धर्मात्मा, साहसी, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक (पँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दुष्ट, नीचलोगों की संगति, अधिक खर्च करने वाली, ज्ञान व नम्रता रहित, निरादर करने वाली, धनहीन, गर्विता, कपटी, आचारहीन अपने जैसा पति (स्त्री जातक विज्ञान)

१०) यदि दशम भाव में हो तो जातक धनवान, नौकरी में प्रगति करने वाला, आजीविका के लिए परिश्रमी, संगीत आदि में रुचि, मौज-मस्ती करने वाला, भोगी, रहन सहन का प्रदर्शन अधिक रहता है। आकस्मिक खर्चे भी आते रहते हैं। माता पिता से विचारों में मतभेद, फलस्वरूप पारिवारिक कलह, कठोर परिश्रमी, खूब यात्राऐं, प्रौढ़ावस्था सफल। (कुण्डली दर्पण)

जातक नेता, न्यायी, विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी, अधिकारी, चतुर, महत्वाकांक्षी, निरुद्योगी, परिश्रमी, भाग्यवान, उदरविकार, राजमान्य, धनवान (पंचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुकर्मी, दुष्ट-संगति, व्यसनी, दरिद्र, सुखी, सम्पन्न, रोग-शत्रु रहित, मृदृ कार्य में कुशल, ऐश्वर्यशाली [स्त्री जातक विज्ञान]

११) यदि एकादश भाव में हो तो जातक कुशल प्रशासक, उच्चपदस्थ अधिकारी, व्यक्तित्व अत्यंत भव्य, समाज में सम्मानित, आय के कई स्तोत्र, स्थायी आमदन, व्यापारिक क्षेत्र में सफल, परिवार में सम्मानित, ३६वें वर्ष के बाद से पूर्ण भाग्योदय। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, क्रोधी, चंचल, शिल्पी, सुखी, योगाभ्यासी, नीतिवान, परिश्रमी, व्यवसायी, विद्वान, पुत्रहीन, न्यायप्रिय, रोगहीन, बलवान [पांचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, निर्भय, ~~ज्ञानी~~, धनवान, लाभयुक्त, पुत्रवती, सदाचारिणी, सौभाग्यवती, पतिव्रता, धनी, सुखी (स्त्री जातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक अत्यंत धनवान, प्रख्यात, बचपन साधारण, समाज तथा मित्रों में लोकप्रिय, यात्राओं का शौकीन, शिक्षा की दृष्टि से साधारण, नौकरी में प्रगति धीरे-२, स्वतंत्र व्यवसाय में जातक सफल, जीवन में उतार चढाव। अत्याधिक मित्र तथा प्रशंसक होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक अपव्ययी, उन्मादरोगी, व्यर्थव्ययी, व्यसनी, दुष्ट, कटु भाषी, अविश्वासी, मातुलकष्ट, आलसी [पांचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो रक्तवातकफ दोषी, व्यसनी, अविचारिणी, तिरस्कृत, निर्दय, आलसी, नीच संगति, रोगी, कलह- कारिणी, धनहीन, फिजूल खर्ची करने वाली होती हैं। [स्त्री जातक विज्ञान]

राहु

1) प्रथम भाव में हो तो जातक का श्याम वर्ण, स्थूल शरीर, छोटी-2 पर पैनी आँखें, लम्बा तगडा शरीर, सँकरा तथा अन्दर खींचा हुआ सीना, चालाक एवं कुटील स्वभाव। [कुण्डली दर्पण]

जातक दुष्ट, मस्तक रोगी, स्वार्थी, राजद्वेषी, नीचकर्मी, मनस्वी, दुर्बल, अल्पसंतान, कामी (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री के लाल नेत्र, चंचल, नीच, गुरुजनों का अनादर करने वाली, पापी, रोगी [स्त्री जातक विज्ञान]

२ द्वितीय भाव में हो तो जातक रोगी और चिडचिडा, पारिवारिक जीवन में कई व्याघात, आर्थिक दृष्टि से डाँवाडोल, बाल्यावस्था में द्रव्याभाव से पीडित, ज्यों-2 उम्र बढती है अर्थ संचय होता रहता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक परदेशगामी, अल्पसंतान, अल्पकुटुम्बसुख, कटुभाषी, अल्पधन संग्रहशील, क्रोधी (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनहीन, कामी, ज्यादा बोलने वाली, इधर-उधर घूमने वाली, पराये घर में रहने वाली, चोरनी [स्त्री जातक विज्ञान]

3) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक अत्यंत प्रभावशाली, पराक्रमी, ताकतवर, जान पहचान विस्तृत क्षेत्र में होती है तथा अपने प्रभाव से लोगों को अपने पक्ष में कर लेता है। सुन्दर दृढ शरीर, माँसल भुजाएँ, उन्नत वक्षस्थल, सामर्थ्ययुक्त व्यक्ति होता है। प्रारम्भ में

संकट पर शीघ्र ही मन लायक पद प्राप्त हो जाता है। उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है। जातक पुलिस या मिलिटरी में सफल। छोटे भाईयों से लाभ नहीं होता, हठी, मौलिक विचारों से युक्त होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक योगाभ्यासी, भ्रमणशील, दृढ, अरिष्टनाशक, प्रवासी, बलवान, विद्वान, व्यवसायी [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री छोटे भाई रहित, वाद विवाद में विजयी, उत्तम सन्तान, श्रेष्ट पति, धनवती, कीर्तिमति, सुखों से सम्पन्न (स्त्री जातक विज्ञान]

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक व्यवहारकुशल नहीं होता। बोलने में असभ्य तथा इसी कारण कई कार्य बिगाड लेता है। धोखेबाज, समय पडने पर बडे से बडे झूठ बोल लेता है। राजनीति क्षेत्र में सफल, पुत्रों की अपेक्षा कन्या सन्तान अधिक होती है। (कुण्डली दर्पण)

जातक असन्तोषी, दुखी, मातृक्लेश, क्रूर, कपटी, उदरविकार, मिथ्याचारी अल्पभाषी (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री पितृकुल से हीन सुख, बंधुसुखहीन, अधम पति व संतान, नीचों की संगति करने, दुष्ट, चुगलखोर (स्त्री जातक विज्ञान)

५) पंचम भाव में हो तो नुकसानदायक, मित्रों का अभाव, शत्रुओं से प्रतिपाडित, संतान दुःख, गृह कलह से चिंतित। जातक क्रोधी, हृदय का रोगी होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक उदररोगी, मतिमन्द, धनहीन, कुलनाशक, भाग्यवान, कार्यरत, शस्त्रप्रिय (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में राहु चन्द्र से दृष्ट, युक्त न हो तो एक पुत्र अन्यथा संतान हीन, कुमित्र, कुबुद्धि (स्त्री जातक विज्ञान)

६) षष्ठ भाव में हो तो जातक की कठिनाइयों को सुगम कर देता है। शत्रुओं में सम्मानित, शत्रु संहारक, बलवान होती है। जातक का धन लाभ तथा आयु भी श्रेष्ठ। पूर्ण सुख सुविधा प्राप्त करता है। शत्रु षड्यंत्र करते हैं। अस्थिर मस्तिष्क, मानसिक रूप से परेशान। यदि राहु उच्च राशि का हो तो निश्चय ही परस्त्रीगमन होता है। जातक गुप्तेन्द्रिय के रोग से पीड़ित होता है। ये दो प्रकार का जीवन जीते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक को विधर्मियों द्वारा लाभ, नीरोगी, शत्रुहन्ता, कमरदर्द, अरिष्टनिवारक, पराक्रमी, बड़े-2 कार्य करने वाला। (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री शत्रु व रोगरहित, धनवती, उत्तम बुद्धि, समस्त कार्यों में कुशल। (स्त्री जातक विज्ञान)

७) सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नी रोगिणी होती है तथा धन हानि कराती रहती है। स्त्री दुर्बुद्धि, संकीर्ण भी हो सकती है। यदि कोई सौम्य ग्रह सप्तम भाव को न देखे तो स्त्री विलासी, आभूषणप्रिय होती है। जातक भाग्यहीन होता है। बचपन में कठोर परिश्रमी व सद्गुणों को साथ लेकर चलने से भी निरन्तर बाधाएँ आती रहती हैं। जातक स्वस्थ, सुन्दर, साहसी, ईश्वरभीरु होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक स्त्रीनाशक, व्यापार में हानि, भ्रमणशील, वातरोगी, दुष्कर्मी, चतुर, लोभी, दुराचारी (पांचाग दिवाकर)

राहु

स्त्री की कुण्डली में स्त्री विधवा या अधम पति वाली, क्रोधी, कुरूप, चरित्र-हीन, मध्यम भाग्य [स्त्री जातक विज्ञान]

८) अष्टम भाव में हो तो जातक दीर्घायु, कवि, लेखक, पत्रकार, प्रकाशक, फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर। धर्म कर्म को समझते हुए उसकी ओर आंशिक अनुरुचि, बचपन में परेशान, जलघात या वृक्षपात दोनों ही संभव। गृहस्थ जीवन सुखद। भाग्योदय ३८ वें वर्ष से। उम्र ७० से ज्यादा [कुण्डली दर्पण]

जातक पुष्टदेही, गुप्तरोगी, क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दुर्बल, रोगी, पापी, धनवती, चोरकरने वाली, धनवती [स्त्री जातक विज्ञान]

९) नवम भाव में हो तो भाग्यवर्धक, अपने अधिकार प्राप्ति के लिए सचेष्ट,

अधिकारियों के आदेश से कठोरता से पालन करता है, गृहस्थ जीवन सफल (कुण्डली दर्पण)

जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, तीर्थाटनशील, भाग्यहीन, धर्मात्मा दुष्ट बुद्धि (पांचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री कुलाचार से विपरीत, शत्रु व रोग से पीड़ित, मलिन, भाइयों का उपचार करने वाली। [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) दशम भाव में हो तो जातक राजनीतिज्ञ। नौकरी में सफल, अफसर इनसे प्रसन्न, जीवन का अन्तिम काल स्वर्णवत। [कुण्डली दर्पण]

जातक आलसी, वाचाल, अनियमितकार्यकर्त्ता, मितव्ययी, संतानक्लेश, चन्द्र युक्त होने पर राजयोग। [पांचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री चंचल, दुष्ट, हठी, सुखरहित, वासना युक्त, पराये धन को ठगने वाली। [स्त्री जातक विज्ञान]

११) एकादश भाव में हो तो जातक प्रतिभा सम्पन्न, राजनीति पटु, जीवन के

ध्येय तथा अधूरा कार्य को कभी नहीं छोडता। परिवार तथा जाति वाले उन्नति में सहायक नहीं, सभी आवश्यकताऐं पूरी, शान-शौकत से जीवन बिताने की इच्छुक, व्यय के मामले में सावधान (कुण्डली दर्पण)

जातक मन्दमति, लोभहीन, परिश्रमी, अल्पसंतान, अरिष्टनाशक, व्यवसाय, कदाचित लाभदायक व कार्य सफल करने वाला। (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, सदाचारिणी, सत्यवादिनी, धन-वस्त्र सम्पन्न, सब कार्यों में सम्पन्न, सुख भोगने वाली (स्त्री जातक विज्ञान)

१२) द्वादश भाव में हो तो जातक प्रबल रुपेण शत्रुसंहारक, मित्रवर्धक, स्वंय जीवन में उन्नति करते हैं, बाल्यावस्था साधारण, पिता से सुख नहीं, पत्नी सुख प्रौढावस्था में कम। आय के अनेक स्तोत्र, व्यय अधिक, आर्थिक स्थिति साधारण, मित्र व प्रशंसकों का अभाव नहीं। सूझ-बूझ रखने वाले, न्यायशील, चतुर, कार्य-प्रवीण, ईश्वर में श्रद्धा (कुण्डली दर्पण)

जातक विवेकहीन, मूर्ख, परिश्रमी, सेवक, व्ययी, चिंताशील, कामी (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनहीन, धर्महीन, मतिमन्द, दूसरों की बात पर चलने वाली, पतिसुख रहित, फिजूलखर्ची होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

केतु

1) प्रथम भाव में हो तो रूखापन, चेहरे पर रक्तिमा, साहसी, स्वस्थ, भव्य आकृति, धोखेबाज, स्वार्थी, सिद्धांतों पर दृढ। [कुण्डली दर्पण]

जातक चंचल, भीरु, दुराचारी, मूर्ख। वृश्चिक का हो तो राहु सुखकारक, धनी, परिश्रमी। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री रोगी, पति को कष्ट देने वाली। केतु शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो पति-पुत्रादि सुख सम्पन्न। [स्त्री जातक विज्ञान]

2) द्वितीय भाव में हो तो जातक कटुभाषी, समय पडने पर धोखा भी देता है। जातक दृढनिश्चयी, पैतृक धन कम, भुजबल से ही धन कमाकर संचय करता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष की अपेक्षा आगे चलकर धनी। सूर्य एकादश भाव में उच्च का हो तो लखपति। [कुण्डली दर्पण]

जातक राजभीरु, विरोधी, मुखरोगी [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री बंधु विरोधी, धनहीन, केतु शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो धनी, कुटुम्ब सुखयुक्ता [स्त्री जातक विज्ञान]

3) तृतीय भाव में हो तो जातक शारीरिक दृष्टि से सुदृढ, नित्य नवीन व्यूह रचने वाला, प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध तरीके से करने वाला, जाता शान्त नहीं बैठता, प्रत्येक से झगडा मोल लेता है। शत्रुहन्ता। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, पैतृक धन कम, समाज में प्रतिष्ठित। पारिवारिक जीवन विशेष सुखी नहीं कहा जा सकता। [कुण्डली दर्पण]

जातक चंचल, वातरोगी, व्यर्थवादी, भूतप्रेतभक्त [पांचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनी, सुखी संतान, शत्रुहन्ता, छोटे भाई रहित [स्त्री जातक विज्ञान]

4) चतुर्थ भाव में हो तो जातक मानसिक रूप से परेशान, हीनभावना से ग्रस्त, माता पिता के साथ सम्बन्ध उचित, जातक पूर्ण मातृभक्त। परिवार में अशांति। जीवन में धन का अभाव होने पर भी ख्यातिलाभ करने में समर्थ। जीवन के अंतिम वर्ष असफल व कष्टदायक [कुण्डली दर्पण]

जातक चंचल, वाचाल, कार्यहीन, निरुत्साही, निरुपयोगी [पांचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री मातृ सुख विहीन। युवावस्था में कष्ट, पिता का उपर्जित धन नष्ट। [स्त्री जातक विज्ञान]

५) पंचम भाव में हो तो जातक दरिद्र, संतान सुख नगण्य, जीविका के लिए कठोर संघर्ष। पेट सम्बंधी बीमारियाँ तथा आपरेशन। वात रोग से पीड़ित। सहोदरों व बंधवों से परेशान। भाई धोखा दे सकते हैं। शिक्षा का अभाव उम्र भर खटकता है। भावनाओं में वशीभूत होकर गलत कार्य कर बैठता है जिससे परेशान। मुक्कदमेबाजी, सट्टा, अनर्गल कार्यों में फिजूल खर्च। पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध ज्यादा सफल। (कुण्डली दर्पण)

जातक कुबुद्धि, कुचाली, वातरोगी। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री थोड़े पुत्र वाली, गृह कार्य कुशल, मलिन बुद्धि, झगड़ालू, भाई को कष्ट देने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

केतु

6) षष्ट् भाव में हो तो जातक हठी, लक्ष्य तक पहुँचने वाला, मुँह पर स्पष्ट शब्दों में खरी कहना स्वभाव, चरित्र संदिग्ध। ननिहाल से विशेष लाभ नहीं। जातक शत्रुहन्ता, सुख भोगने वाला, स्वस्थ, सुंदर, प्रसिद्ध। (कुण्डली दर्पण)

जातक वात-विकारी, झगडालू, भूत-प्रेतजनित रोग, मितव्ययी, अनिष्ट नाशक, सुखी (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री शत्रु-रोगरहित, मलिन हृदय, धनवती, भूमि पशु आदि से सम्पन्न (स्त्री जातक विज्ञान)

7) सप्तम भाव में हो तो जातक का निर्धन ससुराल, स्त्री की ओर से चिंता, यदि वृषलग्न हो तो जातक को ससुराल से सहायता। जातक सेल्समैन, जीवन में कई यात्राएं, आजीविका के लिए कठोर परिश्रमी। जातक को जलाघात या वृक्षपात की आशंका, पैरों में कमजोरी। जातक परिश्रमी परन्तु आय की अपेक्षा व्यय अधिक। जातक हिम्मती, साहसी, प्रतिभावान होने के कारण स्थिति को अपने अनुकूल बना लेता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक मतिमन्द, मूर्ख, शत्रुभीरु, सुखहीन (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री पति को पीड़ा देने वाली, धननाशी। सदैव व्यग्र, शत्रु-भयभीत (स्त्री जातक विज्ञान)

८) अष्टम भाव में हो तो जातक को युवावस्था में बवासीर या जीवन में सवारी से गिरकर चोट। आर्थिक दृष्टि से सामान्य। कई बार लाटरी या आकस्मिक धन भी प्राप्त हो जाता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दुर्बुद्धि, तेजहीन, दुष्टजनसेवी, स्त्रीद्वेषी, चालाक [पांचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धन वाहन युक्त, परंतु पति को कष्ट। स्त्री के गुप्तांग में भी रोग। [स्त्री जातक विज्ञान]

९) नवम भाव में हो तो जातक निश्चय ही राजनीतिज्ञ तथा सफल. जीवन के मध्य में प्रख्यात। जातक विपरीत परिस्थितियों में ही उभरता है। जीवन में उत्थान-पतन फिर भी जातक लक्ष्यच्युत नहीं होता। अनेक यात्राएं, शत्रुहन्ता [कुण्डली दर्पण]

जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थ परिश्रमी, अपयशी। [पांचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री उत्तम पुत्र वाली, शत्रु व रोग रहित, सत्कर्मी, नीच लोगों से धन लाभ। [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) दशम भाव में हो तो जातक संघर्षी, संयमी, नौकरी में प्रगति नहीं, न ही मातृ सुख प्राप्त। व्यापार में सफल, बाल्याकाल में कष्ट, उत्तरार्द्ध में ख्याति। जातक विद्वान, विचारक, नीतिवान। (कुण्डली दर्पण)

जातक पितृद्वेषी, दुर्भागी, मूर्ख, व्यर्थ परिश्रमी, अपयशी, अभिमानी। (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दुखी, पिता सुख से वंचित। केतु कन्या का हो तो धन-धान्य सुख सम्पन्न (स्त्री जातक विज्ञान)

११) एकादश भाव में हो तो जातक अच्छी स्थिति में, नौकरी में विशेष प्रगति नहीं, फिर भी आय के अनेक स्तोत्र। ३१ वें वर्ष से आर्थिक स्थिति शुभ, जीवन में अनेक उतार चढाव, कभी-२ धोखा भी खाना पडता है। जातक चतुर, समय को पहचानने वाला। (कुण्डली दर्पण)

जातक बुद्धिहीन, निज का हानिकर्ता, वातरोगी, अनिष्टकारक (पांचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सब कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाली, प्रियवादिनि शास्त्र, निपुण, सुन्दर वेष वाली, सौभाग्यवती (स्त्री जातक विज्ञान)

१२) द्वादश भाव में हो तो जातक पूर्णतः संघर्षशील, जीवन में निरंतर उत्थान-पथन, जातक दृढ़ता से कठिनाइयों का सामना करता है। प्राय स्वतंत्र व्यवसाय या लेखन से। ऐसा जातक सफल, आर्थिक स्थिति सुदृढ, जातक ईश्वरभीरु, समस्त आवश्यकताऐं पूरी हो जाती हैं। [कुण्डली दर्पण
जातक चंचल, धूर्त, ठग, अविश्वसासी, तंत्र विद्या से ठगने वाला [पांचांग दिवाकर
स्त्री की कुण्डली में स्त्री पति को कष्ट देने वाली, शत्रुहन्ता, व्यर्थ खर्च करने वाली, पाँव तथा नेत्र रोगी (स्त्री जातक विज्ञान)

द्वितीय भाव

१) धन किस दिशा से प्राप्त होगा

इसे जानने से पहले नीचे ग्रह और राशि की दिशा स्पष्ट की जा रही है÷

सूर्य	पूर्व दिशा।
चन्द्र	वायव्य दिशा।
मङ्गल	दक्षिण दिशा।
बुध	उत्तर दिशा।
गुरु	ईशान दिशा।
शुक्र	अग्निकोण।
शनि	पश्चिम दिशा।
राहु	नैऋत्य कोण।
केतु	नैऋत्य दिशा।

मेष	पूर्व
वृष	दक्षिण
मिथुन	पश्चिम
कर्क	उत्तर
सिंह	पूर्व
कन्या	दक्षिण
तुला	पश्चिम
वृश्चिक	उत्तर
धनु	पूर्व
मकर	दक्षिण
कुम्भ	पश्चिम
मीन	उत्तर

धनेश जिस राशि में बैठा हो, उस राशि की दिशा में विशेष अर्थ लाभ। यदि उस राशि में कोई ग्रह बैठा हो तो उसी ग्रह की दिशा में

की दशा में सम्बन्धित दिशा से अर्थ लाभ। [कुण्डली दर्पण]

२) किस समय भाग्योदय होगा

जीवन का एक सर्वोच्च समय होता है। वह समय कब आयेगा देखने की विधि नीचे है÷

प्रत्येक ग्रह के मूलांश नीचे हैं÷

सूर्य- ७ शुक्र- ५
चन्द्र- ३ शनि- १
मंगल- १० राहु- ०
बुध- ६ केतु- ०
गुरु- ८

इस विधि का प्रयोग निम्न है।

(१) द्वितीय भाव में राशि का अंक
(२) लग्न में राशि अंक
(३) चतुर्थ में राशि अंक
(४) नवम, एकादश भाव के राशी अंकों को जोडकर (यदि कोई ग्रह इन भावों में हो तो उसके मूलांश भी जोडें, १२ से भाग दें। जो बचे उसे धनेश स्थित राशि से गिनें, जो राशि आवे उस राशि के स्वामी की दशा में पूर्ण भाग्योदय [कुण्डली दर्पण]

३) कुछ विशेष योग

1) अकस्मात धन प्राप्ति योग, यदि शनि द्वितीयेश होकर ४, ८, १२ वें भाव में हो तो तथा बुध सप्तम भाव में स्वगृही हो तो अकसमात् धन प्राप्ति योग। बुध की महादशा, शनि की अन्तर्दशा आने पर पूरा लाभ

२) अकस्मात धन नाश योग, यदि चन्द्र स्वगृही, द्वितीयेश; अष्टम भाव में शनि तो परस्पर महादशा-अन्तरदशा में धन नाश।

३) पैतृक धन नाश योग → यदि धन भाव का स्वामी बुध गुरु के साथ हो तथा गुरु अष्टम भाव में हो तो जातक पिता का धन नाश करता है।

४) धन-नाश योग → यदि द्वितीयेश सूर्य लग्न में शनि के साथ हो तो जातक मुकदमेबाजी में धन नाश करता है।

५) अचल सम्पत्ति नाश योग → यदि धनेश बुध के घर का होकर उसके साथ दूसरे भाव में हो, मंगल चौथे भाव में हो तो अचल सम्पत्ति नाश।

६) धन संग्राहक योग → यदि धन भाव का स्वामी मंगल एकादश भाव में पड़कर दूसरे घर को देख रहा हो तो जातक धन संग्रह योग।

७) धन-असंग्राहक योग → धन भाव का स्वामी गुरु स्वगृही होकर धन राशि में हो, शुक्र द्वादश भाव में हो तो धन असंग्राहक योग।

८) धन वृद्धि योग → द्वितीयेश गुरु उच्च होकर नवम भाव में हो तो धन वृद्धि योग। जातक स्वंय भी धन संग्रह करता है, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त।

९) कोषवृद्धि योग → धनेश सूर्य हो, लग्न में उच्च का गुरु हो तो जातक लखपति

१०) लक्ष्मी योग → लग्नेश बलवान हो, नवम भाव का स्वामी स्वगृही हो तो अटूट सम्पत्ति योग।

११) धन योग → लग्न से पाँचवी राशि शुक्र की हो, शुक्र शनि पाँचवे या ग्यारहवें भाव में हो तो अटूट सम्पत्ति योग।

१२) श्री योग → लगन से पाँचवी राशि मिथुन या कन्या हो, एकादश भाव में चन्द्र मंगल हो तो श्री योग। जातक विशेष धनवान

13) कमला योग ⇒ लग्न से पाँचवी राशि मकर या कुम्भ हो, बुध व मंगल 11वें भाव में हो तो जातक धनी

14) वित्त योग ⇒ लग्न से पाँचवी राशि सिंह हो, सूर्य उसमें स्थित हो, चन्द्र-गुरु 11वें भाव में हो तो वित्त योग अर्थात जातक लखपति।

15) स्तखंड धन योग ⇒ लग्न से पाँचवी राशि धनु या मीन, 11वें भाव में चन्द्र- मंगल हों तो जातक लखपति

तृतीय भाव

१) भ्रातृ संबंधी योग

१) ३,६,११,७ ये चारों भाव भ्रातृकारक हैं। अतः इन स्वामियों की दशा में जातक को भ्रातृ लाभ।

२) तीसरे स्थान का स्वामी, स्थित ग्रह, देखने वाले ग्रहों में जो बलवान हो उसकी दशा में भ्रातृ लाभ।

३) बलहीन मंगल तृतीय भाव में हो तो जातक का दीर्घायु भाई।

४) तृतीयभावपति निर्बल, पाप ग्रह, कारक हो तो भाईयों का नाश।

५) तृतीयेश व मंगल अष्टम भाव में हो तो जातक के सामने भाई की मृत्यु।

६) मंगल की स्थिति से भाइयों का विचार करें।

७) राहु या केतु तीसरे भाव में हो तो जातक के बडे भाई की मृत्यु।

८) बलवान द्वितीयेश अष्टम हो, पापयुक्त भ्रातृकारक ग्रह तृतीय व चतुर्थ भाव के कारक से भी युक्त हो तो सौतेली माँ से उत्पन्न भाई।

९) तृतीय भाव पापयुक्त हो तो जातक का भाई अल्पायु

१०) सूर्य पाप ग्रह युक्त तृतीय भाव में हो तो बडे भाई की मौत।

११) मंगल पाप ग्रह युक्त होकर तृतीयभाव में हो तो जातक के सभी भाई मृत।

तृतीय भाव

१२) तृतीय भाव से त्रिकोण या केन्द्र में पाप ग्रह हो तो भाई का नाश, शुभ ग्रह हो तो भ्रातृ वृद्धि

१३) चतुर्थेश व तृतीयेश दोनों चौथे भाव में हो तो जातक को पूर्ण भ्रातृ सुख [कुण्डली दर्पण]

२) मातृ संबंधी विचार

१४) चन्द्र ६,८,१२ वें भाव में तीसरे भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु बाल्यकाल में। [कुण्डली दर्पण]

३) भ्रातृ संबंधी योग

१५) तीसरे शनि भाई का नाश, किंतु केतु वृद्धि करने वाला होता है।

१६) तृतीयेश पाप युक्त सप्तम भाव में हो तो जातक का लघु भ्राता नहीं

१७) लग्न, द्वितीय, तृतीय भाव में जितने ग्रह या जितनों की दृष्टि उतने भाई, बहिन।

१८) द्वितीय, तृतीय भाव में कुल जितने ग्रह होते हैं उतने भाई।

१९) शुभग्रह तृतीयभाव में सुख, पाप ग्रह दुख देने वाला (भ्रातृसुख-दुख)

२०) तृतीयेश व भौम स्त्री ग्रह की राशि में हों तो जातक के बहन होती है, यही दोनों ग्रह भाई-बहिन को सुख देते हैं।

२१) तृतीय भाव में चन्द्र, शुक्र हो तो जातक की बहन होती है।

२२) भ्रातृकारक, सहज का स्वामी, तृतीय भाव से सम्बन्धित ग्रह अपनी दशा में शुभ फल देते हैं।

२३) नवम भाव से भाई की स्त्री का फल (तृतीय भाव से सप्तम)

२४) लग्नेश, भौम, तृतीयेश से भाई के सुख दुख का विचार।

२५) लग्नेश व तृतीयेश यदि एकत्र हों तो भाईयों में प्रेम, यदि अपने भावों में लग्न व तृतीय भाव हों तो भाईयों में विरोध।

२६) कारक, सहजेश, सहजदर्शी, सहजस्थ ग्रहों को योग करने पर जितने नवांश हों जातक के उतने भाई। (कुण्डली दर्पण)

४) भ्रातृ अरिष्ट योग

१) यदि लग्नेश, सहजेश निर्बल तथा परस्पर शत्रु ग्रह हों अथवा तृतीय भाव का कारक दुष्ट स्थान में निर्बल हो तो भाईयों में परस्पर कलह।

२ तीसरे भाव में शुक्र हो, उसे गुरु देखता हो जातक भाईयों का पालक

३) तृतीयस्त बुध को सूर्य देखता हो तो भाई अशक्त।

४) भ्रातृ भावस्त, भावेश, कारक यदि नीच, शत्रु राशि में हों तो उनकी दशा अंतर्दशा में भाईयों का अरिष्ट। (कुण्डली दर्पण)

५) पराक्रम योग

१) तृतीयेश उच्च होकर अष्टम में हो तथा पाप ग्रह के साथ हो तो जातक युद्धोन्मादी।

२) तृतीयेश बलहीन तथा तृतीयेश शुभ ग्रह से युक्त, दृष्ट तो जातक मिलटीरी में होता है।

तृतीय भाव

3) तृतीयेश सूर्य के साथ हो तो वीर। चन्द्र के साथ हो तो धैर्यवान, गुणी। भौम के साथ हो तो दुष्ट, जड, क्रोधी। बुध के साथ हो तो सात्विक बुद्धि। गुरु के साथ हो तो धीर, गुणयुक्त, शिक्षित। शुक्र के साथ हो तो कामी व भोगी। शनि के साथ हो तो मूर्ख, राहु के साथ हो तो डरपोक, केतु के साथ हो तो हृदय रोगी।

4) लग्न में गुरु, तृतीयेश से युक्त हो तो पशु का शिकार में चोट।

5) जलचर लग्न में गुरु, तीसरे भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक की मौत जल में डूबकर।

6) मंगल युक्त ग्रह बली हो तो जातक पराक्रमी।

7) मंगल, तृतीयेश, तृतीयस्थ तीनों ग्रह बलवान हो तो जातक सेनाधिकारी [कुण्डली दर्पण]

६) कुछ विशेष योग

1) बन्धु पूज्य योग — चौथे भाव या चतुर्थेश को गुरु देखे तो जातक भाईयों व कुटुम्ब में आदरणीय।

2) रवि योग — दशम भाव में सूर्य हो, दशमेश शनि युक्त तीसरे भाव में हो तो रवि योग। जातक नौकरी में उच्च पदासीन, वैज्ञानिक। जीवन के 15वें साल के बाद प्रसिद्ध।

3) चन्द्र योग — समस्त ग्रह यदि 3, 5, 7, 9, 11 वें भाव में हो तो जातक भूमिपति, नौकरी में आज्ञा चलती है, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न

4) भ्रातृ मूल धन प्राप्ति योग — लग्नेश व द्वितीयेश तीसरे भाव में हो तो जातक को भाईयों से पूर्ण सहायता।

तृतीय भाव

५) भ्रातृवर्धन योग ⇒ तृतीयेश या मंगल या तीसरा भाव कारक ग्रह से युक्त, दृष्ट हो तो भाईयों का पूर्ण सुख।

६) सहोदरनाश योग ⇒ तृतीयेश व मंगल आठवें भाव में हों तो जातक को भाइयों से लाभ नहीं तथा आँखों के सामने समस्त भाई मृत

७) एकभगिनी योग ⇒ बुध, मंगल, तृतीयेश तीनों तृतीयस्त हों तो जातक की एक बहन।

८) द्वादश सहोदर योग ⇒ तृतीयेश केन्द्र में हो, मंगल व गुरु त्रिकोण में बैठकर इनमें से कोई तृतीयेश को देखता हो तो जातक के बारह भाइ-बहन

९) सप्त संख्य सहोदर योग ⇒ द्वादशेश व भौम साथ में हों, चन्द्र-गुरु तृतीय भाव में शुक्र द्वारा दृष्ट हों तो भाईयों से लाभ।

१०) पराक्रम योग, तृतीयेश कारक ग्रह के साथ हो तथा सूर्य उच्च या स्वराशिगत हो तो पराक्रम योग। जातक सैनिक, युद्ध में पूर्ण विजय

११) युद्ध प्रवीण योग → मंगल, कुण्डली व नवांश दोनों में स्व या उच्च राशि गत हो तो जातक युद्ध में प्रवीण।

१२) संहारक योग → तीसरे भाव में मंगल, राहु या शनि बलवान होकर बैठे हों तो चाहे कुण्डली में अन्य अनिष्टकारक योग नष्ट हो जाते हैं।

(कुण्डली दर्पण)

१) वाहन योग

वाहन कारक – शुक्र
वाहन भाव – चतुर्थ भाव

१) चतुर्थेश बली हो तो वाहन सुख अच्छा।

२) चौथा भाव अच्छे अंशों से युक्त हो तो भी वाहन सुख अच्छा।

३) चतुर्थेश वाहन भाव बुध के साथ हो तो साधारण वाहन योग।

४) चन्द्र लग्नेश होकर चतुर्थेश के साथ बैठा हो तो जातक को वाहन-सुख प्राप्त

५) दूसरे या चौथे भाव में शुभ राशि का चन्द्र हो तो साधारण वाहन-सुख।

६) चतुर्थेश चन्द्र के साथ लग्न में हो तो वाहन सुख मिलता है।

७) चतुर्थेश शुक्र के साथ लग्न में हो तो उच्च कोटि की वाहन प्राप्ति।

८) बलवान शुक्र और चन्द्र त्रिकोण या केन्द्र में हो तो उच्च वाहन योग।

९) चन्द्र यदि गुरु से दृष्ट हो तो उच्च वाहन प्राप्ति।

१०) शुक्र, चन्द्र और चतुर्थेश लग्नेश के साथ हो तो उच्च वाहन योग।

११) गुरु चतुर्थेश, चन्द्र और शुक्र एकत्र होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो उच्च वाहन प्राप्ति योग।

12) चतुर्थेश गुरु के साथ या गुरु से दृष्ट हो तो उच्च वाहन योग।

13) चतुर्थेश शुभ ग्रह के साथ दशम भाव में हो तो उच्च वाहन योग।

14) चतुर्थेश केन्द्र में हो और उसके केन्द्र का स्वामी लग्न में हो तो जातक को उच्च वाहन प्राप्त।

15) दशम भाव का स्वामी एकादश भाव में हो और द्वितीयेश दसवें भाव में हो तो उच्च वाहन योग।

16) चतुर्थेश, नवमेश, लग्न में हों या सप्तम भाव में हों तो उच्च वाहन

17) चतुर्थेश चन्द्र और शुक्र के साथ एकादश भाव में हों तो उच्च वाहन

18) लग्नेश और सप्तमेश चौथे भाव में हों तो जातक को उच्च वाहन।

19) चतुर्थेश केन्द्र में हो और पापग्रहमुक्त हो तो उच्च वाहन सुख

20) चतुर्थेश, दशमेश केन्द्र में हों तो वाहन सुख

21) बलवान शुक्र चौथे भाव में बैठा हो तो उच्च वाहन योग।
(कुण्डली दर्पण)

2) विशेष योग

1) राज्य लक्षण योग ⇒ चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र चारों ग्रह चौथे भाव या केन्द्र में हों तो जातक हँसमुख, उच्च व्यक्तित्व, धीर, सर्वगुण, सौभाग्यशाली होता है।

2) काहल योग → चतुर्थेश और नवमेश केन्द्र स्थानों में हों तथा आमने-

सामने बैठे हों तो तथा लग्नेश बलवान हो सेना में उच्च पद।

3) हंस योग → गुरु स्वराशिगत होकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो जातक का चुम्बकीय व्यक्तित्व, धनवान, उत्तम सवारी से विभूषित

4) मालव्य योग → यदि शुक्र स्वराशिगत होकर चतुर्थस्थ हो तो जातक उच्च दिमाग, केन्द्रीय सरकार में उच्च पद पर आसीन, सौभाग्यशाली।

5) शश योग → यदि शनि स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव में हो तो जातक राजनीति में पटु, चारित्रिक दृष्टि से शिथिल।

6) रुचक योग → मंगल स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो जातक ऊँचा, लम्बा, दृढ़, व्यापारी, सेना में उच्च पद।

7) भद्र योग → बुध यदि स्वराशिस्थ चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो जातक बलवान, स्वस्थ, वृद्धावस्था में पूर्ण सुख

8) पुष्कल योग → लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान होकर चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो जातक बलवान, प्रसिद्ध, मधुरभाषी।

9) वाहन योग → शुक्र बलवान होकर चतुर्थेश के साथ चतुर्थस्थ हो तो जातक जीवन भर उच्च वाहन सुख भोगता है।

10) मातृ सौख्य योग → चन्द्र चतुर्थेश के साथ चतुर्थस्त हो तो पूर्ण मातृसुख

11) गृह योग → लग्नेश शुक्र चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह दृष्टि युक्त हो तो उत्तम भवन योग।

१२) लक्ष्मी योग → मंगल चौथे, शुक्र १२वें, एकादश भाव में उच्च का सूर्य हो तो जातक विद्वान, पराक्रमी, सौम्य, सुखी, भाग्यशाली। [कुण्डली दर्पण]

३) उच्च वाहन प्राप्ति समय

पहले ग्रहों की मूल कलाऐं देखें

सूर्य	३०
चन्द्र	१६
मंगल	६
बुध	८
गुरु	१०
शुक्र	११
शनि	१
राहु-केतु	०

अब निम्न तथ्यों पर ध्यान दें

१) चतुर्थेश की कलाऐं
२) शुक्र की कलाऐं
३) चतुर्थस्थ ग्रह की कलाऐं
४) चतुर्थ भाव को देखने वाले ग्रहों की कलाऐं

इन सब का योग कर १२ से भाग दें। जो शेष बचे उसे चन्द्रराशि से आगे गिनें। जो राशि आवे उस राशि के ग्रह की दशा में, शुक्र की अन्तर्दशा पर उच्च वाहन योग। [कुण्डली दर्पण]

पंचम भाव

पंचम भाव के बारे में पाठकों को चाहिए की वे संतान के विषय में बीज-कुण्डली (पति की कुण्डली) तथा क्षेत्र-कुण्डली (पत्नि की कुण्डली) दोनों का अध्ययन करें। यदि बीज एवं क्षेत्र कुण्डली दोनों श्रेष्ठ हो तो संतान श्रेष्ठ। यदि बीज कुण्डली मजबूत हो तो लडके अधिक यदि क्षेत्र कुण्डली मजबूत हो तो लडकियाँ अधिक। यदि दोनों कुण्डलियों में पंचम भाव निर्बल हो तो संतान कम, अल्पायु

स्त्री की कुण्डली में पंचमेश का अध्ययन करने के साथ मंगल-चन्द्र का भी अध्ययन करें।

पुरुष की कुण्डली में सूर्य व शुक्र (वीर्य) का पंचमेश के साथ अध्यन करें।

1) संतान संख्या

(1) पंचम भाव पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो, उससे उस भाव के गत नवांश संख्या को गुणाकर २०० से भाग दें। लब्धि तुल्य संतान

(2) पंचम भाव की राशी छोडकर अंशों की कला बनाऐं, फिर जिन-२ ग्रहों की शुभ दृष्टि हो, उनसे क्रमशः गुणा कर ६० का भाग दें। जो लब्धि प्राप्त हो, उसे फिर २०० से विभाजित करें। जो लब्धि प्राप्त हो उतने ही पुत्र होंगे।

पाप ग्रहों की दृष्टि से पैदा हुए पुत्रों का नाश समझें।

(कुण्डली दर्पण)

2) पुत्र योग

1) सप्तमेश पंचम भावस्त हो तो जातक स्त्री या पुत्र रहित।

2) लग्नेश पंचम भाव में हो, पंचमेश लग्न में हो तो जातक का दत्तक

3) शुभ राशिस्थ पंचमेश केन्द्र त्रिकोण में हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो बाल्यावस्था में पुत्र।

४) पुत्रेश और धनेश बल रहित हो, पुत्र(पंचम) भाव पाप ग्रह से दृष्ट हो तो जातक निस्संतान।

५) पंचम भाव या पंचमेश शुभ ग्रह दृष्ट हो, युक्त हो तो निस्संदेह पुत्र।

६) पूर्णबली गुरु पंचम भाव में हो तो पुत्र बुद्धिमान।

७) चन्द्र दशम, शुक्र सप्तम भाव में हो तो, पाप ग्रह चौथे भाव में संतान नाश करते हैं।

८) लग्नेश ६ या ८वें भाव में हो, पंचम भाव पाप ग्रह युक्त हो या शत्रु ग्रह देखते हों तो पुत्र हानि।

९) गुरु लग्नेश, सप्तमेश और पंचमेश सभी निर्बल हों तो जातक की दुर्बल संतति।

१०) पंचम भाव में बुध या शनि की राशि हो तो जातक के दत्तक पुत्र।

११) पंचमेश मंगल संग हो, छठे भाव का स्वामी उसे देखता हो तो पुत्र शत्रुओं से मृत।

१२) लग्न में मंगल हो, अष्टम या चतुर्थ भाव पर सूर्य की दृष्टि हो तो विलम्ब से संतान। (कुण्डली दर्पण)

३) बुद्धि योग

१३) पंचमेश ६, ८, १२ वें स्थान में हो तो जातक (स्वगृहीन होने पर) मंद बुद्धि होता है।

14) यदि पंचमेश बुध और गुरु से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक तीक्ष्ण बुद्धि, समझदार, संकेत को समझने वाला होता है।

15) गुरु अपने ही नवांश में हो या शुभ षष्ट्यांश में हो तो जातक समझदार, तदानुकूल कार्य करने वाला होता है। [कुण्डली दर्पण]

षष्ठ भाव

१) रोग व मानव शरीर

छठे भाव में जो राशि होती है, उससे सम्बन्धित अंग ही प्रभावित। यदि छठे भाव की राशि शुभ, शुभ ग्रह से युक्त हो तो वह अंग ठीक। परन्तु यदि वह राशि पाप ग्रह युक्त हो तो वह अंग कमजोर, निर्बल। इसी प्रकार अकारक षष्ठेष जब-२ जिन-२ राशियों पर जाएगा, उन राशियों से सम्बन्धित अंग पीड़ित होंगे।

नीचे प्रत्येक राशि से संबंधित अंग दिए जा रहे हैं।

मेष - सिर, चेहरा, मस्तिष्क
वृष - गर्दन, गिल्टियाँ, गले का भीतरी भाग, कंठ
मिथुन - कँधे, हाथ, फेफड़े, रक्त, माँस, भुजाएं, ~~सीना, छाती, पेट~~
कर्क - सीना, छाती, पेट, हँसली, छाती की हड्डियाँ
सिंह - पीठ, कमर, हृदय, रीढ की हड्डी
कन्या - लीवर, तिल्ली, गुर्दा, पीठ
तुला - चमड़ी
वृश्चिक - लिंग, भग, गुदा द्वार, जंघाऐं
धनु - कमर, नाड़ियाँ
मकर - घुटने, हड्डियों के जोड़, घुटने की टोपी
कुम्भ - पाँव, टखने, पाचन संस्थान
मीन - एडी, पाँव का निम्न भाग

नीचे प्रत्येक ग्रह से संबंधित अंग हैं ÷

सूर्य - हृदय, रक्त, मस्तिष्क, स्त्रियों की बाईं, पुरुषों की दाईं आँख
चन्द्र - पुरुषों की बाईं, स्त्रियों की दाईं आँख, स्तन, आँतें, लसीका।
मंगल - नाक, ललाट, पाचन व स्नायु संस्थान
बुध - नाड़ियाँ, फेफड़े, जीभ, भुजाऐं, मुख, केश
गुरु - दाहिना कान, लीवर
शुक्र - हिचकी, ठोडी, रंग, बायाँ कान, गिल्टियाँ
शनि - हड्डियाँ, दाँत, घुटने, कफ

जब षष्टेश पापी या अकारक ग्रह हो और गोचर में भी पापराशि पर स्थिर हो तो तो उस राशि से सम्बन्धित अंग को चोट। यह सम्भावना निम्न अवसरों पर हो सकती है:-

1) षष्टेश की दशा में
2) षष्टेश की अन्तर्दशा में
3) सम्बन्धित राशि की दशा या अन्तर्दशा में

यदि निम्न ग्रह अकारक होकर षष्टेष या षष्टस्थ हो जाए तो उनकी दशा-अन्तदर्शा में निम्न रोग हो सकते हैं

सूर्य- बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बीमारी, चर्मरोग, घाव, जलना, दौरे पड़ना, हिस्टीरिया

चन्द्र- अनिद्रा, कफ सम्बन्धी, पाचन क्रिया का बिगड़ना, अजीर्ण, ठंडा बुखार, गठिया, मानसिक असंतुलन, पेट की बीमारियों, जलाघात, जानवरों का हमला

मंगल- गले की बीमारी, कण्ठ रोगी, खून विकार, गठिया, बुखार, आगजनी, जहर, नेत्र रोग, दौरे पडना, बेरी-2 रोग, सिर दर्द, रक्त सम्बन्धित रोग

बुध- दिमागी फितूर, नाक-कान रोग, वात कठिनाई, पित्त-भेद, चमडी के रोग, कोढ़, जहर, गिरना, ऊँचाई से गिरना

गुरु- पेट में गैस, बुखार, कान से मवाद, वायुयान दुर्घटना

शुक्र- कोढ़, वात, पित्त, कफ, वीर्य विकार, नेत्र-पीडा, मूत्र पीडा, गुदा रोग, गर्भाशय, कमजोरी, पेढू का दर्द

शनि- पेटरोग, पैर-रोग, गैस, पेड से गिरना, पत्थर से चोट आना।

राहु- दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर, आत्महत्या, पाचन संबंधी बीमारी

केतु → घाव पड़ना, घाव का सड़ जाना, जलना, राहु से संबंधित बीमारी

जब-२ भी षष्ठेश या अकारक ग्रह बलवान होंगे या षष्ठेश का इन ग्रहों में से किसी भी ग्रह के साथ संबंध होगा, तब-२ इन ग्रहों से सम्बन्धित बीमारियाँ मनुष्य को पीड़ित करेंगी।

नीचे राशियाँ व उनसे सम्बन्धित रोग हैं:-

मेष, वृश्चिक = नेत्र रोग, बुखार, घाव, चमड़ी कट या जल जाना।
वृष, तुला = स्वादहीनता, शर्करा की कमी, गुप्त रोग, ठंडा बुखार
मिथुन, कन्या = दाद, नाक व चमड़ी सम्बन्धी रोग
कर्क = शर्करा का आधिक्य, मुँह में छाले, जीभ रोग, दिल का दौरा
सिंह = नेत्र रोग, पेट रोग
धनु और मीन = कर्ण पीड़ा, स्मरण शक्ति लुप्तता, चेतनाहीन, मस्तक में विकृति, पेट में गैस, जोड़ दुखना, हाथ पैर दूखना या पसीना निकलना।
मकर और कुम्भ = पेशाब रोग, गर्मी बढ़ जाना, घाव या पीव पड़ना, नाक में घाव, जोड़ों में दर्द।

प्रत्येक ग्रह की एक ऋतु होती है जिसमें वह निर्बल होते हुए भी बलवान हो जाता है

सूर्य - ग्रीष्म	गुरु - हेमन्त
चन्द्र - वर्षा	शुक्र - वसन्त
मंगल - ग्रीष्म	शनि - शिशिर
बुध - शरद्	(कुण्डली दर्पण)

२) कुछ शरीर संबंधी योग

1) षष्ठेश और बुध राहु के साथ होकर लग्नेश से संयोग रखते हों तो जातक नपुँसक।

२) मंगल, लग्नेश के साथ छठे भाव में हो तो घाव से लिंग में रोग।

३) गुरु व केतु छठे भाव में शुभ।

४) षष्ठेश बली होकर शुभग्रह हो तो जातक शत्रुहन्ता।

५) षष्ठेश और षष्ठस्थ ग्रह शुभ ग्रह हो और केन्द्र में हो तो साधारण रोग नाश

६) षष्ठेश से युक्त अष्टमेश में पाप ग्रह हो तो जातक को बवासीर।

७) षष्ठेश से युक्त सूर्य ६,८ भावों में हो तो जातक गंजा।

८) लग्नादि जिस राशि में राहु हो, शुक्र उसे देखता हो तो वह राशि शरीर के जिस भाग से संबंधित हो उस भाग में व्रण।

९) षष्ठेश बलहीन होकर पाप ग्रह युक्त हो तो शत्रुओं से युद्ध करते जातक की मृत्यु।

१०) षष्ठेश द्वादश भाव में हो तो नेत्र रोग

११) षष्ठेश दुष्ट स्थान में हो, लग्नेश बली हो तो जातक शत्रुहन्ता

१२) षष्ठेश गोपुरांशादि में हो तथा सूर्य से दृष्ट हो, साथ ही लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक सत्कर्मी, निरोगी, वीर, शत्रुहन्ता (कुण्डली दर्पण)

सप्तम भाव

१) विवाह काल

१) लग्नेश और सप्तमेश की स्पष्ट राश्यादि के योग तुल्य में जब गुरु आता है तो विवाह काल।

२) शुक्र और चन्द्र में जो बली हो तथा जिसकी दशा पहले आती हो उसकी दशा में, गुरु की अन्तर्दशा में विवाह।

३) दशमेश की महादशा और अष्टमेश के अंतर में विवाह।

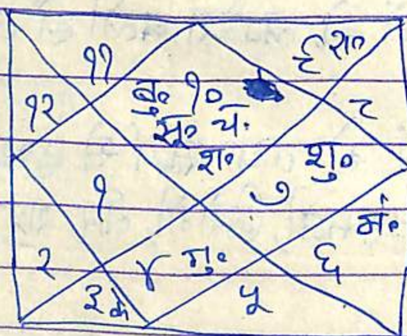
४) सप्तमेश की महादशा, सप्तमस्थ ग्रह की अंतर्दशा में विवाह।

५) शुक्रयुक्त सप्तमेश की दशा में भुक्ति विवाह।

६) सप्तमेश व शुक्र के ग्रह में जब चन्द्र व गुरु हों तथा उससे केन्द्र में जब गोचर का गुरु आ जाए, तो निस्संदेह विवाह [कुण्डली दर्पण]

२) ससुराल की दिशा

शुक्र से सप्तम भाव के स्वामी की जो दिशा होती है, उसी में ससुराल होता है (जातक के जन्म स्थान से)



प्रस्तुत कुण्डली में शुक्र तुला राशि में है, सप्तम भाव मेष राशि है जिसका स्वामी मंगल है। मंगल की दिशा दक्षिण है, अतः जातक के जन्म

स्थान से दक्षिण में उसका ससुराल। नीचे प्रत्येक ग्रह की दिशा दी गई है

सूर्य	शुक्र
चन्द्र	शनि
मंगल	राहु
बुध	केतु
गुरु	

[कुण्डली दर्पण]

2) कुछ विशेष योग

(1) सप्तम भाव में शुक्र, चन्द्र, बुध, गुरु ये सब या इनमें से जो ग्रह हो जातक की स्त्री का वैसा स्वभाव

(2) सप्तम भाव में मंगल हो, उस पर शनि की दृष्टि हो तो जा के दो संयोग

(3) यदि सप्तमेश छठे भाव में हो तो जातक की पत्नी चिरकाल तक रोगिणी

(4) मंगल व सप्तमेश दोनों सप्तम भाव में हों तो जातक की स्त्री रोगिणी।

(5) सप्तम भाव में बुध, शुक्र हो तो जातक को संतान का अभाव

(6) सप्तमेश अष्टम भाव में हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु।

(7) लग्नेश और षष्ठेश पाप ग्रह युक्त हो तो जातक कामी।

(8) यदि पापग्रह षष्ठेश, धनेश, लग्नेश से युक्त होकर सप्तम भ

सप्तम भाव

में हो तो जातक परस्त्रीगामी।

यदि पापग्रह षष्ठेश, धनेश, लग्नेश से युक्त हो गुरु, बुध सप्तम भाव में हो तो जातक का सम्बन्ध एक से अधिक स्त्रियों से होता है।

२) लग्न, सप्तम, द्वादश भाव में पाप ग्रह हों तो तथा निर्बल चन्द्र पंचम भाव में हो तो जातक की स्त्री बाँझ।

३) शुक्र व सूर्य सप्तम भाव या लग्न में हो तो जातक की पत्नी वन्ध्या

४) सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक की स्त्री दुराचारिणी।

५) सातवें भाव में मकर का गुरु हो तो अल्प स्त्री सुख

६) सप्तमेश उच्च राशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो या कर्मेश उसे देखता हो तो जातक को एकाधिक स्त्रियाँ।

७) सप्तमेश केन्द्र में हो, शुभग्रह से दृष्ट हो तो जातक की पत्नी सुशील, पतिभक्त [कुण्डली दर्पण]

ज्ञान

अष्टम भाव

1) मारकेश

जन्म लग्न	प्रथम श्रेणी मारकेश	द्वितीय श्रेणी
मेष	मंगल	बुध
	गुरु	मंग.
	गुरु	चन्द्र
	शनि	सूर्य
	बुध	गुरु
	गुरु	मंग.
	शुक्र	मंग.
	शुक्र	गुरु
	बुध	शनि
	चन्द्र	सूर्य
	गुरु	बुध
	बुध	मंगल

2) आयु साधन

पिण्डायु ⇒ आयु जानने का माध्यम

पिण्डायु हेतु प्रत्येक ग्रह के निश्चित ध्रुवांक (सातों ग्रह) तथा लग्न आठों की पिण्डायु निकाललें।

जिस ग्रह की आयु निकालनी हो उसके स्पष्ट बनाकर उसका उच्च घटा दें। यदि ६ राशि से कम हो तो उसे फिर १२ से घटा लें अन्यथा वैसे ही रहने दें। बाद में कलाएें बनाकर ग्रह के ध्रुवांक से गुणा कर २१६०० से भाग देने पर लब्धि वर्षादि होगी।

नीचे प्रत्येक ग्रह के ध्रुवांक व उच्चादि हैं:-

	उच्च राशि	ध्रुवांक
सूर्य	०।१०	१९
चन्द्र	१।३	२५
मंगल	९।२८	१५
बुध	५।१५	१२
गुरु	३।५	१५
शु		

अष्टम भाव

शुक्र	११।२७	२१
शनि	६।२०	२०

उदाहरणार्थ → एकजातकके ग्रह स्पष्ट ये हैं ÷

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	ग्रहा:
०	७	५	०	६	१	१०	राशी
७	५	१०	६	२८	१३	८	अंश
२६	३८	५९	५५	५२	४९	३०	कला
४७	०	११	५७	२६	३१	२	विकला
मा०	मा०	व०	मा०	व०	मा०	मा०	गति

सूर्य की पिण्डायु ⇒

०।१।२६।४७ − ०।१०।०।० ~~(६ से कम है)~~

= ११।२७।२६।४७ [६ से अधिकहै अतः घटानेकी जरूरत नहीं]

११×३० = ३३०+२७ = ३५७×६० = २१४२० ~~+~~ २६

= २१४४६ कलाऐं

= २१४४६×१९ [ध्रुवांश से गुणा]

= ४०७४७४

२१६०० से भाग देने पर

= १८ साल १० मास ११ दिन ३० घटी

इस प्रकार अन्य ग्रहों की ~~पिंडायु भी~~ पिंडायु भी आजायेगी

लग्नायु ⇒ लग्नायु के लिए पहले लग्न स्पष्ट करें जैसे लग्न स्पष्ट है

२।१३।२१।५३

अबि १ राशि = ~~००~~ नवांश खण्ड = १ वर्ष = ३ अंश २० कला

१ अंश = १ मास कला = १ दिन ४८ घटी

१ कला = १ दिन विकला = १ घटी ४८ पल

१ विक

इस प्रकार लग्नायु = 4 वर्ष 3 दिन 23 घटी 24 पल

पिण्डायु के नियम

1) शुक्र और शनि को छोड़कर अन्य कोई ग्रह अस्त हो तो आयु का आधा करें।
2) जो ग्रह शत्रुक्षेत्री, मार्गी हो तो आयु $\frac{2}{3}$ [उस ग्रह की]
3) पाप ग्रह यदि लग्न से द्वादश में हो तो आयु 0
4) ग्यारहवें पाप ग्रह हो तो आयु का आधा।
5) दशमे पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{2}{3}$
6) नवम भाव में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{3}{4}$
7) अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{4}{5}$
8) सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{5}{6}$
9) द्वादश भाव में शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{1}{2}$
10) ग्यारहवें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{3}{4}$
11) दशमे शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{5}{6}$
12) नवमे शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{7}{8}$
13) आठवें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{9}{10}$
14) सातवें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{11}{12}$

जो आठों की आयु आए उसे जोड़ लें। [कुण्डली दर्पण]

1) नवम भाव सम्बन्धित कुछ योग

1) नवमेश और गुरु शुभ वर्ग में हों, भाग्य भाव शुभ ग्रह से युक्त हो तो जातक भाग्यवान

2) पापग्रह भी यदि उच्च राशि का होकर नवम भाव में हो तो जातक भाग्यशाली

3) नवमेश नवम भाव में हो तो जातक भाग्यशाली

4) चन्द्र- बुध, चन्द्र गुरु नवम भाव में श्रेष्ठ कारक ग्रह।

5) नवमेश जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी भी भाग्यवर्धक

6) लग्नेश लग्न को देखता हो, भाग्येश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक उच्च पद पर ख्याति प्राप्त करता है।

7) तृतीय, पंचम या लग्नस्थित बलवान ग्रह भाग्य भाव को देखें तो जातक भाग्यवान।

8) धनेश द्वादशस्त, दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक भाग्यशाली

9) लाभेश नवम भाव में दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक उच्च पद पर आसीन।

10) लाभेश नवम भाव में, धनेश लाभस्थान में, नवमेश धन भाव में और दशमेश से युक्त या दृष्ट हो जातक जीवन में आनन्दित।

११) भाग्यस्थ गुरु पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक विविध वाहन सम्पन्न

१२) नवम स्थान पर उच्च का गुरु या शुक्र हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक इन्हीं दशा-अन्तर्दशा में निश्चय ही प्रधान न्यायधीश, MLA या शासन कार्य में उच्च पदाधिकारी होता है।

१३) नवमस्थ गुरु पर सूर्य-बुध की दृष्टि होने से जातक को सम्पन्न विद्वान तथा लेखक होता है। चन्द्र-मंगल की दृष्टि से सेनाधिकारी।

१४) नवम भाव में चन्द्र-बुध ~~हो~~ जातक को पंडित बना देते हैं।

१५) नवम भाव में उच्च का या स्वगृही शनि हो तो जातक खूब विदेश यात्राएं करता है। [कुण्डली दर्पण]

२) भाग्योदय काल]

१) सप्तमेश या शुक्र ३,६,७,१०,११वें स्थान में हो तो जातक का भाग्योदय विवाहोपरांत होता है।

२) भाग्येश यदि सूर्य हो तो भाग्योदय २२वें वर्ष में, चन्द्र हो तो २४, मंगल हो तो २८, बुध हो तो ३२, गुरु हो तो १६, शुक्र हो तो २५, शनि हो तो ३६, राहु-केतु हों तो ४२वें वर्ष से भाग्योदय। [कुण्डली दर्पण]

दशम भाव

१) जातक की आय स्थिति [नई विधि]

अमुक जातक का राज्येश (दशम भाव का स्वामी) किस स्थिति में है तथा कैसा फल दे रहा है, इसके लिए इस विधि का प्रयोग करें

जन्म लग्न राशि को मेष से गिनो फिर जो अंक आवे, उसे दशम भावस्थ राशि से गुणा करो इस गुणनफल को दसमेश के दशा वर्षों से गुणा कर १२ से भाग दें। जो शेष बचे उसे निम्न तालिका में देखें

शेष बचे	स्थिति	फल
१	स्नान	साधारण
२	भ्रमण	साधारण
३	भोजन	साधारण
४	निद्रा	अत्यंत साधारण
५	पूजा	साधारण
६	दैनिकचर्या	मिश्रित
७	क्रोधित	निकृष्ट
८	आराम	निकृष्ट
९	प्रसन्न	उत्तम
१०	खेल	साधारण
११	वार्तालाप	मिश्रित
१२,०	दुखी	निकृष्ट

माना किसी जातक का लग्न कर्क है तो उसके दसमभावस्थ राशी मेष हुई इस प्रकार ४×१=४×७=२८÷१२=४ शेष। अतः निद्रा अर्थात फल अत्यं- साधारण [कुण्डलीदर्पण]

२) कुछ योग

१) दशम भाव से आगे दशम भाव का स्वामी भी साधारण श्रेणी का राज्येश

२) दशमेश शुक्र से युक्त केन्द्र में बैठा हो, द्वादश में बुध हो तो जातक महान पुण्यात्मा

3) लग्नेश और दशमेश एक साथ हों तो जातक को नौकरी में प्रगति।

4) बुध अपनी उच्चराशि में राहु केतु रहित होकर दशमेश के साथ नवम भाव में हो तो जातक धार्मिक।

5) राज्य स्थान से दशम भाव में पापग्रह या क्रूर ग्रह हो तो जातक साधारण

6) नवम, दशम, सप्तम, पंचम और लग्न ये पाँच भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक विश्व में विख्यात।

7) बलवान पाँच या चार ग्रह केन्द्र (1,4,7,10) अथवा त्रिकोण (5,9) में हों तो जातक वृद्धावस्था में सन्यासी।

8) शुक्र और चन्द्र बलहीन लग्नेश को देखते हों तो जातक साधारण स्थिति में।

9) नवम भाव में चन्द्र हो और उसे कोई भी ग्रह न देखता हो तो जातक निश्चय ही सन्यासी।

10) दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक गजेटेड आफिसर होता है।

11) लग्नेश शनि को देखता हो और अन्य ग्रह लग्नेश को न देखते हो तो भी प्रबल सन्यासी योग।

12) लग्न के दशम भाव में सूर्य हो तो पिता से धन मिले, चन्द्र हो तो माता से, मंगल हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो ससुराल से, शनि हो तो सेवक से, राहु केतु हो तो छल से धन मिले
(कुण्डली दर्पण)

3) व्यापार

13) दशमेश सूर्य के नवमांश में हो तो जातक दवा, ऊन, घास, धान्य, सोना, मोती आदि के व्यापार से लाभ।

14) चन्द्र के नवमांश में हो तो मोती, कृषि, मिट्टी के खिलौने, फैंसी स्टोर, रेडीमेड स्टोर से लाभ।

15) मंगल- ताँबा, पीतल के बर्तन व कोयले की दुकान से लाभ

16) बुध- लकड़ी का कारखाना, फर्नीचर, ज्योतिष, वैद्यक आदि से

17) गुरु- अध्यापन, स्टेशनरी आदि के व्यापार से लाभ

18) शुक्र- चौपायों की खरीदोफरोख्त से, गुड़- चावल, किराना व्यापार से लाभ

19) शनि- लोहे का व्यापार, तेल, तेल, ऊन आदि से लाभ।

20) लग्न से द्वितीय या एकादश में प्रबल ग्रह हों तो व्यापार से लाभ

21) दशमेश गुरु यदि त्रिकोण में हो तो जातक उच्च पद प्राप्त कर धनवान। [कुण्डली दर्पण]

१) आयेश विचार

लग्न राशी के अंको, द्वितीयभाव स्थित राशि के अंको, एकादशभाव स्थित राशि अंकों से गुणा करके ७ से भाग दें। जो बचे उसे लग्न भाव से आगे गिनें, जो राशि आये उसके स्वामी की दशा, एकादशेश की अन्तर्दशा में विशेष लाभ। [० शेष बचे तो उसका तात्पर्य १ समझें] (कुण्डली दर्पण)

२) कुछ योग

१) एकादश भाव में शुभ ग्रह हों तो शुभ कार्य से धन प्राप्ति, अशुभ ग्रह हो तो पाप कर्मों से धन लाभ

२) लाभ स्थान में दो या दो से अधिक बलवान ग्रह हों तो जातक गुणवान, मित्रवान, विभूषण, वस्त्र, स्त्री सम्पन्न होता है।

३। धनेश और लाभेश यदि लग्नेश हों तो सद्गुणों से धन-प्राप्ति

४। सूर्य लाभेश हो तो राज्य वर्ग से, चन्द्र हो तो स्वामी से, मंगल हो तो भाईयों से, या कृषि से, बुध हो तो विद्या व व्यापार से, गुरु हो तो व्यापक व्यवहार से, या शिक्षा से, शुक्र हो तो ससुराल-स्त्री से, शनि हो तो छल-कपट, राजनीति व ठगी से।

५। लाभ स्थान का स्वामी लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक धनवान। (कुण्डली दर्पण)

1) द्वादश भाव संबंधित विशेष योग

१) द्वादश भाव में चर राशि हो तथा दुष्ट ग्रह शनि से युक्त या दृष्ट हो तो जातक भ्रमणशील

२) द्वादश भाव में निर्बल ग्रह हो और द्वादशेश बली हो तो धन की हानि

३) षष्ठेश अथवा अष्टेश बलवान पाप ग्रह होकर १२वें भाव में हो तो जातक दिवालिया

४) व्यय भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक पुण्यात्मा एवं ~~धक~~ दानशील

५) यदि द्वादशस्थ ग्रह उच्च या स्वराशि का हो तो जातक परोपकारी।

६) द्वादश भाव में चन्द्र, शुक्र, गुरु हो तो जातक धनवान

७) द्वादशेश उच्च राशी का, स्व राशि या मित्र राशि हो तो जातक सुखी

८) शुक्र, शनि, केतु, ~~के~~ चन्द्र द्वादश भाव में हों तो जातक मध्यावस्था में प्रबल दुखी

९) लग्न में गुरु हो, सप्तम भाव में शुक्र, कन्या में चन्द्र हो तो जातक की मृत्यु की बाद सद्‌गति

१०) द्वादश भाव में पाप ग्रह हो तो जातक विख्यात व आदरणीय।

11) द्वादशेश लग्न में हो तो जातक परेशान।

12) द्वादश भाव में शुक्र उच्च या स्व राशि का होकर स्थित हो तो जातक विख्यात, कला प्रिय, धर्मात्मा, सुखी, ऐश्वर्यवान, लखपति होता है।
[कुण्डली दर्पण]

विंशोत्तरी दशा

~~१) जन्मनक्षत्र: दशाबोधकचक्र~~

~~सू० — चं० — मं० — रा० — गु० — श० — बु० — के० — शु०~~

जन्मनक्षत्र: दशाबोधकचक्र

सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
कृ०	रो०	मृ०	आ०	पुन	पुष्य	आ०	म०	पू०फा०
उ०फा०	ह०	चि०	स्वा०	वि०	अनु०	ज्ये०	मू०	पू०षा
उ०षा०	श्र०	ध०	श०	पू०भा०	उ०भा०	रेव०	अश्०	भर०

<u>भोग्य दशा निकालने की विधि</u> → जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ। फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आऐंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे। यह भुक्त दशा होगी [लघु पाराशरी]

<u>अन्तर्दशा निकालने की विधि</u> → जैसे सूर्य की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा निकालनी है तो। ६×६=३६। इसमें इकाई के अंक को तीन से गुणा करो ३।६×३=१८। अर्थात ३ मास १८ दिन [लघु पाराशरी]

१) पाप ग्रह यदि १, ५, ६ वें भाव में हों तो शुभ, शुभ ग्रह भी यदि ३, ६, ११ वें स्थान में हों तो अशुभ

२) सौम्यग्रह पूर्णचन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र यदि केन्द्र के स्वामी हों तो शुभफल नहीं देते। क्रूर ग्रह केन्द्र के स्वामी हों तो सामान्य

3) केन्द्र, त्रिकोण, त्रिक [केन्द्र-1,4,7,10 त्रिकोण-5,9 त्रिक-3,6,11] भाव के स्वामी क्रमशः प्रबल। अर्थात 4 भाव का स्वामी 1 से प्रबल, 7वें भाव का 4 से, 10 भाव का स्वामी 7 भाव से प्रबल

4) द्वितीयेश और द्वादशेश शुभ और अशुभ ग्रह के सम्बन्ध होने से, मित्र स्थान में होने से मित्र द्वारा शत्रु स्थान में होने से शत्रु द्वारा शुभ-अशुभ फल देते है।

5) जैसा ग्रह होता है उसकी दशा में वैसा ही फल प्राप्त होता है।

6) अष्टम स्थान का स्वामी यदि नवम स्थान या व्यय स्थान का स्वामी हो तो अशुभ, यदि लग्नेश हो तो शुभ।

7) केन्द्राधिपति दोष गुरु व शुक्र के विषय में प्रबल। [लघु पाराशरी]

मारकेश विचार

द्वितीय और अष्टम मारकों में अष्टम का मारक बली है, द्वितीयेश की अन्तर्दशा में मनुष्य की मौत, द्वितीय स्थान में जो पाप ग्रह होते हैं (षष्टेश, तृतीयेश और द्वादशेश) उनकी अन्तर्दशा में मृत्यु। यदि इन मारकेशों की दशा या अन्तर्दशा में मृत्यु न हो तो व्ययेश के जन्म लग्न से द्वादश स्थान के स्वामी की, या उसके साथी पाप ग्रहों की दशा या अन्तर्दशा में मृत्यु। स्वल्प [32 से कम] मध्यम [32 से 70 वर्ष तक], दीर्घ (70 से 100 वर्ष), उत्तमायु [100 वर्ष से अधिक] लग्नेश सूर्य हो तो जातक अल्पायु, शुक्र-शनि-चन्द्र हो तो जातक मध्यायु, बुध-गुरु-मंगल हो तो दीर्घायु, अल्पायु वाला जातक विपत्तारा में मरता है, मध्यायु वाला प्रत्यरि तारा में, उत्तमायु वाला मारक नक्षत्र में मृत्यु पाता है द्वादशेश, द्वादशस्थ पाप ग्रह और द्वादशेश के साथी

अन्य कोई न हो, तो द्वादशेश के साथी शुभ ग्रहों की दशा में मृत्यु या अष्टमेष ग्रह की दशा में भी मृत्यु।

पहिले सब प्रकार के मारकेशों में कोई भी न हो तो केवल पाप ग्रहों की दशा में ही मृत्यु। इस समय ३,६,१२वें स्थान के स्वामियों की दशा में मृत्यु होती है। चन्द्र और सूर्य को छोड़कर जो ग्रह मारक स्थान में होता है वह मारक है।

६,८,१२वें स्थान के स्वामी, राहु-केतु में जो ग्रह एकादश स्थान के नवमांश का स्वामी हो, वह मारकेश है। यदि शुभ ग्रह हो तो शरीर कष्ट, पाप ग्रह हो तो मौत

३,६,१२ स्थान का पाप ग्रह शनि मारक स्थान के स्वामियों के सम्बन्ध से और सब मारकों को हटाकर स्वयं मारक होता है। [लघुपाराशरी]

दशाफलाध्याय

मनुष्यों को सूर्य आदि समस्त ग्रह अपनी-२ दशा और अन्तर्दशा में अपने-२ स्वरुप के अनुसार शुभ-अशुभ फल प्रदान करते हैं।

जो ग्रह आपस में सम्बन्धी हैं या जो अपने समान हैं उन्हीं की अन्तर्दशा में शुभ अशुभ फल देते हैं।

जो शुभ होने से शुभ दशेश (दशा का स्वामी) के समान हैं, या अशुभ होने से अशुभ दशेश के समान हैं, उन्हीं की दशा में शुभ अशुभ फल देते हैं। जो ग्रह दशेश से सम्बन्ध नहीं रखते, या उसके समान हैं, किंतु दशेश के विरुद्ध फल दाता हैं उनकी अन्तर्दशा में फलानुसार दशेश शुभ फल देनेवाला है। परन्तु और ग्रह अशुभ फल दें तो उन ग्रहों की अन्तर्दशा में, दशेश भी शुभ फल देता है। [वह स्वयं शुभ फल नहीं देता]

केन्द्राधिपति अपनी दशा में सम्बन्ध होने पर त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में शुभ फल देता है, और त्रिकोणेश भी अपनी दशा

में केन्द्र के साथ यदि उसका सम्बन्ध हो, तो अपनी अन्तर्दशा में शुभ फल देता है। यदि दोनों का परस्पर संबंधन हो दोनों ही अशुभ।

यदि द्वितीयेश और सप्तमेश की अन्तर्दशा, राजयोग का प्रारम्भ होती है तो जातक के सुख सीमित रहते हैं।

राजयोग करने वाले ग्रहों की महादशा में उनके साथी शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा हो, या राजयोग करने वाले ग्रहों की अन्तर्दशा हो, दोनों में समान शुभफल होता है। इसी भाँति पाप ग्रह की महादशा में, उसके साथी पाप ग्रह की अन्तर्दशा ~~र~~ दोनों में अशुभ फल समान।

राजयोग कर्ता शुभ ग्रह की महादशा में उसके साथी राजयोग करने वाले अन्य शुभ ग्रह अपनी-२ अन्तर्दशा में कभी राजयोग करने वाले ग्रह की महादशा में जब राजयोग कर्ता ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब वह अपना पूरा फल देती है।

किसी राजयोग कारक ग्रह के साथ सम्बन्ध न रहने से राजयोग भ्रष्ट करने वाले राहु-केतु यदि केन्द्र त्रिकोण में हों तो राजयोग कारक ग्रह की अन्तर्दशा आने पर ही राजयोग का फल देते हैं। उसमें भी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में शुभ व अशुभ फल देते हैं।

यदि महादशा का स्वामी पाप ग्रह हो तो उससे सम्बन्ध न रखने वाले पाप ग्रहों की अन्तर्दशा अशुभ फल देती है। उसके संबंधी शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा मिश्रित फल देती है, उसके साथ संबंधन रखने वाले और राजयोग कारक पाप ग्रहों की अन्तर्दशा महा कष्ट कारक है।

मारक ग्रह के साथ यदि शुभ ग्रह का सम्बंध हो तो भी (शुभ ग्रह की दशा में) मारक मनुष्य के प्राण नहीं ले पाता, और सम्बन्ध न रहने ~~वाले~~ पर भी पाप ग्रह की दशा में मारक ग्रह मनुष्य के प्राण लेता ही है। इसको मारकेश

विंशोत्तरी दशा।

की दशा मे शुभ और पाप ग्रह की अन्तर्दशा ही मारक और रक्षक है और उसके साथ सम्बन्ध कुछ नहीं कर सकता।

शनि और शुक्र दोनो एक ही महादशा मे दूसरे की अन्तर्दशा आने पर अवश्य ही परिवर्तित शुभ और अशुभ फल देते हैं। तात्पर्य यह कि यदि शुक्र की महादशा मे शनि की अन्तर्दशा आ जाए तो शुक्र की दशा का फल नहीं। किंतु बदले में शनि की दशा का फल अशुभ ही होता है। इसी प्रकार शनी की महादशा मे शुक्र की अन्तर्दशा आवे तो शनि की दशा का अशुभ फल नहीं होता किंतु शुभ होता है।

यदि दशमेश और लग्नेश दोनों आपस में एक दूसरे के स्थान में हों तो राजयोग कारक।

यदि नवमेश दशमेश के स्थान में हो या दशमेश नवमेश के स्थान में हो तो राजयोग कारक। [लघु पाराशरी]

शुभ ग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा मे शुभ तथा अशुभ. ग्रह अशुभ ग्रह अशुभ फल प्रदान करते हैं।

जो ग्रह उच्च राशिस्त, मित्र राशि, स्व राशि गत हो, वह अपनी दशा-अन्तर्दशा में उच्च पद प्राप्ति, धन लाभादि शुभ फल प्रदान करते हैं।

जो ग्रह नीच राशि, शत्रु राशि, वक्री, अस्तगत हों वह अपनी दशा-अन्तर्दशा में धन हानि, कलह क्लेश, धन हानि, आदि अनिष्ट फल प्राप्त प्रदान करते हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी यदि परस्पर मित्र हो तो शुभ, शत्रु हों तो अशुभ

३, ६, ८, १२ भाव के स्वामी की दशा/ अन्तर्दशा प्रायः अशुभ केन्द्र त्रिकोणस्थ ग्रहों या केन्द्र-त्रिकोणेश ग्रहों की दशा/ अन्तर्दशा शुभ होती है। [पांचांग दिवाकर]

प्रश्न लग्न विचार [षट् पञ्चाशिका]

१) प्रश्न देखने का साधारण नियम

⇒ लग्न से च्युति (अर्थात स्थान में रहना या नहीं रहना, गमनागमन, वृष्टियोग, जेल से छूटने इत्यादि को) चतुर्थ स्थान से वृद्धि [गृह सुख], मित्र स्थान, नौकरी, प्रवासी का आना इत्यादि को सप्तम स्थान से निवृत्ति [यात्रा निवृत्ति, शत्रु निवृत्ति, रोग निवृत्ति, नष्ट वस्तु प्राप्ति निवृत्ति) का विचार करना चाहिए [षट् पंचाशिका]

प्रवासी का गमन → यदि चतुर्थ और सप्तम के मध्य में स्थित ग्रह हो तो प्रवासी को मध्य मार्ग स्थित कहना चाहिये अथवा उक्त स्थान में स्थान स्वामी को जितने दिन आये हुए हो गये हो उतने दिन प्रवासी को भी समझना चाहिए और आने में जितने दिन में ग्रह अपने स्थान को प्राप्त करेगा उतने दिन प्रवासी को भी समझना चाहिए और आने में जितने दिन में ग्रह अपने स्थान को प्राप्त करेगा उतने दिन प्रवासी को भी आने में भी देर होगी।

२) लग्नादि द्वादश भावों का शुभाशुभ कथन

⇒ जो भाव अपने स्वामी से युक्त हो या शुभ ग्रहों से युक्त हो या दृष्ट हो तो भावों का लाभ, विपरीत में हानि

३) प्रश्न लग्न स्थिति से लाभालाभ विचार

⇒ यदि लग्न में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रहों का षड्वर्ग लग्न में हो या शीर्षोदय राशि लग्न में हो तो शीघ्र कार्य सिद्ध होता है। इसके विपरीत रहने पर कार्य का नाश। शुभ ग्रह पाप ग्रह दोनों से सम्बद्ध हो तो कार्य कष्ट से सिद्ध होता है

- षड्वर्ग - गृह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश
- शीर्षोदय - सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मीन
- पृष्ठोदय - शेष, मीन

4) नष्ट वस्तु लाभालाभ विचार

⇒ यदि पूर्ण चन्द्र (अधिचिकचन्द्र) प्रश्न लग्न में हो और गुरु अथवा शुक्र से दृष्ट हो तो नष्ट वस्तु शीघ्र लाभ। बलवान शुभ ग्रह एकादश भाव में हो तो शीघ्र लाभ।

5) मूक प्रश्न विचार

⇒ यदि ग्रह अपने नवमांश में स्थित होकर लग्न में या नवमें, पाँचवें स्थित स्वनवांश को देखता है तो धातु की चिंता। अन्य ग्रह के नवमांश में रहकर स्वनांश स्थित लग्न या नवम पञ्चम को देखता हो तो जीव चिन्ता, अन्य ग्रह नवमांश स्थित लग्न या नवम पञ्चम को यदि देखता हो तो मूल चिंता

~~धातु - अधातु~~

6) प्रकरान्त से मूक प्रश्न विचार

⇒ विषम राशियों के नवांश में धातु चिन्ता, (2,4,8) नवमांश में मूल चिन्ता और (3,5,6 / 1,4,7) नवमांश में जीव चिंता। सम राशियों में इसके उल्टा।

नवमांश संख्या	1|4|7	2|5|8	3|6|9
विषम राशि	धातु	मूल	जीव
सम राशि	जीव	मूल	धातु

7) सर्ववस्तु विचार (गमनागमन, लाभालाभ, जीवितमरण आदि)

⇒ यदि स्थिर राशि प्रश्न लग्न में हो तो स्थान लाभ के प्रश्नोत्तर में स्थान लाभ, गमनागमन नहीं, रोगी की मृत्यु नहीं, नष्ट वस्तु प्राप्ति, रोग शान्ति नहीं, पराजय नहीं, प्रवासी स्थिर चर राशि में उल्टा। द्विस्वभाव के प्रथम भाग में थोड़ा स्थिर, अंतिम भाग में थोड़ा चर। लग्न व चन्द्र शुभ हो तो शुभ, अशुभ हो तो अशुभ

8) शत्रु विचार

⇒ शत्रु के गमनागमन विषय में यदि पाँचवें या छठे स्थान में पाप ग्रह हो तो शत्रु रास्ते से वापिस, चौथे पाप ग्रह हो तो आया हुआ शत्रु पराजित होकर लौट जाता है।

9) शत्रु निवृत्ति विचार

⇒ यदि चतुर्थ भाव में मीन, वृश्चिक, कुम्भ, कर्क इनमें से कोई राशि हो तो शत्रु की पराजय। यदि चतुष्पद (मेष, सिंह, धनु का उत्तरार्द्ध हो तो शत्रु आकर भाग जाता है।

10) शत्रु विशेष विचार

⇒ प्रश्नकाल में चर राशि लग्न में हो और शुभ ग्रहों सम्बद्ध हो तो यायी (पहले चढाई करने वाले) की विजय। यदि पापयुक्त चर लग्न हो तो यायी के लिए अशुभ। स्थिर लग्न में बलवान पाप ग्रह यायी के लिए शुभ, शुभ ग्रह अशुभ।

11) शत्रु विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न में चर राशि हो तथा स्थिर राशि में चन्द्र हो तो शत्रु शीघ्र आएगा। यदि स्थिर लग्न हो तथा चन्द्र चर राशि में हो तो विपरीत। यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न हो, द्विस्वभाव राशि में चन्द्र हो तो शत्रु अवश्य लौट जाता है। यदि द्विस्वभाव राशि लग्न में हो, चन्द्र चर राशिगत हो तो शत्रु आधे रस्ते से लौट जाएगा। यदि चर राशि प्रश्न लग्न में हो तथा द्विस्वभाव राशि में चन्द्र हो तो शत्रुओं का आक्रमण।

12) यायी विचार

⇒ यदि प्रश्नलग्न चर राशिगत हो तथा सू०, श०, बु०, शु० इनमें से किसी भी ग्रह से युक्त हो तो यायी राजा का गमन

शीघ्र होता है और यदि यही ग्रह वक्री होकर युक्त हो तो गमन नहीं होता।

13) शत्रु निवृत्ति ज्ञान विचार

⇒ यदि प्रश्नकाल में स्थिर राशि लग्न में हो, गुरु शनि से दृष्ट हो तो प्रश्न करने वाले के शत्रु का गमन या आगमन कुछ नहीं होता। यदि उपरोक्त स्थिति के अतिरिक्त 3, 5, 6 स्थान मे पाप ग्रह हो तो शत्रु से सुख। यदि उपरोक्त योग में पाप ग्रह चौथे हो तो शत्रु लौट जाता है।

14) शत्रु आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ स्थान में सू० या चं० बैठा हो तो शत्रु की सेना नहीं आती, यदि चौथे बु०, गु०, शु० बैठे हो तो शत्रु की सेना शीघ्र आती है।

15) शत्रु निवृत्ति विचार

⇒ यदि प्रश्नलग्न मे मेष, धनु, सिंह, वृषभ कोई भी लग्न हो या इनमें से कोई भी राशि चतुर्थ भाव में हो तो शत्रु लौट जाता है।

16) शत्रु आवागमन विचार

⇒ यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न शनि या गुरु से युक्त हो तो आया हुआ शत्रु मार्ग में ही रुक जाता है। यदि चर लग्न हो और सूर्य तथा गुरु से युक्त हो तो शत्रु अवश्य आता है।

17) इत्र संबंधे अन्य विचार

⇒ सर्वोत्तमबली ग्रह लग्न से यात्रा के समय जिस राशि में स्थित हो उतने संख्यक मास में यायी राजा लौट आयेगा यदि स्थिर राशि में ग्रह स्थित हो तो द्विगुणित करें, द्विस्वभाव में

हो तो त्रिगुणित करें। [प्रवासी के लिए भी ऐसा ही समझें]

१८) यायी आगमन विचार

⇒ सप्तमेश जब वक्री हो तो यायी राजा या परदेशी का आगमन

१६) शत्रु के नहीं आने का विचार

⇒ प्रश्नलग्न से, या प्रश्न नक्षत्र से जितने संख्यक चन्द्रलग्न या चन्द्र नक्षत्र हो, उतने ही दिनों में यायी या प्रवासी का आगमन। परन्तु अगर इन के मध्य में कोई ग्रह हो तो प्रवासी का आगमन नहीं होगा।

२०) शत्रुनिवृत्ति ज्ञान विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न या प्रश्नलग्न से सातवे अथवा दसवें शुभ ग्रह हो तो नगराधिप (स्थायी) की विजय। यदि प्रश्न लग्न से नवमें स्थान में शनि या मंगल हो तो नगराधिप नगर से हारकर भाग जाता है। यदि प्रश्न लग्न से नवमें स्थान में बुध, गुरु, शुक्र हो तो नगराधिप की विजय होती है।

२१) यातुनिवृत्ति ज्ञान विचार

⇒ प्रश्नलग्न के तृतीय से अष्टम स्थान तक 6 राशि की पौर (स्थायी) संज्ञा है। एवं नवम से द्वितीय तक 6 राशि की यायी संज्ञा है। यदि यायी स्थान में बली अधिक शुभग्रह हो तो यायी के लिए हितकर और यदि स्थायी स्थान में बली शुभग्रह अधिक हो तो स्थायी के लिए हितकर। इसके विपरीत (अर्थात पाप ग्रह के रहने से यायी स्थायी दोनों का विपरीत। यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें

स्थान में पाप ग्रह हो तो यायी के पुरवासियों का अनिष्ट और राजा को शुभ फल। [पौर, या प्रतिवादी, स्थायी तथा मुद्दालेह उसे कहते हैं जिस पर मुकदमा दायर या चढ़ाई की जाए। और यायी वादी तथा मुद्दई उसे कहते हैं जो मुकदमा दायर करे या चढ़ाई करे।]

२२) शत्रु-युद्ध विचार

⇒ यदि पुरुष संज्ञक राशि। तुला, मिथुन, कन्या, कुम्भ, धनु का पूर्वार्द्ध) लग्न में हो और शुभ ग्रह से युक्त हो, अथवा पुरुष राशि एकादश या द्वादश भाव में हो, और शुभ ग्रह से युक्त हो तो यायी और स्थायी दोनों में संधि (मेल) हो जाता है। यदि इन स्थानों में द्विस्वभाव राशि पाप ग्रह युक्त हो तो लड़ाई।

२३) यायी-स्थायी युद्ध विचार

⇒ यदि द्विपद संज्ञक राशि में शुभग्रह हो, अथवा केन्द्र में शुभग्रह हो, और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो यायी और स्थायी में संधि। यदि पाप ग्रह केन्द्र अथवा मनुष्य संज्ञक राशि में हो तथा पाप ग्रह से दृष्ट हो तो विरोध।

२४) शत्रु सेना आगमन का विचार

⇒ प्रश्नलग्न से २, ३ स्थान में गुरु या शुक्र हो अथवा दोनों हो तो यायी या प्रवासी शीघ्र लौट आयेगा।

२५) शुभाशुभ विचार

⇒ प्रश्नकालिक लग्न से यदि शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो और पापग्रह केन्द्र व अष्टम भाव के सिवाय अन्य भावों

में हो तो प्रश्नकर्ता को अभीष्ट कार्य सिद्धि अवश्य होजाती है। इसके विपरीत यदि केन्द्र त्रिकोण में पाप ग्रह हों और केन्द्र, त्रिकोण व अष्टम भाव के सिवाय अन्य किसी भाव में शुभ ग्रह हों तो विपरीत।

२६) लाभालाभ विचार

⇒ प्रश्नकालिकलग्न से ३,५,७ स्थान में शुभ ग्रह शुभ फल देते हैं। परन्तु यदि पाप ग्रह हों तो अशुभ। तुला, कन्या, मिथुन, कुम्भ यह पुरुष (द्विपद) संज्ञक राशि प्रश्न लग्न में हो तथा शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हों तो शुभ।

२७) लाभालाभ योग-विचार

⇒ यदि प्रश्नकालिकलग्न से शुभ ग्रह सातवें या दसवें स्थान में हों तो पृच्छक के लिए स्थान लाभकारक योग। और प्रश्न लग्न से, दूसरे तथा पांचवे स्थान में शुभ ग्रह हो तो पृच्छक के लिए मान तथा द्रव्य लाभकारक योग है। यदि पाप ग्रह ११वें, १२वें स्थान में हों तो अशुभ। यदि क्षीण चन्द्र व पाप ग्रह लग्न में हों तो अशुभ, दसवें हों तो शुभ।

२८) अन्य शुभाशुभ विचार

⇒ प्रश्नकालिकलग्न से २,७,१०,११,६,३ स्थान में से कोई भी स्थान चन्द्र और शुक्र युक्त या दृष्टियुक्त हो तो लाभालाभ प्रश्न में स्त्री लाभ। यदि प्रश्नलग्न में या प्रश्नलग्न से ३,६,५,८ स्थान में पाप ग्रह हो तो कार्य व द्रव्य नाश करनेवाले, शुभ ग्रह हों तो शुभ फल प्रदान करते हैं।

२९) रोग प्रश्न: विचार

⇒ यदि प्रश्नकालिकलग्न में या ७,८,५ स्थान में से किसी भी

स्थान में शुभग्रहों की दृष्टि से युक्त होकर शुभग्रह हो और ३, ६, १०, ११वें स्थान में चन्द्र हो तो रोगी विषय के प्रश्न में रोगी का शीघ्र कल्याण और विपरीत होने से अशुभ।

३०) प्रवासी चिन्ता; विचार

⇒ यदि प्रश्न का लिक लग्न से सूर्यादि सभी ग्रह ५, २ और ३रे इन स्थानों में होवें तो बहुत दूर प्रवासी भी शीघ्र लौट आयेगा और उपरोक्त (२, ३, ५) भावों में शुभ ग्रह हों तो नष्ट वस्तु का शीघ्र लाभ और प्रवासी शीघ्र आता है। यदि केवल गुरु व शुक्र हों तो भी उपरोक्त फलादेश

३१) प्रवासी सम्बन्धी विचार

⇒ यदि प्रश्न का लिक लग्न से ६ या ७वें कोई भी ग्रह हो और केन्द्र में गुरु, त्रिकोण में बुध या शुक्र हों तो प्रवासी शीघ्र लौट आएगा।

३२) प्रवासी आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न से ८ स्थान में चन्द्र हो और केन्द्र पाप ग्रह रहित हो तो प्रवासी सुख पूर्वक लौट आएगा। यदि केन्द्र में शुभ ग्रह हों तो अत्यंत शुभ।

३३) प्रवासी आगमन विचार

⇒ ~~यदि प्रश्न लग्न से~~ प्रवासी संबंधी सभी प्रश्नोत्तर के लिए यदि लग्न पृष्ठोदय [मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर, मीन] राशी में हो और पाप ग्रह दृष्ट हो अथवा पाप ग्रह १, ३, ४, ६, ७, १० इन भावों में शुभ ग्रह दृष्टि रहित हों तो प्रवासी को घोर कष्ट या मृत्यु

३४) प्रवासी के आगमन के समय का विचार

⇒ प्रवासी के आगमन संबंधी प्रश्न में, प्रश्नलग्नसे आगे जितने संख्यक राशि में जो कोई भी ग्रह हो, उस संख्या से १२ को गुणाकर गुणनफल संख्या तुल्य दिनों में प्रवासी वापस आऐ। अथवा जितने दिनों में वह ग्रह वक्रता प्राप्त करेगा उतने दिनों में प्रवासी की वापसी।

३५) चोरज्ञानविचार

⇒ नष्ट वस्तु संबंधी प्रश्नोत्तर में यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न हो या स्थिर राशी के नवमांशलग्न में हो या वर्गोत्तम नवमांश लग्न में हो (वर्गोत्तम- चर के प्रथम, स्थिर के पंचम, द्विस्वभाव के नवम नवमांश) तो खोई वस्तु उसी स्थान में है और किसी निजी व्यक्ति ने ही चुराई है।

३६) नष्ट वस्तु स्थित स्थान विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो नष्ट वस्तु घर के द्वारदेश को ही समीप है, और द्वितीय द्रेष्काण हो तो गृह के मध्य भाग में नष्ट वस्तु स्थित है, और यदि तृतीय द्रेष्काण हो तो घर के पीछे या घर के बाहर कहीं नष्ट वस्तु गयी है।

३७) लाभालाभ विचार

⇒ यदि प्रश्नलग्न में पूर्ण चन्द्र हो अथवा शुभग्रह की दृष्टि से युक्त होकर शीर्षोदय राशि के लग्न में कोई शुभग्रह हो तो खोई वस्तु शीघ्र लाभ। यदि बलवान शुभग्रह ११वें भाव में प्रश्न काल के समय हो तो भी नष्ट वस्तु शीघ्र लाभ होती है

38) नष्ट वस्तु दिशा विचार

⇒ नष्ट वस्तु की दिशा और दूरी ज्ञान के विचार में, जो बलवान ग्रह केन्द्र में स्थित हो उसके अनुसार दिशा जानना (ग्रह दिशा ज्ञान-पृ.131) यदि बलवान ग्रह केन्द्र में न हो तो लग्न से दिशा का ज्ञान। मेष, सिंह, धनु से पूर्व, वृष, कन्या, मकर से दक्षिण। मिथुन, तुला, कुम्भ से पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन से उत्तर दिशा। लग्न स्थित नवांश के द्वारा योजन प्रमाण।

39) कन्या पुत्र जन्म विचार

⇒ यदि लग्न से शनि विषम स्थान में हो तो गर्भिणी के प्रश्नोत्तर में पुत्र-जन्म, यदि शनि सम स्थान में हो तो कन्या जन्म। विवाह सम्बन्धी प्रश्नोत्तर में शनि विषम स्थान में हो तो वर को स्त्री लाभ, शनि सम स्थान में हो तो स्त्री लाभ नहीं।

40) विवाह योग विचार

⇒ विवाह प्रश्न में यदि लग्न से चन्द्र 3, 5, 7, 11 या 6 स्थान में गु., शु., बु. से दृष्ट होकर स्थित हो तो विवाह होगा, अथवा शुभग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो भी विवाह अवश्य होगा।

41) वर्षा विचार

⇒ वर्षा ऋतु में वर्षा सम्बन्धी प्रश्नोत्तर में यदि चन्द्र और सूर्य से सप्तम भाव में शुक्र या शनि हो, अथवा प्रश्नलग्न से 2, 3, 4, 8 स्थान में शुक्र, शनि हो तो अच्छी वर्षा

42) प्रश्नलग्न से वर्षा विचार

⇒ वर्षा ऋतु में वर्षा सम्बंधी प्रश्नोत्तर में यदि शुक्लपक्ष हो और शुभग्रह जलचर (मीन, कर्क, मकर, कुम्भ) राशी में स्थित हो

या प्रश्न लग्न से २, ३, केन्द्र स्थान में हो अथवा चन्द्र जलचर राशि में या लग्न में हो तो वर्षा अच्छी।

४३) गर्भे कन्या-पुत्र जन्म विचार

⇒ पुत्र और कन्या जन्म संबंधी प्रश्नोत्तर में यदि पुरुष राशि (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ) बलवान होकर लग्न में हो और पुरुष राशि सम्बन्धी षड्वर्ग भी पड़े और पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) की दृष्टि से युक्त हो तो पुत्र जन्म। विपरीत में कन्या जन्म यदि बुध लग्न में हो तो अभी प्रसूता नहीं हुई है ऐसा कहना।

४४) प्रश्नकर्ता की इच्छित स्त्री की अवस्था विचार

⇒ प्रश्नकर्ता को कैसी स्त्री इच्छित है, इस प्रश्नोत्तर के विचार में यदि प्रश्न लग्न में बालचन्द्र या बुध बैठा हो या लग्न पर दृष्टि हो तो पृच्छक कुमारिका स्त्री की इच्छा करता है। यदि प्रश्नलग्न में युवा चन्द्र हो तो युवती, वृद्ध चन्द्र हो तो वृद्धा को चाह। यदि लग्न में सूर्य या गुरु हो तो प्रसूता स्त्री की चाह, मंगल या शुक्र हो तो कर्कशा युवती की चाह करता है।

इस तरह स्त्री पुरुष दोनों के इच्छित प्रश्नोत्तर में अवस्था का निर्णय भी लिया जा सकता है, तथा चौर प्रश्न में चोर की अवस्था आदि भी जानी जा सकती है।

४५) प्रश्नकर्ता के इच्छित प्रश्नकार्य सम्बन्धी विचार

⇒ इच्छानुसार चिंतित प्रश्न में यदि प्रश्न लग्न में कोई बलवान ग्रह हो तो अपने समान किसी मनुष्य की चिंता होती है। ३ स्थान में भाई की। पाँचवे स्थान में संतान की, ४ स्थान में माता या बहिन की, ६ स्थान में शत्रु की, सातवें में स्त्री की, ९वें हो तो धर्म की, १०वें हो तो गुरु या पिता की। प्रश्नलग्न में जो नवमांश हो उसका नवमांशपति बलवान होकर लग्न में हो तो अपने विषय की चिंता, यदि नवमांशपति

का मित्र बलवान होकर स्थित हो तो मित्र की, यदि नवमांशपति का शत्रु बलवान होकर स्थित हो तो शत्रु-चिंता।

४६) परदेशी के आने का विचार

⇒ यदि चर राशि या चर लग्न, पू से आगे षष्ठादि नवांश से प्रश्न का लग्न हो तो प्रवास चिंता और प्रवासी का होगा। यदि लग्न से ७वें भाव स्थित भौमादि ग्रह प्रश्नकाल में उस स्थान को त्याग करके आगे जाने वाले हो, और फिर वक्र गति हो उस स्थान में न आऐं तो प्रवास चिंता और प्रवासी लौट आऐगा। यदि वक्री होकर लौट आऐं तो प्रवासी घर लौटने वाले।

४७) प्रश्नकर्ता कैसी स्त्री से प्रेम करता है

⇒ प्रश्नकर्ता कैसी स्त्री से प्रेम करता है इस प्रश्नोत्तर में यदि लग्न से ७वें स्थान में सू०, मं०, शु० हो किसी दूसरी स्त्री से प्रश्नकर्ता का संयोग। गुरु हो तो अपनी स्त्री से संयोग। बुध या चन्द्र हो तो वेश्या(रण्डी) के साथ संयोग। शनि हो तो अन्त्यज(नीच) वर्ण की स्त्री के साथ संयोग।

स्त्री की अवस्था का प्रमाण चन्द्र के बाल्य, युवा, वृद्ध के अनुसार कहें।

४८) रोगी परदेस में उसका विचार

⇒ प्रवासी के कष्टादि अवस्था के प्रश्नोत्तर में यदि शनि पाप ग्रह युक्त होकर या दृष्ट होकर प्रश्न लग्न से नवमें स्थान में हो, शुभ ग्रह की दृष्टि विहीन हो तो परदेसी कष्ट में। यदि उपर्युक्त योग के साथ आठवें भाव में हो तो परदेसी की मृत्यु।

४९) प्रश्नकर्ता के पिता प्रवासी तो विचार

⇒ यदि प्रश्नकर्ता के पिता प्रवासी हो तो और लग्न से अष्टम

स्थान में सूर्य, शुभग्रह से युक्त होकर तो पिता अन्य देश में चला गया है। यदि शुभग्रह योग न हो तो उसी स्थान में समझें।

१७) नष्ट वस्तु का स्वरुप और चोर की दिशावस्था और स्वरुप ज्ञान विचार

⇒

प्रश्न लग्न विचार

स्त्रियों संबंधित फलादेश

भावों की त्रिकोणादि संज्ञाऐं

१) त्रिकोण - ५, ९
२) केन्द्र - १, ४, ७, १०
३) पणफर - २, ५, ८, ११
४) ओपोक्लिम - ३, ६, ९, १०
५) मारक - २, ७

स्त्री संबंधी फलादेश

नवमांश

एकराशि के नौवें भाग को नवमांश कहते हैं। एक नवमांश ३ अंश २० कला का होता है। नवमांश इस क्रम से चलते हैं:-

मेष का पहला नवमांश - मेष
मेष का दूसरा नवमांश - वृष
मेष का नवां नवमांश - धनु
वृष का पहला नवमांश - मकर इत्यादि [स्त्री जातक विज्ञान]

वर्गोत्तम नवमांश - चर राशि का पहला, स्थिर का पाँचवा, द्विस्वभाव का नवमा नवमांश वर्गोत्तम नवमांश है। [स्त्री जातक विज्ञान]

त्रिशांश - विषम राशियों में पहले ५ अंश मंगल के, अगले ५ शनि के, अगले ८ अंश गुरु के, अगले ७ अंश ~~गुरु~~ बुध के तथा अगले ५ अंश शुक्र के त्रिशांश होते हैं। अर्थात अगर कोई ग्रह अंश ४ में है तो वह मंगल के त्रिशांश में है।

सम राशियों में पहले ५ अंश शुक्र के, अगले ७ अंश बुध के, अगले ८ अंश गुरु के, अगले ५ अंश शनि के, अगले ५ अंश मंगल के त्रिशांश हैं। [स्त्री जातक विज्ञान]

ग्रहों की अवस्थाऐं

१) किशोरावस्था - ३ से ९ अंश तक
२) युवावस्था - १० से २२ अंश तक
३) वृद्धावस्था - २३ से २८ अंश तक
४) मृतावस्था - २९ से २ अंश तक [स्त्री जातक विज्ञान]

ग्रहों का शुभाशुभत्व

1) शुभ ग्रह- पूर्ण चन्द्र, शुभ ग्रह युक्त बुध, गुरु, शुक्र
2) अशुभ ग्रह- क्षीण चन्द्र, पापग्रह युक्त बुध, सूर्य, शनि, राहु, केतु
3) क्रूर ग्रह- सूर्य, मंगल, शनि क्रम से कम क्रूर
4) पाप ग्रह- शनि, मंगल, सूर्य क्रम से कम पापी

[स्त्री जातक विज्ञान]

स्त्री फलादेश में राशिफल

मेष ⇒ राशि हो तो वह स्त्री सुन्दर, पति प्रिया, गुरुजन- सेविका।

वृष ⇒ राशि में हो वह स्त्री सुशीला, पुत्रवती, विचारशील, विद्या सम्पन्न, पति प्रिया, धनवती, तन्त्रशास्त्र में विश्वास

मिथुन ⇒ राशि में हो तो वह गुणवती, रुपवती, सुन्दरनेत्र, सुन्दर, सुशीला, परोपकारिणी, धन धान्य सम्पन्न।

कर्क ⇒ राशि हो तो स्त्री शत्रु रहित, मानवती, आप्तजनों में पूज्य, ब्राह्मणों व देवतों की भक्त।

सिंह ⇒ राशि में स्त्री परम सुंदरी, वस्त्रा भूषण युक्त, क्रूरा, मांसाहारिणी

कन्या ⇒ राशि हो तो स्त्री शुद्ध आचरण वाली, शत्रु विजयी, क्षमाशील, धन एवं पशु युक्त, पतिप्रिया।

तुला ⇒ राशि हो तो स्त्री व्रत सम्पन्न, सुन्दर, पुत्रवती, बन्धु वर्ग से अनुरागी, पतिव्रता

वृश्चिक ⇒ राशि हो तो स्त्री निराभिमानी, धनवती, कार्यकुशल, ज्येष्ठ सदस्यों की प्रिया होती है।

धनु ⇒ राशि हो तो स्त्री दानी, विनयशील, प्रेम करने वाली, व्रत सम्पन्न, गीति प्रिया, कन्या- सन्तति

मकर ⇒ राशि में स्त्री सुन्दर, सत्यप्रिय, गम्भीर, विद्यावती, नीतियुक्ता, नियमित स्वभाव, शत्रु विजयी

कुम्भ ⇒ राशि हो तो रुपवती, सुन्दर, दानशील, सत्कर्म, संपत्तिशील, संतानवती, अभिमानिनी।

स्त्री संबंधी फलादेश

मीन ⇒ राशि हो तो सुन्दर, सुशील, धार्मिक, लज्जायुक्त, मानिनी, पुत्रवती, कला- निपुण। [स्त्री जातक विज्ञान]

त्रिंशांश फल [केवल स्त्रियों के लिए]

लग्न तथा चन्द्र में जो बली हो वह यदि मेष, वृश्चिक राशि में हो और यदि

१) मंगल के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या दुश्चरित्रा विवाह से पूर्व पर-पुरुष गमन करती है।

२) बुध के त्रिशांश में हो तो मायाविनी।

३। गुरु के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता।

४) शुक्र के त्रिशांश में यदि हो तो दुष्ट कर्मी।

५) शनि के त्रिशांश में हो तो दासी, कुंआरी रहती है।

वृष, तुला राशि में हो तो और यदि

१) मंगल का त्रिशांश हो तो दुश्चरित्रा

२) बुध त्रिशांश में हो तो समस्त कला निपुण, संगीत वादन की ज्ञाता

३। गुरु के त्रिशांश में हो तो गुणवती, गीत-वाद्य-नृत्य- चित्रकारी शिल्प आदि कलाओं में प्रवीण होती है।

४। शुक्र के त्रिशांश में हो तो सर्व गुण युक्त, शीलवती।

५) शनि के त्रिशांश में हो तो पुनर्भू अर्थात पति के मर जाने पर अथवा उसके रहते दूसरे पुरुष को बैठ जाती है।

मिथुन, कन्या राशि में हो और

१) मंगल के त्रिशांश में हो तो ऐसी स्त्री कपटी

२) बुध - गुणवती

३) गुरु - पतिव्रता

४) शुक्र-

५) शनि - नपुँसक पति या स्वयं नपुँसक जैसी आकृति।

कर्क राशि में यदि हो और
१) मंगल के त्रिशांश में हो तो स्त्री स्वेच्छारिणी, किसी की अधिक न मानने वाली, पर पुरुष गामिनी।
२) बुध- चित्रकारी, अन्य शिल्पों की जानकार होती है
३) गुरु- शुभ, गुणवती
४) शुक्र-
५) शनि- पतिघातिनी, पति की हत्यारी

सिंह राशि में हो और
१) मंगल के त्रिशांश में हो तो स्वेच्छारिणी, पुरुषों जैसी आकृति
२) बुध- दुश्चरित्रा, पुरुषों जैसा स्वभाव
३) गुरु- राजपत्नी, महाभाग्य शालिनी
४) शुक्र- पर-पुरुष गामी, अपवित्र
५) शनि- पुरुषों के समान प्रगल्भा, पर पुरुष गामिनी, कुरूपा

धनु- मीन राशि में हो और
१) मंगल के त्रिशांश में हो तो अनेक गुणयुक्त
२) बुध- धनवती, ज्ञानवती
३) गुरु- समस्त शुभ गुण युक्ता
४) शुक्र-
५) शनि- अल्प-कामवासना, अल्प रति

मकर- कुम्भ राशि हो और
१) मंगल का त्रिशांश हो तो दासी
२) बुध - दुष्टा, खोटी बुद्धि
३ गुरु- पतिव्रता
४ शुक्र- वन्ध्या
५ शनि- नीच व्यक्ति से प्रेम, सहवास [स्त्री जातक विज्ञान]

नवमांश फल [स्त्रीजातक विज्ञान]

~~सप्तम भाव में जो ग्रह हो या किस ग्रह के~~

१) सप्तम भाव में सूर्य की राशि या नवमांश हो तो स्त्री का पति विद्वान, लेखक, विचारक, अधिकारी, कोमल, ऊँचा शरीर, मन्द रति करने वाला, व्यवसायी

२) सप्तम भाव में चन्द्र की राशि या नवमांश हो तो स्त्री का पति दयालु, कोमल, शीलवान, धनी, व्यवसायी, विद्वान, अत्यंत कामी।

३) सप्तम भाव में मंगल की राशि या नवमांश हो तो स्त्री का पति कृषक, जींमिदार, क्रोधी, हिंसक, व्यसनी, नीच, धनी, अनेक स्त्रियों की चाह रखने वाला होता है।

४) सप्तम भाव में बुध की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पती कवि, लेखक, सम्पादक, शोधकर्ता, विद्वान, चतुर, मायावी, न्यायधीश, कामी, रतिज्ञ धनी, सर्व कला कुशल होता है।

५) सप्तम भाव में गुरु की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति जितेन्द्रिय, तेजस्वी, गुणवान, विशेषज्ञ, धर्मात्मा, प्राचीन परम्पराओं का पोषक, लोभी, चिडचिडा, त्यागी, सेवा परायण, मन्त्री, न्याधीश, पत्नी भक्त होता है।

६) सप्तम भाव में शुक्र की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति सुन्दर, भोगी, गुणवान, सौभाग्यशाली, सबका प्रिय होता है।

७) सप्तम भाव में शनि की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति सामान्य धनी, मूर्ख, वृद्ध, आलसी, क्रोधी, व्यसनी, चिडचिडा होता है।

८) यदि सप्तम भाव में मंगल का नवमांश, शुक्र की शनि की दृष्टि युक्त हो तो ऐसी स्त्री के गुप्तांग में रोग।

९) यदि सप्तम भाव में शुभ ग्रह का नवांश शुभ ग्रह की दृष्टि से युक्त होकर हो तो ऐसी स्त्री का गुप्तांग अति सुन्दर।

१०) यदि सप्तम भाव तथा अष्टम भाव में पापग्रह हों, आठवें भाव की स्वामी जिस ग्रह के नवमांश में बैठा हो उस ग्रह की दशा अथवा अन्तर्दशा में वह स्त्री विधवा हो जाती है।

११) यदि शुभग्रह शुद्ध होकर (चार) नवमांश कुण्डली में केन्द्रस्थ हों तो ऐसी स्त्री अत्यंत धनी।

१२) यदि मंगल और शुक्र एक दूसरे के नवमांश में हों तो ऐसी स्त्री पर-पुरुषगामिनी होती है।

१३) यदि लग्न में वृष या तुला राशि हो, उसमें कुम्भ का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री पुरुषाकृति बनाई हुई और दूसरी स्त्री के द्वारा अपनी कामाग्नि शान्त करती है।

१४) यदि शुक्र - शनि एक दूसरे के नवमांश में हों, आपस में इनका दृष्टि-संबंध हो तो उपर्युक्त फलादेश।

१५) यदि शुक्र मंगल एक दूसरे के नवमांश में हो तो ऐसी स्त्री पर पुरुष गामिनी होती है।

१६) यदि चन्द्र, शनि या मंगल के नवमांश में हो तो ऐसी स्त्री पति के प्रति विश्वासघाती, दुराचारिणी होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

1) लग्नस्थ ग्रहराशि का फल

1) यदि लग्न और चन्द्र समराशि में हो ~~और~~ तो स्त्री, स्त्रियों जैसी आकृति वाली, सुन्दरी, अलंकार युक्त, शीलवती, पति प्रिया, पतिव्रता होती है।

यदि शुभ ~~ग्र~~ ग्रह दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर, वस्त्राभूषण युक्त, शीलवती, शुभगुण सम्पन्न होती है।

यदि क्रूर ग्रह ग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री मध्यम स्वभाव वाली।

2) यदि लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुषों जैसी आकृति वाली, दुराचारिणी, पुर पुरुष गामिनी होती है।

यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री क्रूर स्वभाव वाली ~~ह~~ होती है।

यदि क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री दुष्टा, पापिना, बुरे कार्य करने वाली, व्यभिचारिणी होती है।

3) यदि लग्न में चन्द्र और शुक्र दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री ईर्ष्यायुक्त दूसरों को संताप देने वाली परन्तु स्वयं सुखी।

4) यदि लग्न में चन्द्र और बुध- ये दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री कला-निपुण, सुन्दरी, सबको प्रिय, सुखी, गुणवती, गायन- वादन में कुशल।

5) यदि लग्न में बुध और शुक्र- ये दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री रुपवती, सौभाग्यवती, कला-कुशल होती है।

6) यदि लग्न में स्वराशिस्थ चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र- ये ग्रह बली हों तो जातक अनेक शास्त्रों में निपुण।

७) यदि लग्न में (क) चन्द्र, बुध, शुक्र (ख) बुध, गुरु, शुक्र (ग) बुध, गुरु और चन्द्र इन तीनों ग्रहों की युति हो तो ऐसी स्त्री वस्त्रालंकार युक्त, धनवती, रूपवती, गुणवती, सर्वप्रिय, सुखी होती है।

८) यदि लग्न में केवल शुभग्रह हों तो ऐसी स्त्री अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण युक्त, सुखी होता है।

९) यदि लग्न में केवल पाप ग्रह हों तो ऐसी स्त्री दुखी, दरिद्र होती है।
[स्त्री जातक विज्ञान]

10)

२) राजयोग

१) यदि सप्तम भाव में शुक्र, अन्य शुभ ग्रह हों तो ऐसी स्त्री ऐश्वर्यशाली

२) यदि लग्न में चन्द्र, दशम में बुध, ११वें सूर्य हो तो जातक के अनेक पुत्र-पौत्र

३) यदि लग्न में उच्च का बुध, द्वितीय भाव में शुक्र, दशम भाव में चन्द्र, ११वें भाव में सूर्य हो तो ऐसी स्त्री समाज में राजपत्नी के समान ऐश्वर्यशालीनी होती है।

४) यदि लग्न में गुरु, सप्तम चन्द्र, दशम शुक्र हो तो ऐसी स्त्री नीच कुल में उत्पन्न होने पर भी रानी के समान, ऐश्वर्यशाली।

५) यदि लग्न में कर्क राशि का गुरु या मीन का शुक्र हो तथा कन्या राशि में बुध हो, सप्तम भाव में मंगल उच्चस्थ हो तो स्त्री को अत्याधिक सुख प्राप्ति।

६) यदि लग्न में कन्या राशी हो और उसमें बुध, शुक्र की युक्ति हो

तथा वृषराशि का चन्द्र हो अथवा कर्क या मीन राशि का गुरु हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी।

७) यदि लग्न में उच्चस्थ बुध तथा एकादश भाव में गुरु हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी होती है।

८) यदि चतुर्थ भाव में उच्च का चन्द्र हो तो गुरु से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी।

९) यदि सप्तम भाव में कर्क राशि हो तथा सूर्य एवं गुरु की दृष्टि पूर्ण हो तो ऐसी स्त्री पुत्र-पौत्रादिक सुख से सम्पन्न, ऐश्वर्यशालिनी।

१०) यदि सप्तम भाव में मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ राशि का चन्द्र हो तथा केन्द्र में पाप ग्रह न हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी।

११) यदि ११वें भाव में चन्द्र हो, सप्तम भाव में बुध तथा शुक्र हों, गुरु की उन पर दृष्टि हो तो स्त्री अत्यंत सुखी।

१२) यदि लग्न, ३, ५, ६ वें - इन्हें छोडकर अन्य किसी भाव में चार शुभ ग्रह हो तो राजयोग कारक होते हैं।

१३) यदि केन्द्र में कोई राशि शुभग्रहों से युक्त हो तथा सप्तम भाव में मेष, मिथुन, कन्या, कुम्भ राशि में पाप ग्रह युक्त हो तो विशेष राजयोग।

[स्त्री जातक विज्ञान]

3) शुभ योग

1) यदि 7वें, 8वें स्थान में शुभग्रह की दृष्टि हो अथवा शुभग्रह युक्त हो तो स्त्री सौभाग्यशाली, पतिव्रता, पवित्र।

2) यदि सप्तम तथा अष्टम भाव में पाप ग्रह हों परन्तु नवमभाव में शुभ ग्रह हो तो स्त्री पति-पुत्र युक्त, सुखी।

3) यदि सप्तम भाव में कर्क राशि गत चन्द्र गुरु हों तो स्त्री अत्यंत सुंदर।

4) सप्तम भाव में सम राशि हो और वह शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो स्त्री पुण्यात्मा एवं राजमान्य।

5) यदि सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो तो ऐसी स्त्री सुंदर, संगीत कला में निपुण होती है।

6) यदि सप्तम भाव में बुध तथा चन्द्रमा हो तो ऐसी स्त्री सब कलाओं को जानने वाली, गुणवती, सुखी होती है।

7) यदि सप्तम भाव में शुक्र और बुध हों तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुंदर, सब कलाओं को जानने वाली, भाग्यवती

8) यदि सप्तम भाव में शुक्र ~~अथवा~~ और चन्द्र हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर, सुखी, ईर्ष्यालु होती है।

9) यदि केवल षडवर्ग में शुक्र केतु बैठे हों तथा चन्द्र दृष्टि युक्त हों तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुंदर, स्थूल नितम्ब, धन-पुत्रादि युक्त, सुखी, ऐश्वर्यशालिनी होती है।

10) यदि कर्क लग्न का उदय हो, सप्तम भाव में सूर्य गुरु दृष्टि युक्त हो तो ऐसी स्त्री अप्सराओं में प्रधान, रानी के समान सुन्दर, स्वस्थ, ऐश्वर्यशालिनी, पुत्र-पौत्रादि युक्त होती है।

11) यदि शुभग्रह केन्द्र में हो तथा पाप ग्रह छठे, 9वें एवं 12वें भाव में हों तो ऐसी स्त्री सुन्दर, धनवती, गुणवती, पुत्रवती, ऐश्वर्यशालिनी होती है।

12) यदि षड्वर्ग में शुद्ध होकर तीन ग्रह केन्द्र में हों तो ऐसी स्त्री रानी होती है।

13) यदि बुध उच्च का होकर लग्न में हो, गुरु 9वें भाव में हो, तो ऐसी स्त्री राज-पत्नी होती है।

14) यदि वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन राशि में मंगल, बुध, गुरु व शुक्र हो तो ऐसी स्त्री बड़ी विदुषी, साध्वी, गुणवती, पुत्रवती। स्त्री जातक विज्ञान

4) अशुभ योग

1) यदि सप्तम भाव में पापग्रह से दृष्ट शनि हो तो ऐसी स्त्री युवावस्था में वृद्ध हो जाती है।

2) यदि सप्तम भाव में पाप-ग्रह हो तो ऐसी स्त्री केशहीना।

3) यदि जन्म समय चन्द्र, गुरु, शुक्र बलहीन हो, शनि मध्यम बली हो सूर्य, मंगल, बुध बलवान होकर लग्न में विषम राशि में हो तो स्त्री पुरुषों के समान प्रगल्भा।

4) यदि लग्न में चन्द्र-मंगल का योग हो तो ऐसी स्त्री का मासिक

धर्म अव्यवस्थित होता है।

4) यदि लग्न में चन्द्र-राहु हो तो ऐसी स्त्री को हिस्टीरिया होता है। (स्त्री जातक विज्ञान)

5) पति त्याग योग

1) यदि सप्तम भाव में एक पाप ग्रह बलहीन बैठा हो तथा उस पर किसी शुभग्रह की दृष्टि भी न हो तो ऐसी स्त्री को उसका पति त्याग कर देता है।

2) यदि सप्तम भाव में सू०, मं०, श० हीनबली हों और वे शुभग्रह से दृष्ट भी हो तो ऐसी स्त्री को उसका पति त्याग देता है। (स्त्री जातक विज्ञान)

6) दुराचारिणी योग

1) यदि लग्न में विषम राशि हो, शनि मध्य बली हो एवं च०, शु० तथा बु० बलहीन हों एवं सू०, मं०, गु० बलवान हों तो ऐसी स्त्री बहु पुरुष गामी होती है।

2) यदि मं० अथवा श० की राशि लग्न में हो और उसमें चन्द्र सहित शु० बैठा हो तथा वह पाप ग्रह से दृष्ट भी हो तो ऐसी स्त्री पर-पुरुष गामिनी होती है।

3) यदि सप्तम भाव में कर्क अथवा सिंह राशि हो और उसमें शनि के सहित मं० बैठा हो तो ऐसी स्त्री यदि उत्तम कुल में जन्मी हो तो भी वह विधवा होकर अथवा कपट से पति को त्याग कर वेश्या तथा व्यभिचारिणी होती है। ऐसी स्त्री दुष्टा तथा धनी होती है।

4) यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह बैठे हो तथा पापग्रह की

दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री पतिसुखसे वंचित। वक्र चंचलनेत्रों वाली तथा दुराचारिणी होती है।

5) यदि सप्तम भाव दो पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो स्त्री नीच तथा दुराचारिणी।

6) यदि सप्तम भाव में पाप ग्रह दृष्ट शुक्र हो तो ऐसी स्त्री घर छोड़कर स्वेच्छा से जारकर्म करती है।

7) यदि सप्तम भाव में कर्क का मंगल हो तो उपर्युक्त योग

8) यदि सप्तम भाव में शुभ ग्रह बलहीन हों तथा उनके साथ पापग्रह भी हों तो ऐसी स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे पति को अंगीकार करती है।

9) यदि सप्तम भाव तीन पापग्रहों से युक्त, दृष्ट हो तो उपर्युक्त योग

10) यदि लग्न में मेष, मकर, वृश्चिक, कुम्भ तथा उसमें चन्द्र, शुक्र दोनों ही बैठे हों तथा उन पर पापग्रह की दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ पर-पुरुष गमन करती है।

11) यदि सप्तम भाव में चं०, मं० हो तो ऐसी स्त्री पर-पुरुष गमन करती है।

12) यदि राहु सप्तम भावस्थ हो तथा सप्तमेश का राहु से इत्थशाल योग बनता हो तो ऐसी स्त्री आचारहीन, पति का परित्याग करनेवाली होती है।

१३) यदि शुक्र द्वितीयेश होकर राहु से युक्त हो तो ऐसी स्त्री दुराचारिणी

१४) यदि मंगल द्वितीयेश होकर शनि से युक्त हो तो ऐसी स्त्री दुश्चरित्र

१५) यदि अष्टम भावस्थ मंगल हो तो ऐसी स्त्री व्याभिचारिणी।

१६) यदि अष्टम भावस्थ राहु हो तो ऐसी स्त्री धर्म विहीन, पुरुषगामिनी।

१७) लग्न या चन्द्र से २रे या १२वें स्थान में पापग्रह हो और वह शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री अपने पिता, ससुर के कुल को कलंकित करनेवाली होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

विवाह सम्बन्धी योग

१) यदि सप्तम भाव में शनि, लग्न तथा चतुर्थ में मंगल ८ अंश तक हो तो ऐसी कन्या प्राय: कुमारी।

२) यदि सप्तमेश पापग्रह युक्त अथवा पापदृष्ट हो तथा सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो ऐसी कन्या प्राय: कुमारी।

३) यदि लग्न या चन्द्र से सप्तम भाव में शनि पापग्रह दृष्टि युक्त हो तो ऐसी कन्या अविवाहित। शुभग्रह हो तो लंबी आयु में विवाह

४) यदि शनि सप्तमेश के साथ हो तो ऐसी कन्या का विवाह बडी आयु में

५) यदि सूर्य-हर्शल का उत्थशाल हो तो प्रेमविवाह।

६) जिस स्त्री के सप्तम भाव में शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह तो

दो विवाह होते हैं।

७) यदि लग्नेश अथवा सप्तमेश छठे-आठवें या दूजे-बारवें स्थान में हो तथा अष्टमेश पापग्रह से पीड़ित हो तो विवाहित जीवन दुखमय तथा पति द्वारा परित्याग की संभावनाऐं।

८) यदि जन्मकाल में सप्तमस्थ सूर्य हो तो पति द्वारा परित्याग की संभावना।

९) यदि सप्तम भाव बलहीन पापग्रह युक्त तथा दृष्ट हो तो वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण तथा पति द्वारा परित्याग संभावना प्रबल [स्त्री जातक विज्ञान]

८) पति संबंधी योग

१) यदि सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो तो ऐसी स्त्री का पति सुंदर, कामशास्त्रज्ञ, शूरवीर तथा शास्त्रधारी होते हैं।

२) यदि सप्तम भाव में बु०, श० की युति हो तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक

३) यदि लग्न अथवा चन्द्र से सप्तम में बुध अथवा शनि हो तो स्त्री का पति नपुंसक

४) यदि जन्मलग्न चर राशि हो तो पति प्रवासी।

५) यदि लग्नेश, तृतीयेश चर राशि में हो तो पति प्रवासी।

६) यदि जन्म लग्न अथवा चं० से सातवें भाव में कोई ग्रह न हो अथवा निर्बल ग्रह हो अथवा सप्तम भाव पर शुभग्रहों की दृष्टि

न हो तो ऐसे योग वाली स्त्री का पति निरुद्यमी, निन्द्य होता है।

७) यदि लग्न अथवा चन्द्र से सप्तम में चर राशि हो तो ऐसी स्त्री का पति सदैव पर देश में रहता है। यदि स्थिर राशि हो तो विपरीत।

८) यदि पति का जन्मकालीन सूर्य पत्नी के जन्मकालिक सूर्य से १० अंश के भीतर प्रतियोग करता हो तो उनमें जीवन भर परस्पर स्वभाव-वैषम्य रहता है अथवा दोनों में से एक अल्पायु होता है।
[स्त्री जातक विज्ञान]

९ वन्ध्या योग

१) यदि पंचम भाव में पापग्रह की राशि हो तथा पंचम भाव पापग्रहयुक्त या दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री वन्ध्या।

२) यदि लग्न में मेष, वृश्चिक, मकर राशि हो और उन पर पापग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री वन्ध्या [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) वैधव्य योग

१) लग्न और चन्द्र में से जो बलवान हो, उसमें सप्तम भाव में मंगल हो और उस पर पापग्रहों की दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री बाल-विधवा होती है।

२) यदि अष्टम भाव में क्रूर अथवा पापग्रह हों तो वह वैधव्य कारक होता है।

३) यदि सप्तमेश अष्टम भाव में हो, अष्टमेश सप्तम भाव में हो और एक या दोनों स्थान पापग्रह से दृष्ट हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

४) यदि लग्न अथवा चन्द्र से सप्तम और अष्टम भाव में ३ या ४ पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा होती है।

५) यदि लग्न अथवा सप्तम- दोनों भावों में पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विवाह के ७-८ वर्ष बाद ही विधवा।

६) यदि चन्द्र से सातवें, आठवें तथा १२वें भाव में शनि तथा मंगल- दोनों बैठे हों और वे पाप ग्रह दृष्ट भी हो तो ऐसी स्त्री विवाहोपरांत शीघ्र विधवा।

७) यदि चं० से ७वें भाव में मं०, श०, रा०, सू० इन चारों में से कोई भी दो ग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

८) यदि सप्तम भाव में पापीग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

९) यदि क्षीण अथवा नीच या असंगत राशि का चन्द्र ६ या ८वें भाव में हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१०) यदि सप्तम भाव में रा० हो तथा सभी पापग्रह उसे देखते हों तो ऐसी स्त्री या तो कुमारी, अगर विवाह हो जाए तो पति की शीघ्र मृत्यु। स्त्री अपने पति की विरोधिणी।

११) यदि सप्तम भाव में पापदृष्ट मंगल हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१२) यदि द्वितीय अथवा सप्तम भाव में पापग्रह हों तो भी वैधव्य योग

१३) यदि सप्तमेश अथवा अष्टमेश अष्टम भाव में पाप ग्रह से दृष्ट या युत हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

१४) यदि अष्टम भाव में राहु तथा चन्द्रमा हो और वे पापग्रह से दृष्ट हो तथा सप्तमेश क्रूर ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१५) यदि सप्तम भाव में एक सप्तमेश शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट न होकर दो पापग्रहों के मध्य में स्थित हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१६) यदि लग्नेश तथा अष्टमेश की द्वादश भाव में युति हो तथा अष्टम भाव पर पापग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१७) यदि सप्तम भावस्थ राहु तथा लग्नस्थ मंगल शुभग्रह दृष्टि से हीन हो तो ऐसी स्त्री विधवा

१८) स्त्री तथा पुरुष- दोनों के नाम के अक्षरों को दुगुना करके, मात्राओं को चार गुना करें। फिर सबमें तीन का भाग दें। यदि दो शेष रहें तो पहले स्त्री की मृत्यु होगी और एक अथवा शून्य बचे तो पति की मृत्यु। लघु में १, दीर्घ में २, प्लुत में ३ मात्राएं होती हैं।

१९) यदि लग्न में पापग्रह युक्त राहु हो तथा अष्टम भाव में मंगल हो तो ऐसी स्त्री बाल- विधवा होती है।

२०) यदि आठवें या १२वें भाव में मेष या वृश्चिक राशि का राहु तो ऐसी स्त्री विधवा।

२१) यदि लग्न से ७वें, ८वें भाव में सू०, मं०, श०, रा० हों तो स्त्री विधवा।

२२) यदि लग्न तथा सप्तम भाव में पापग्रह हों तथा ६वें तथा ८वें

भाव में चन्द्र हो तो ऐसी स्त्री विवाह के आठवें वर्ष विधवा।

२३) यदि लग्न में सूर्य, मं०, रा० हो तो स्त्री विधवा। इस योग के साथ द्वितीय भावस्थ शुक्र भी हो तो दूसरा पति। [स्त्री जातक विज्ञान]

११) विष कन्या योग

विष कन्या योग वाली स्त्री शोक सन्तप्ता, हत भाग्या, वस्त्रालंकार रहित होती है।

१) यदि लग्न में शनि, पंचम में सूर्य तथा नवम भाव में मंगल हो तो विषकन्या योग।

२) शनिवार के दिन द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र; मंगलवार को शतभिषा नक्षत्र तथा सप्तमी; रविवार को द्वादशी एवं विशाखा नक्षत्र हो तो विष कन्या योग।

३) द्वादशी, शतभिषा, रविवार; द्वितीय, आश्लेषा, मंगलवार; सप्तमी, कृत्तिका, शनिवार में जन्म हो तो विष कन्या योग। [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) सन्तति योग

१) यदि लग्न में वृष, सिंह, कन्या या वृश्चिक राशि हो तो ऐसी स्त्री के कम पुत्र

२) यदि लग्न में उक्त राशियाँ हों और उनमें शुभग्रह स्थित हों तो ऐसी स्त्री की सुंदर संतानें।

३) यदि पंचम भाव में शुभग्रहों की दृष्टि या योग हो तो स्त्री अधिक संतानों को जन्म देती है।

४) यदि पंचम भाव में धनु या मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसे योग वाली स्त्री के संतान नहीं होती

५) यदि पंचम भाव में सब शुभ ग्रहों हों या उनकी दृष्टि हो तो अधिक संतान।

६) यदि चन्द्र वृष, कन्या, सिंह या वृश्चिक इन में से किसी राशि में स्थित हो तो स्त्री अल्प संतति।

७) यदि सप्तम भाव में चं० अथवा बुध हो तो अधिक कन्याऐं।

८) यदि पंचम भाव में गुरु या शुक्र हो तो पुत्र अधिक।

९) यदि सप्तम भाव पापग्रह की राशि हो अथवा सप्तम भाव पापग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री के या तो संतान नहीं होती या कम होती है।

१०) यदि पंचम भाव में मं० तथा सप्तम भाव में रा० हो तो संतान का अभाव।

११) यदि सप्तम भाव में सूर्य या राहू हो तो ऐसी स्त्री की संतान नहीं रहती।

१२) यदि अष्टम भाव में शुक्र अथवा गुरु हो तो ऐसी स्त्री निस्संतान।

१३) पंचम भाव में ग्रह फल⇒
सूर्य - एक पुत्र, चन्द्र - दो कन्या, मंगल तीन पुत्र, बुध - चार

कन्या; गुरु-पांच पुत्र, शुक्र-सात कन्याऐं।

१४) यदि सप्तम भाव में राहु हो तो संतान अभाव या दो कन्याओं का जन्म।

१५) यदि नवम भाव में शुक्र हो तो 6 कन्याऐं।

१६) यदि वृष, वृश्चिक, सिंह या कन्या - इनमें से किसी भी राशी में चन्द्र हो तो स्त्री अल्प पुत्रवती।

१७) यदि पंचमेश के नवमांश में शनि या गुरु हो तो संतान नहीं।

१८) पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अधिक संतान।

१९) यदि सप्तम भावस्त मंगल शनि दृष्टियुक्त हो तो कम संतान

२०) यदि पति-पत्नी दोनों की कुण्डली में तुला राशीगत शनि या हर्शल हो तो संतान सुख नहीं।

२१) यदि अष्टम भाव में बु०, गु०, शु० हों तो संतान होकर मर जाती है।

२२) यदि चन्द्र और बुध अष्टम भावस्त हों तो स्त्री काक-वन्ध्या [एक ही संतान को जन्म दे] [स्त्री जातक विज्ञान]

१३) सन्यासिनी योग

१) जिस स्त्री की कुण्डली के सप्तम भाव में पापग्रह बैठा हो तथा नवम भाव में कोई अन्य ग्रह हो तो वह सन्यासिनी
नवम भाव में जो ग्रह बैठा हो उसकी प्रव्रज्या समझनी

चाहिये यथा:- सूर्य → तपस्विनी, चन्द्र → कपालिनी, मंगल → रक्त वस्त्रधारिणी, बुध → दण्ड-धारिणी, गुरु → यति, शुक्र → चक्र-धारिणी, शनि → नग्ना।

2) यदि सप्तम भाव पाप ग्रह युक्त अथवा पाप ग्रह दृष्ट हो तथा नवम भाव शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री प्रवासिनी, सन्यासिनी होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

14) ब्रह्मवादिनी योग

1) जिस स्त्री की कुण्डली में, लग्न में समराशि हो तथा मंगल-बुध एवं शुक्र बलवान हो, वह पृथ्वी पर विख्यात, अनेक शास्त्रों की जानकार तथा ब्रह्मविद्या में प्रवीण, ब्रह्मवादिनी होती है।

2) यदि सम राशि में लग्न हो तथा शुक्र, बुध, चन्द्र तथा गुरु बलवान होकर उसमें बैठे हों, तो ऐसी स्त्री वेद-वेदान्त के विचार तथा आगम शास्त्रों के अर्थ को जानने में निपुण ब्रह्मवादिनी होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

15) तपस्विनी योग

1) यदि सप्तम भाव में पापग्रह तथा नवम भाव के शुभ ग्रह हो तो ऐसी स्त्री तपस्विनी होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

16) मृत्यु संबंधी योग

1) यदि मेष अथवा वृश्चिक राशि में चन्द्र दो पापग्रहों के बीच हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु शस्त्र या अग्नि द्वारा होती है।

2) यदि कर्क में शनि तथा मकर में चन्द्र हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु जलोदर रोग से होती है।

३) यदि जन्मकाल में दशम भाव में सू० तथा चतुर्थ भाव में मंगल हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पर्वत से गिरकर।

४) यदि द्वितीय भाव में मंगल, सप्तम भाव में चन्द्र, चतुर्थ भाव में शनि हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु कुऐं या तालाब में गिरकर।

५) यदि जन्मकाल में सूर्य और चन्द्र कन्याराशि में पापग्रहों से दृष्ट हों तो ऐसी स्त्री की मृत्यु बंधना से होती है।

६) यदि जन्मकाल में सू० तथा च० धनु, मीन या मिथुन लग्न में हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पानी में डूबकर।

७) यदि लग्न से आठवें स्थान में पापग्रह, द्वितीय में शुभग्रह हों तो उपर्युक्त योग।

८) अष्टमेश जिस ग्रह के नवमांश हो उस ग्रह की दशा-अन्तर्दशा में मृत्यु।

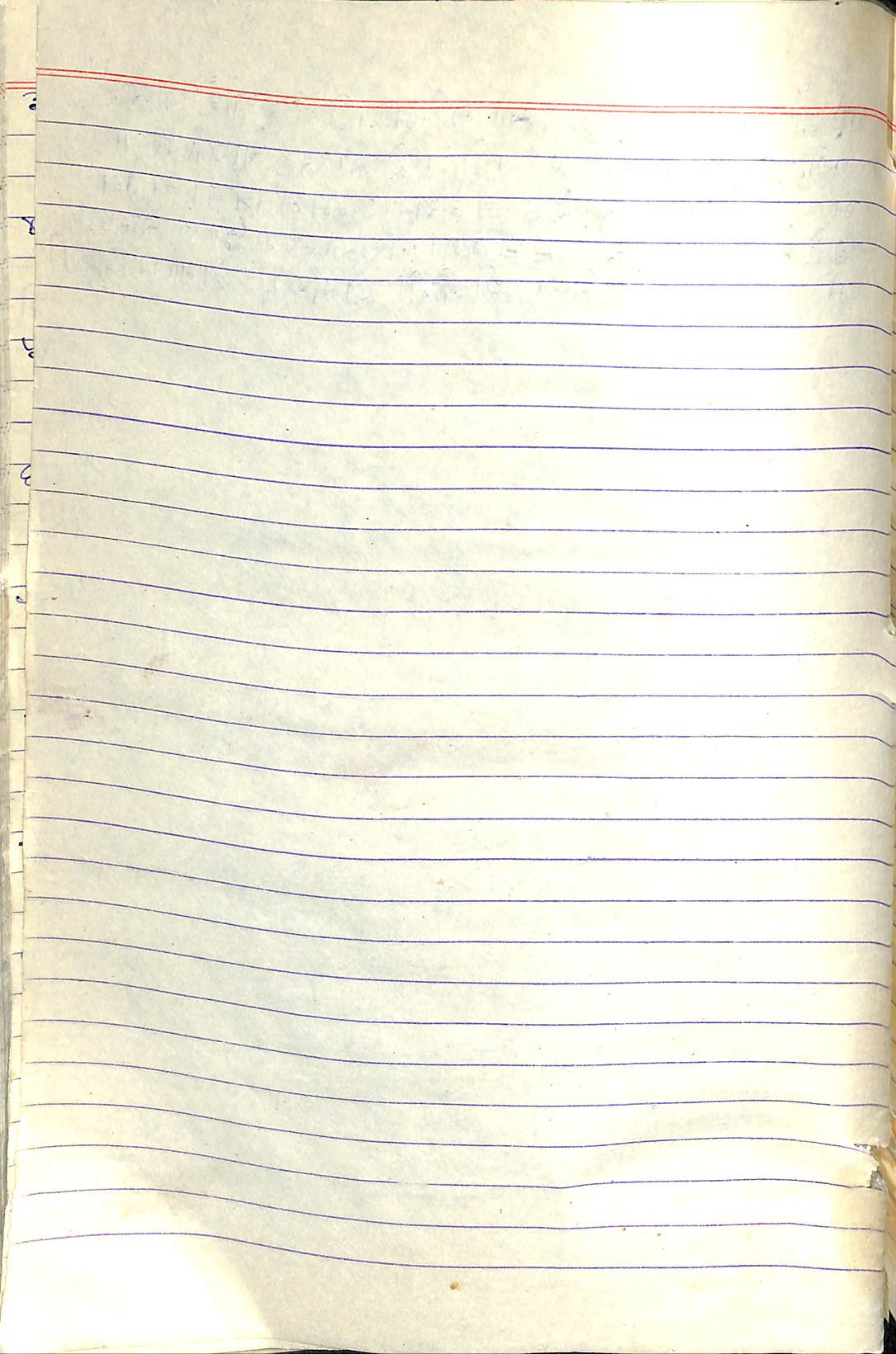
९) यदि लग्न में शुभग्रह हों, द्वितीय तथा द्वादश भाव में भी शुभग्रह हों तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पति से पहले।

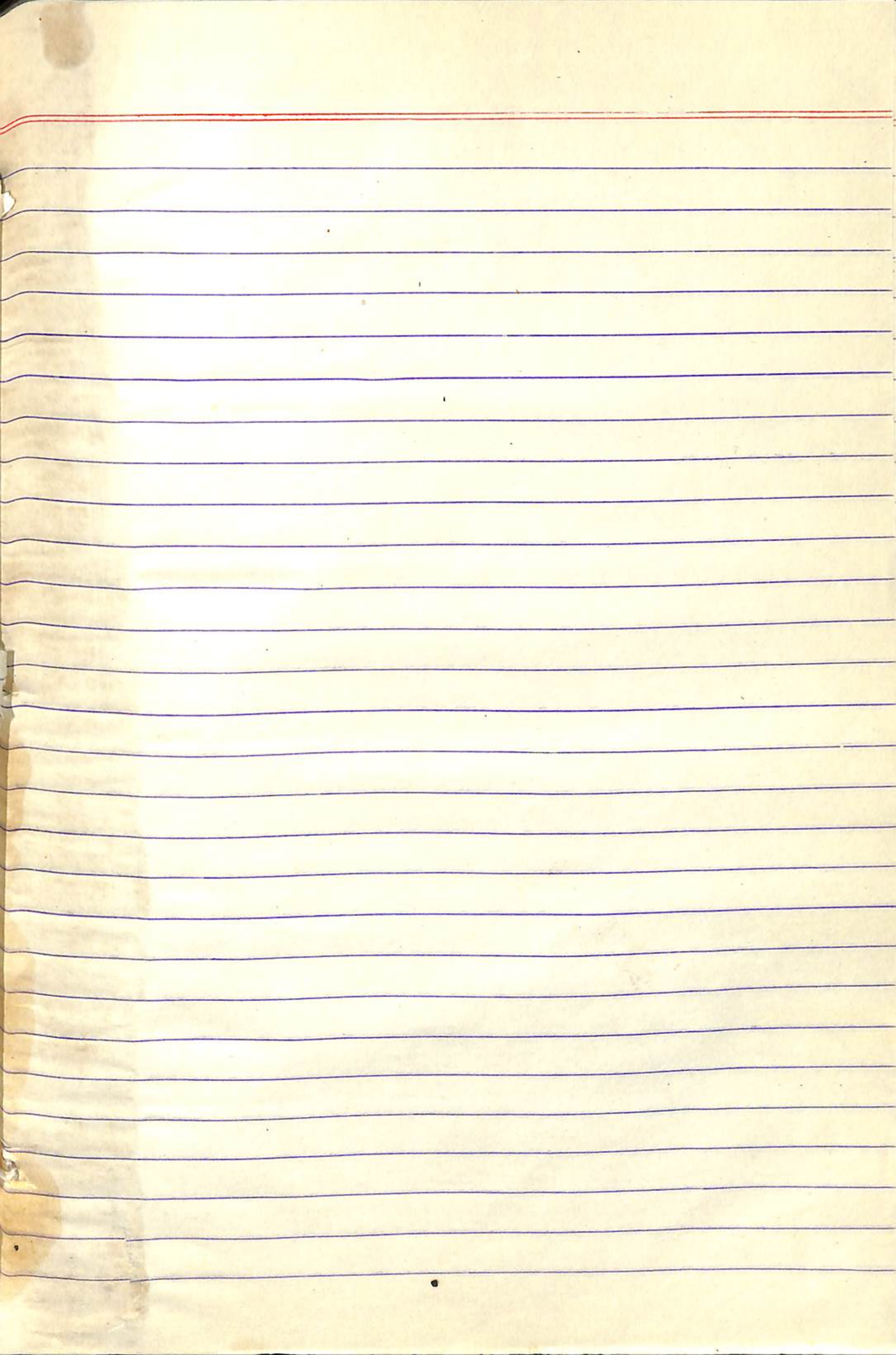
१०) स्त्री की राशि से पति की राशि विषम हो तो पहले स्त्री की, सम हो तो पहले पति की मृत्यु। [स्त्री जातक विज्ञान]

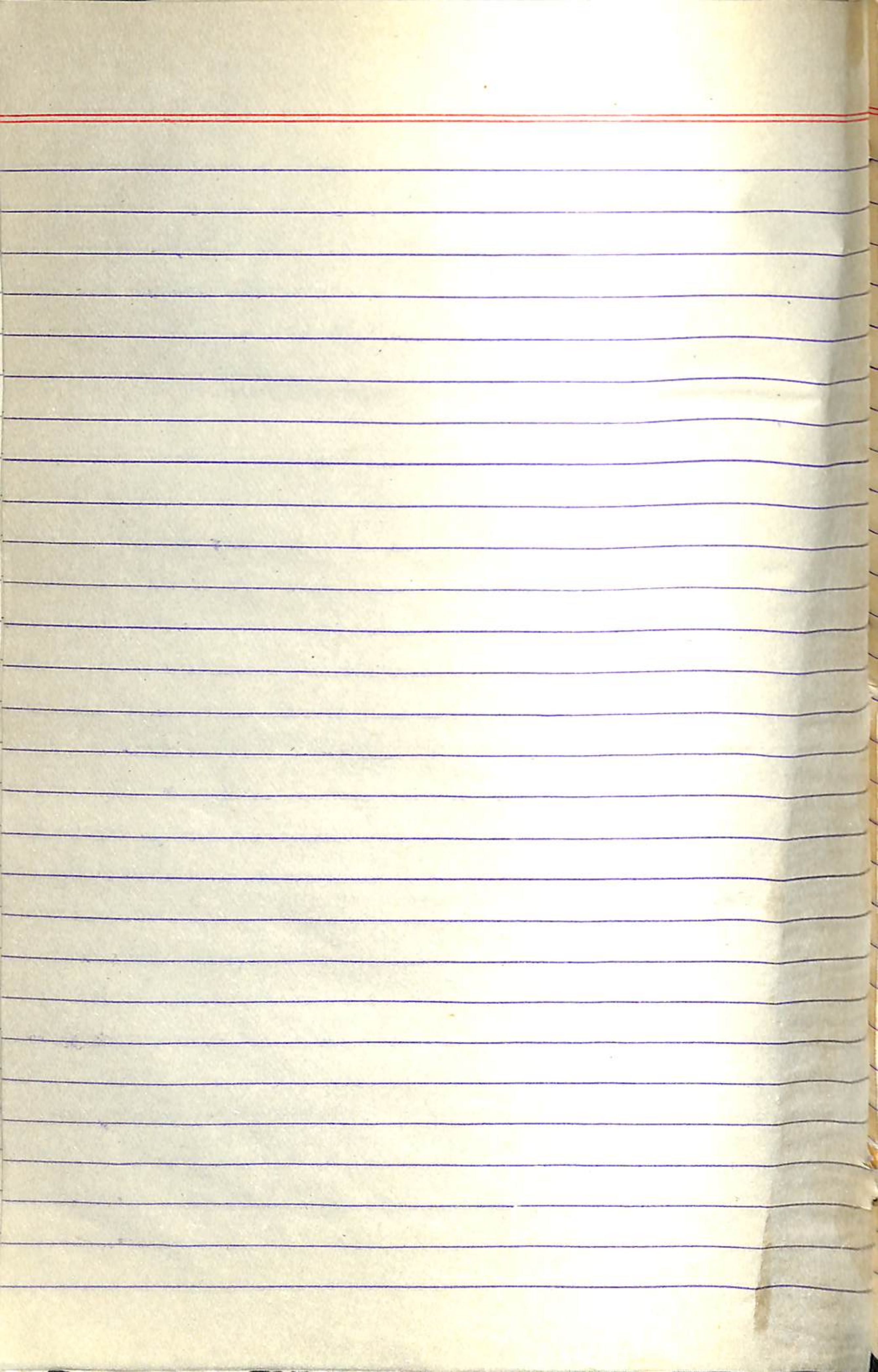
७) विविध योग

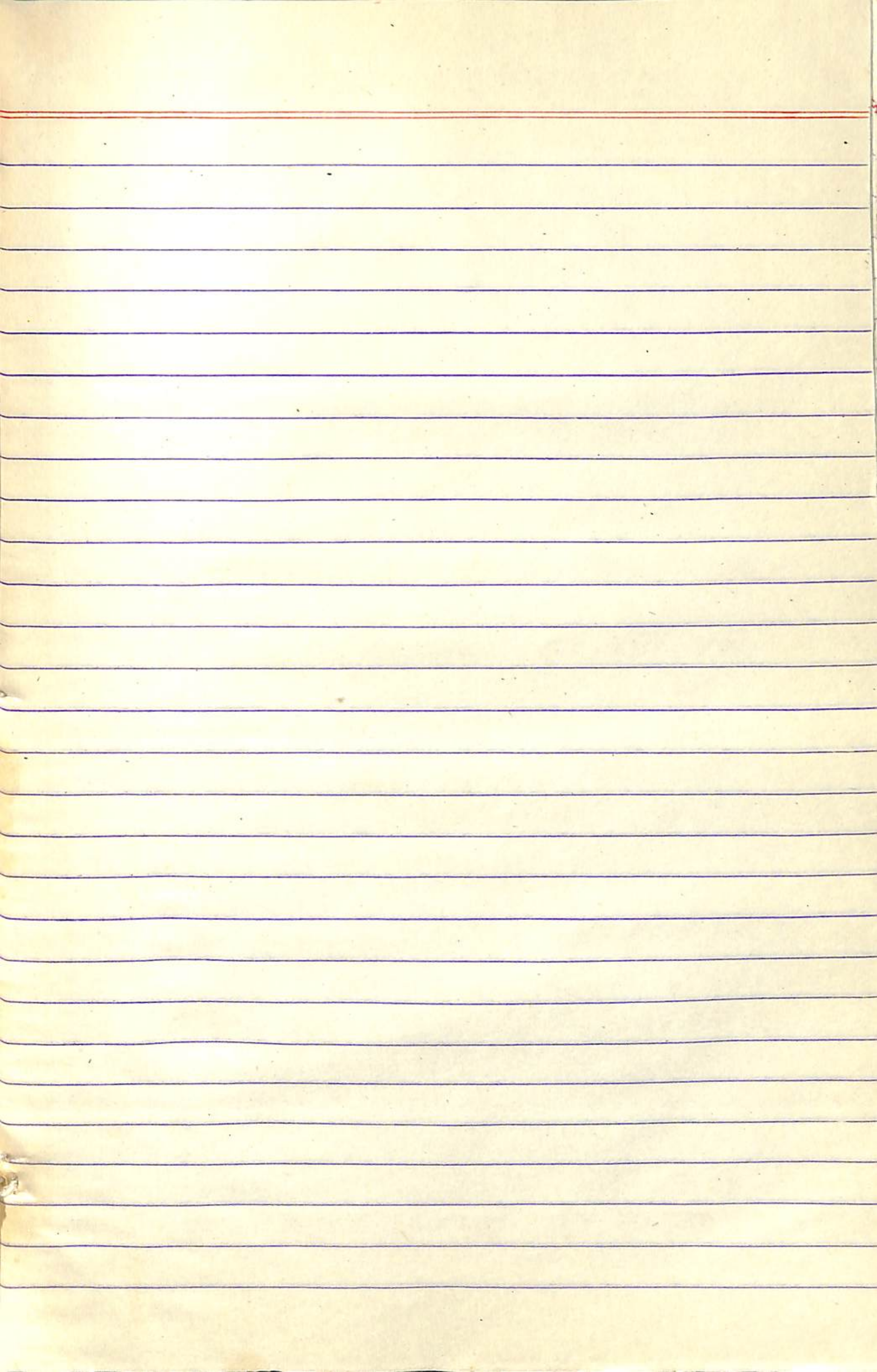
१) स्त्री की गोचर से उपचय स्थान में बलवान चन्द्र एवं मंगल स्वनवांश अथवा स्वराशि आने पर, उस मास व उस दिन में गर्भ स्थिति संभव है।

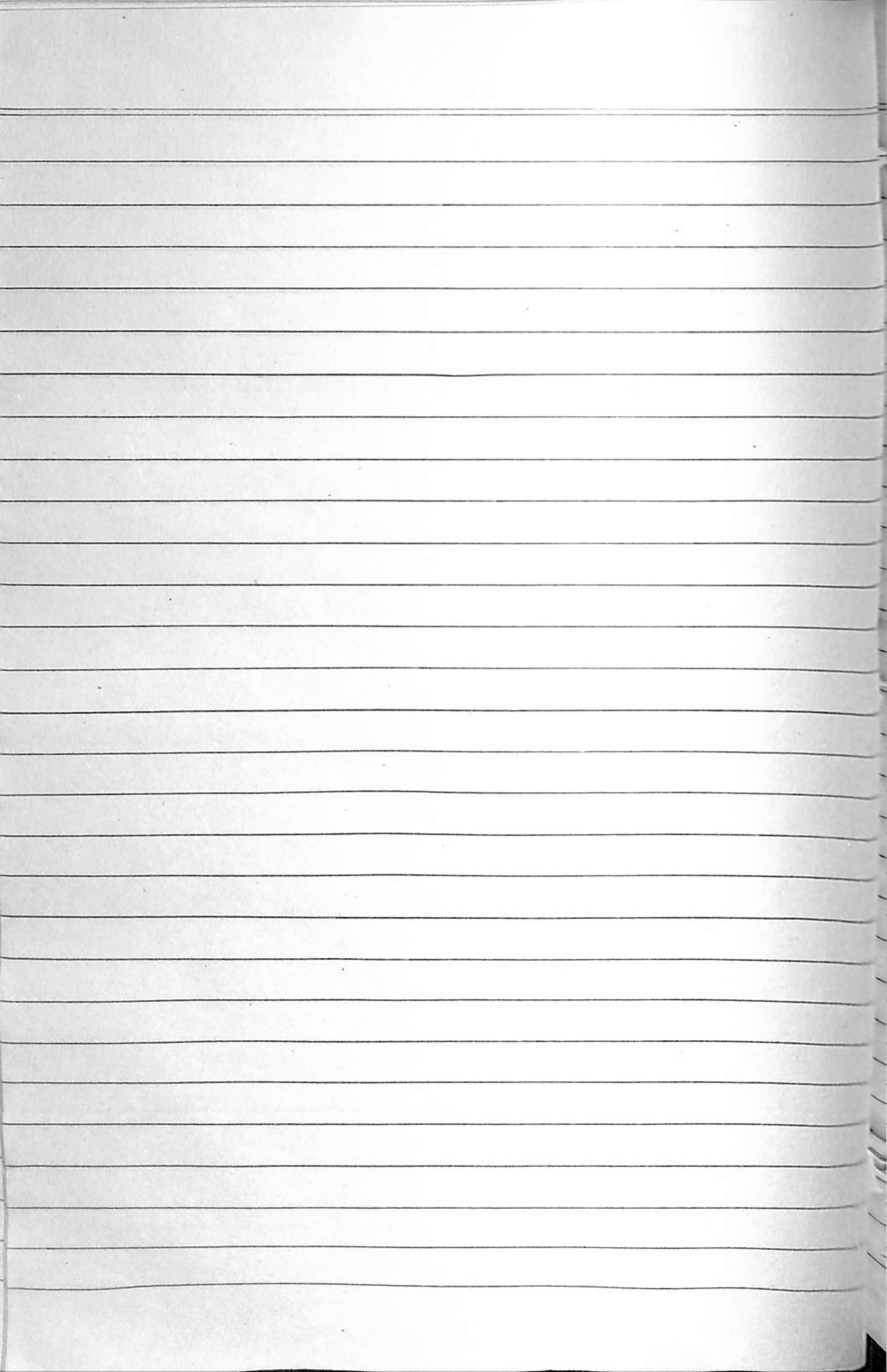
२) यदि कन्या का जन्म तिथि की अंतिम घडी में हुआ हो तो वह रूपहीन, वार की अन्तिम घडी में हो तो वह बाल्यावस्था में पुरुष का आश्रय लेती है। जिसका जन्म नक्षत्र की अंतिम घडी में हुआ हो तो वह विधवा। जिसका जन्म 'भद्रा' करण में हुआ हो तो पति-पत्नी दोनों को कष्ट। [स्त्रीजातक विज्ञान]

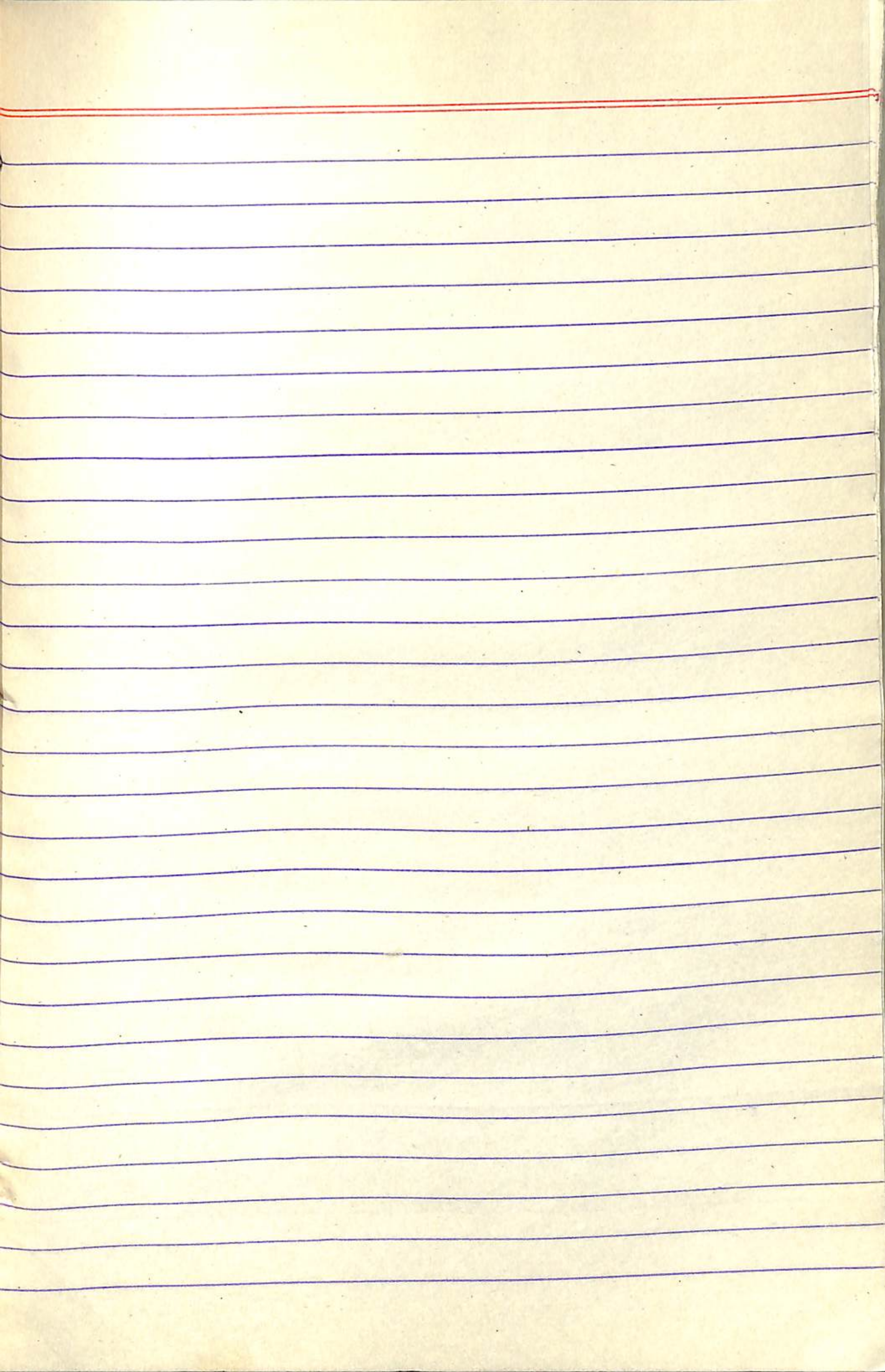


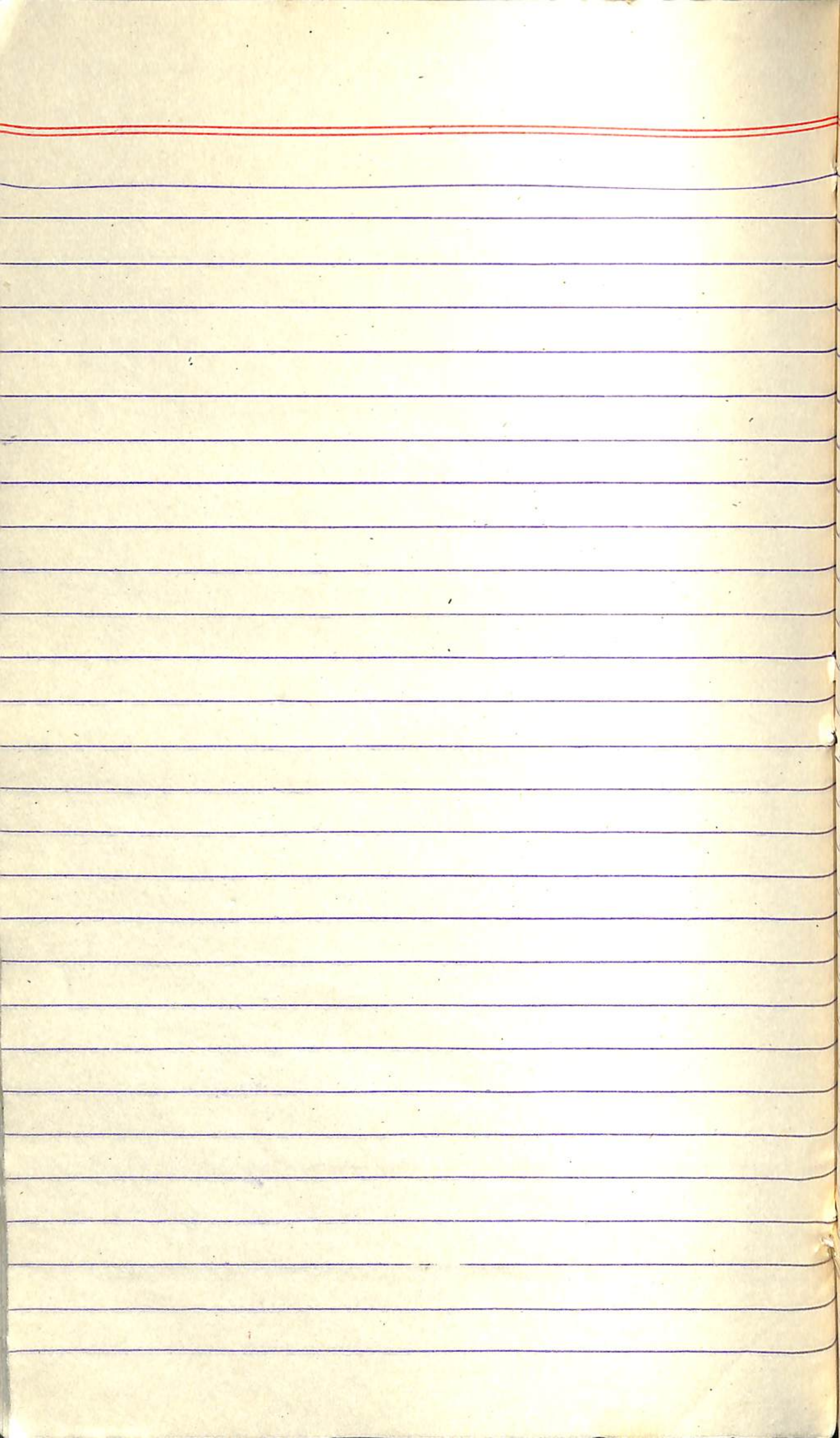














...ई पर की सुद्दिप में भाग लि...
...के बैनर तले बनने वाले इस
...के निर्माता हैं संजय जैन व नमन
...र्देशक हैं के. राजू। धारावाहिक 21
दूरदर्शन पर आ रहा है। इसके मुख्य
...हैं आलोक नाथ, सुधा चंद्रन, सुधीर
...न्या कुलकर्णी, अरुणा खन्ना, अभय
...मा लागू, गोविंद नामदेव व रीटा
...इससे पूर्व लता मंगेशकर ने इस
...के का शीर्षक गीत हृदयनाथ मंगेशकर
...निर्देशन में गाया था।

...का 'मिसिंग' दूरदर्शन पर

...शॉफ का शो 'मिसिंग' जिसने सोनी
...52 कड़ियां पूरी कर ली थीं व उसके
...हो गया था अब दूरदर्शन पर नये रूप
...रहा है। दूरदर्शन ने इस कार्यक्रम को
हनुमान', 'जय महालक्ष्मी' बंद करने का निर्णय लिया है व उनकी जगह पर ऐतिहासिक धारावाहिक '1847 क्रांति' व 'छत्रपति शिवाजी' दिखाने का निर्णय लिया है। निर्माता-निर्देशक संजय खान का मेगा धारावाहिक '1857 क्रांति' 2 जून से शुरू हुआ है जो हर शनिवार रात 9.30 से 10.30 बजे तक दूरदर्शन पर दिखाया जा रहा है। नुमेरो उनो इंटरनेशनल लिमिटेड के बैनर तले बने इस धारावाहिक के मुख्य कलाकार हैं एस.एम. ज़हीर, माया अलग, तेज सप्रू, रज़ा मुराद, ललित तिवारी, भूपिंदर सिंह, बरखा मदन, मनीष खन्ना, सुनील सिंह, अनुपम श्याम, सुरभि तिवारी, कनिका डांगे, शाहिद खान, अहमद खान, जितेंद्र त्रेहान, कौशल कपूर, नवाब शाह और सिरज मुस्तफा। पटकथा और संवाद लिखे हैं संजय खान तथा

...जो अपना वतन छोड़कर विदेश में बस जाते हैं व अपने देश की याद आने पर उदास हो जाते हैं। इसमें उन लोगों की कहानी भी बतायी जायेगी जो कुछ दिनों के लिये विदेश अपनों के यहां घूमने जाते हैं व क्या अनुभव प्राप्त करते हैं। इस धारावाहिक के मुख्य कलाकार हैं अरुण बाली, संगीता घोष, निकिता मलिक, मीनाक्षी गुप्ता, सिद्धार्थ धवन, धर्मेश व्यास व सत्येन कप्पू। इसका निर्देशन अरुणा ईरानी स्वयं करेंगी। इसके अलावा जी के लिये एक दैनिक धारावाहिक बनाने जा रही हैं 'हाथों की लकीरों से', इसका निर्देशक बाहर का होगा।

'आशा भोंसले' के स्वर्णिम 50 वर्ष

ईटीसी चैनल, जो हमेशा ही सर्वोत्तम संगीत प्रस्तुत करने की प्रथा रखता है, अब संगीत की

संतोष कपूर का 'खुशबू'

कमल आर्ट इंटरनेशनल की 'खुशबू' जुलाई से सोनी चैनल के प्राइम टाइम में शुरू होने जा रहा है। इस धारावाहिक के निर्माता हैं संतोष कपूर। यह एक ऐसी पैसे वाली लड़की की कहानी है जिसके पास 1200 करोड़ रुपये की धन संपदा है पर वो साधारण तरीके से जीना चाहती है। इसका निर्देशन किया है स्वप्ना वाघमरे जोशी ने व लिखा है भूषण वनमाली ने तथा संगीत दिया है सपन जगमोहन ने। धारावाहिक के मुख्य कलाकार हैं पूजा रूपारेल, मिलिंद गवली, राजीव वर्मा, निशीगंधावाड़, उषा नायक, जयति भाटिया, सुधीर दलवी, रवि काले, अली राजा, संगीता कपूर, अनंत अभ्यंकर वगैरह।

-प्रस्तुति : रेखा भाटिया

यही नहीं इनके मरणोपरांत 'भारत सरकार' ने इन्हें फिल्म जगत का सर्वोच्च सम्मानित पुरस्कार 'दादा साहेब फालके' पुरस्कार से भी सम्मानित किया।

इनका जन्म 1904 में पेशावर (पाकिस्तान) में हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा बी.ए. तक प्राप्त की थी। शुरू से ही इनका शौक थियेटर की तरफ था, इसलिये ये हमेशा नाटकों में अभिनय किया करते थे। लेकिन बाद में ये थियेटर से चलकर फिल्मों में आये और यहीं के होकर रह गये। फिर भी ये फिल्मों के आकर्षण के बावजूद थियेटर को नहीं भूले थे और अपने देश के विभिन्न भागों में समय-समय पर अपनी 'नाट्य मंडली' ले जाते रहे। ये लगभग 42 वर्षों तक 'भारतीय फिल्म उद्योग' के आकाश पर चमकते रहे। ये इस उद्योग में इतने 'पापुलर' हो गये थे, जिससे लोग इन्हें प्यार से 'पापा जी' कहकर

इन्होंने अपने नाटकों को...
इन्होंने काफी ख्याति प्राप्त...
खत्म हो जाता तो ये हॉल...
अपने कुर्ते को आगे...
श्रद्धाभाव से पैसा मांगते थे...
स्वयं सामने देखकर पैसा...
देता था। जिस पैसे को...
लोगों को दान कर देते थे...
कपूर जी, सिर्फ नाटककार...
एक उच्च विचार के मालिक...
'इशारा' फिल्म बन रही...
साइन के लिये पृथ्वीराज...
आया। लोकप्रिय 'सुरैया'...
अपना फिल्मी जीवन शुरू...
समय ये 35 वर्ष के थे और...
की थी। तभी ऐसी स्थिति...
'तुम मेरी बेटी हो, लेकिन...

मेरे कैरियर पर अच्छा प्रभाव ही पड़ा : राज जु...

आफिस पर सफलता नहीं मिली। इसका आपके कैरियर पर क्या प्रभाव पड़ा?

– मेरे कैरियर पर अच्छा प्रभाव ही पड़ा। देखिए, मेरी चेष्टा यही रहती है कि मैं धारावाहिक में कम और फिल्मों में ज्यादा काम करूं। मुझे फिल्मों में अच्छा काम भी मिल रहा है। फिल्म 'वन टू का फोर' में मैं खलनायक के रूप में लोगों को नजर आया। लोगों ने मेरे काम की काफी तारीफ की। इस फिल्म को करने से पहले मुझे थोड़ा-सा भ्रम भी था कि लोग मुझे खलनायक के किरदार में पसंद करेंगे या नहीं, लेकिन अब यह संकोच भी खत्म हो

...ने धारावाहिक 'विरासत' में भी

'शरारत' प्रदर्शित होगी। उसके बाद 'यकायक' प्रदर्शित होगी। इसके बाद विक्की की फिल्म 'फैसला' प्रदर्शित होगी। इसके अलावा कुंदन शाह और शिवम नायर के साथ नयी फिल्में कर रहा हूं। राम गोपाल वर्मा के साथ मेरा पुराना रिश्ता है। दस साल पहले उनके साथ फिल्म 'शिवा' की थी और अब फिर से शुरुआत करने जा रहा हूं। तिग्मांशु धुलिया के साथ भी एक फिल्म कर रहा हूं जिसमें मेरे साथ रिमिता भट्ट और जिन्नी शेरगिल भी है।

आमिर खान की फिल्म 'लगान' में भी खलनायक हैं क्या..?

–नहीं! यह एक अलग तरह का सकारात्मक किरदार है। फिल्म का एक बहुत ही जिम्मेदार किरदार है। चंपारण गांव का एक बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण पात्र है। गांव के सभी लोग उसी की बात मानते हैं। वह गांव का मुखिया नहीं है, लेकिन सभी लोग उसकी इज्जत करते हैं। थोड़ा-सा धार्मिक किरदार है। इस्माइल



